तिमर हरण मंगल करण सूर्य भयो प्रकाश । सकल अन्धेरा मिट गया धरती धवल आकाश

पंचांग दिवाकर

राजा अर्जुन

२०३२

मंत्री







पं० देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी



पं० शिव राम दत्त ज्यो०



पं० मोहनलाल ज्यो०

पं० देवी दयाल, मशहूर आलम ज्योतिषी लाहौर ने प्रकाशित किया पंचांग दर्जा अव्वल ।

मशहूर आलम पं० देवी दयालु ज्योतिषी ऐन्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

पालक - पन्ना लाल शर्मा एम ए. माई हीरां गेट, जालन्धर । मूल्य 3 रु० 50 पै०

● पाँच पुस्तकों के सैट में १७ विषयों का समावेश (गागर में सागर) ●

● प्राचीन यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र विद्या पर राजेश द्वारा लिखित ५ पुस्तकों का सैट ●

17. विषय 1. तांत्रिक साधन 2. यन्त्र, 3. मन्त्र, 4. तन्त्र, 5. वशीकरण 6. मोहिनी विद्या (हिप्नोटिज्म) 7 देवी देवता 8. छाया पुरुष हमजाद 9. यक्षिणी 10. भूत प्रेत, पिशाच 11. अघोर विद्या 12. दक्षिणी विद्या 13. काला जादू 14. मनोकामना 15. कामाख्या 16. अष्ट सिद्धि 17. लक्ष्मी सिद्धि ।

● 1. तान्त्रिक साधन, यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सिद्धि के प्रयोग

इस पुस्तक में विभिन्न प्रकार के तान्त्रिक साधन, यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सिद्धि की शास्त्रीय एवं शीघ्र प्रभावकारी प्राचीन एवं विश्वासी तान्त्रिक सिद्धियों की जानकारीके लिए इसे अवश्य पढ़ें । 12/- (डाक खर्च अलग)

● 2. वशीकरण एवं मोहिनी विद्या हिप्नोटिज्म सिद्धि के प्रयोग

स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, राजा शत्रु, मित्र, अधिकारी आदि किसी भी व्यक्ति को वश में करने के अद्भुत एवं शास्त्रीय प्रयोग इस पुस्तक में संकलित है । मैस्मैरिज्म हिप्नोटिज्म तथा शक्ति-चक्र का सचित्र वर्णन है मू. 12/-

● 3. देवी-देवता, हनुमान, छाया पुरुष यक्षिणी भैरव सिद्धि

गणेश, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, विष्णु, हनुमान, छाया पुरुष, यक्षिणी तथा भैरव को सिद्ध करके उनके द्वारा अभिलाषा पूर्ति के तान्त्रिक प्रयोग इस सचित्र पुस्तक में वर्णित हैं । आज ही मंगाकर चमत्कार देखिए मू० 12/-

● 4. भूत-प्रेत, अघोर विद्या एवं दक्षिणी विद्या सिद्धि के प्रयोग

भूत, प्रेतों की सिद्धि, अघोर विद्या, तथा दक्षिणी विद्या और काला के ऐसे गुप्त प्रयोग जिन्हें गुरु अपने शिष्यों तक से छिपाता है । इस पुस्तक में तन्त्र शास्त्रीय आधार पर संकलित किये हैं । अपने ढंग की पुस्तक मू० 12/-

● 5. मनोकामना, कामाख्या, अष्टसिद्धि एवं लक्ष्मी सिद्धि

मनोकामना पूर्ति के तान्त्रिक प्रयोग, कामख्या, अष्ट सिद्धि एवं लक्ष्मी सिद्धि के शास्त्रीय तथा चमत्कारी तान्त्रिक प्रयोग इस पुस्तक में वर्णित है इस पुस्तक को पढ़कर आप स्वयं तांत्रिक बन सकते है । मू० 12/-

पाँचों पुस्तक अलग-अलग मंगाने पर डाक खर्च ग्राहक को देना होगा ।

नोट—आज ही इक्यावन, 51/- रुपये M. O. आने पर ऊपर वाली पांचों पुस्तकें रजिस्ट्री पैकिट द्वारा भेज दी जायेंगी [illegible] सैट के मंगाने में 17/- रु० की आपकी बचत हो जायेगी मूल्य, 60/-, 8/- डाक खर्च 68/ —51/-= 17/- का फायदा ।

6. आपका भाग्य और जीवन (आयु निर्णय) मू० 15/-
7. आपका भविष्य मू० 15/-
8. असली प्राचीन सच्ची आकर्षण शक्तियाँ मू० 15/-
9. असली प्राचीन सच्ची करामाती सिद्धियाँ मू० 15/-
10. असली प्राचीन सिद्धिदाता यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र महाशास्त्र मू० 101/-
11. शक्ति-चक्र हिप्नोटिज्म मू० 15-/
12. सरल भृगुगुप्त प्रश्नोत्तरी मू० 12/-
13. इच्छापूर्क सिद्धियाँ (मनवांछित फल मनोकामना सिद्धि) मू० 15/-
14. असली प्राचीन हस्तलिलिखित इन्द्रजाल मू० 15/-
15. सिद्धि बीसा मन्त्र मू० 15/-
16. परिक्षा में निसंदेह कामयाबी 15/-

● (१) सावधान ! बाजार से असली पुस्तकें खरीदते समय देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली तथा लेखक का नाम जरूर देख लें । बाजार में कुछेक दुकानदार अपने अधिक लालच के कारण देहाती पुस्तक भण्डार की छपी पुस्तकें न देकर दूसरी पुस्तकें देने की कोशिश करेंगे उससे सावधान रहें ।

● (२) चूंकि दिल्ली उपनगर दिल्ली 40 चालीस मील के एरिया में है अतः लोकल ग्राहकों को 3/- अधिक चार्ज देने पर पुस्तकें सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है । आप आज ही टेलीफोन नं० 261030 पर रिंग करके अपना आर्डर बुक करा सकते हैं ।

● विश्व विख्यात नए वर्ष की श्री बापू मशहूर राष्ट्रीयजन्त्री रजिस्ट्री द्वारा मंगाने के वास्ते 5/- का मनीआर्डर करें ।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान—



देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली

फोन—261030

गर्वनमैंट ग्राफ इण्डिया से हस्तजावता रजिस्टरी शुदा रजिस्टर्ड नं० ५९०

वर्ष का राजा शनि

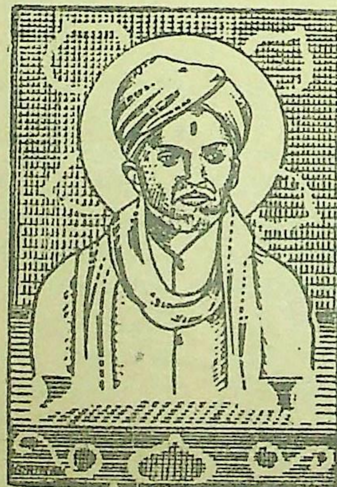
पञ्चांग  दिवाकर

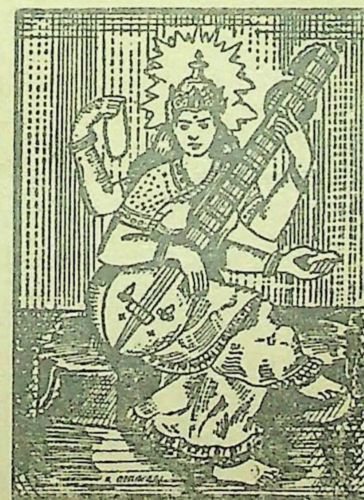
वर्ष का मन्त्री चन्द्र

सम्वत् २०३२ ||| सन् १९७५-७६ ईसवी

श्री गणेशनाय नम: पं० देवी दयालु मशहूर ग्रालम ज्योतिषी श्री सरस्वत्यै नम:









दिवंगत स्वर्गीय पिता पं. चन्नी लाल जी जिनके ग्राशीर्वाद की पुण्य ज्योति सदैव प्रज्ज-वलित रहेगी। इस पंचांग के समस्त मैटर, नाम एव डिजाईन इत्यादि के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास हैं।

सम्पादक

पं० देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी पंचांग दिवाकर कर्ता लाहौर वाले

माई हीरां गेट, जालन्धर शहर (के पद्चिन्हों पर)

प्रकाशक तथा सम्पादक—पन्नालाल शर्मा ज्यो. एम. ए. (संस्कृत व हिन्दी) सुपुत्र पं० चनीलाल ज्यो० (प्रपौत्र) पं० देवीदयाल ज्योतिषी लाहौर

मुख्य वितरक—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशयारपुर, जालन्धर शहर

धोखे से बचें :—शुद्ध एव प्रामाणिक तथ्यों के ग्राधार पर निर्मित ग्रसली "पंचाँग दिवाकर" खरीदते समय सम्पादक पं० पन्ना लाल शर्मा एम. ए. तथा पं० चूनी लाल जी की फोटो ग्रवश्य देखें।

सम्वत् २०३२ में पर्व, व्रत, त्यौहार व जयन्तियां इत्यादि

नवरात्रे शुरू	१२	अप्रै
गणगौरी व्रत	१४	,,
वैशाखी	१४	,,
स्कन्द षष्ठी	१७	,,
श्री दुर्गाष्टमी	१९	,,
राम नवमी	२०	,,
कामदा ११	२२	,,
अनंग १३	२३	,,
महावीर जयंती	२४	,,
वैशाख स्नान प्रारंभ	२५	,,
श्री गणेश ४	२९	,,
वरूथिनी ११	७	मई
जन्म दि. श्री टैगोर	७	,,
वल्लभाचार्य जयं	७	,,
शिवा जी जय	१३	,,
परशु राम जयं	१३	,,
अक्षय ३	१३	,,
शंकराचार्य जयं	१५	,,
रामानुजाचार्य जयं	१६	,,
श्री गंगोत्पत्ति	१७	,,
सीता नवमी	१९	,,
मोहिनी ११	२१	,,
नृसिंह जयती	२३	,,
कूर्म जयंती	२४	,,
बुद्ध पूर्णिमा	२५	,,
वैशाख स्नान समा	२५	,,
नारद जयती	२६	,,
जन्मोत्सव आनन्दमयी माँ	२८	,,
भद्रकाली ११	५	जून
वट सावित्री व्रत	९	,,
रम्भा ३	१२	,,
प्रताप जयंती	१२	,,
गंगा दशहरा	१८	,,
निर्जला ११	१९	,,

योगिनी ११	५	जुला.
रथ यात्रा	१०	जुला.
देवशयनी ११	१९	,,
चातुर्मास व्रतारम्भ	१९	,,
व्यास पूजा	२३	,,
कामदा ११ व्रत	३	अग.
हरियाली ३०	७	,,
सिंधारा ३	९	,,
नाग पंचमी	११	,,
कल्कि जयंती	१२	,,
तुलसी जयंती	१३	,,
स्वतन्त्रता दिवस	१५	,,
पवित्रा ११	१७	,,
ऋषि तर्पण	२१	,,
रक्षा बन्धन	२१	,,
कज्जली ३	२४	,,
गणेश ४	२५	,,
हलषष्ठो	२७	,,
श्री कृष्णजन्माष्टमी	३०	,,
श्री गुग्गा नवमी	३१	,,
अजा ११ व्रतं	२	सित.
वत्स द्वादशी	३	,,
कुशोत्पाटिनी ३०	५	,,
हरतालिका ३	८	,,
पत्थर चौथ	८	,,
ऋषि पंचमी	९	,,
सूर्य षष्ठी	१०	,,
सूतड़ा ७	११	,,
महालक्ष्मी व्रतारंभ	१२	,,
राधाष्टमी	१२	,,
पद्मा ११ व्रतं	१६	,,
वामन द्वादशी	१६	,,
अनन्त चौदश	१९	,,
श्राद्ध शुरू	[illegible]	,,

महालक्ष्मी व्रत समा.	२७	सित.
इन्दिरा ११ व्रत	१	अक्तू
जन्म दि. महा. गांधी	२	अक्तू.
सर्व पितृ श्राद्ध	४	,,
महाल्या ३०	४	,,
शरद् नवरात्रे शुरू	५	,,
श्री दुर्गाष्टमी	१२	,,
विजया दशमी (दशहरा)	१४	,,
पापांकुशा ११ व्रत	१५	,,
भरत मिलाप	१५	,,
शरद् पूर्णिमा	१९	,,
श्री वाल्मीकि जयं	१९	,,
कार्तिक स्नान शुरू	२०	,,
करक चतु व्रत (करवा चौथ)	२३	,,
अहोई अष्टमी	२८	,,
रमा ११ व्रतं	३१	,,
धन त्योदशी	१	नवम्बर
नरक चौदश	२	,,
हनुमान जयं	२	,,
महालक्ष्मी पूजन दीपावली	३	,,
सोमवती ३०	३	,,
अन्नकूट गोवर्धन पूजा	४	,,
भाई दूज	५	,,
शहीदी लाजपत राय	७	,,
गोपाष्टमी	११	,,
नेहरू जयं (बाल दिवस)	१४	,,
प्रबोधिनी ११	१४	,,
तुलसी विवाह	१४	,,
भीष्मपंचकारम्भ	१४	,,
वैकुण्ठ चौदश	१७	,,
कार्तिक स्नानसमा	१८	,,
भीषम पंचक समा.	१८	,,
गुरू नानक जयं	१८	,,
[illegible] चन्द्रग्रहण	१८	,,

काल भैरवाष्टमी	२६	नव.
उत्पन्ना ११ व्रतं	२९	,,
चम्पा षष्ठी	८	दिस.
गीता जयं	१४	,,
दत्तात्रेय जयंती	१८	,,
सफला ११	२८	,,
जन्म गु. गोबिन्द सिंह	८	जन.
पुत्रदा ११ व्रतं	१३	,,
लोहड़ी	१३	,,
तिल सक्रांति (माघी)	१४	,,
माघ स्नान प्रार.	१७	,,
गु. रामानन्दाचार्य जयं	२३	,,
गणेश संकट ४ व्रत	२०	,,
गणतंत्र दिवस	२६	,,
षट् तिला ११ व्रत	२७	,,
ज. दि. लाजपत राय	२८	,,
मौनी अमावस	३१	,,
बसन्त पंचमी	५	फर.
भानु ७	७	,,
भीष्माष्टमी	८	,,
जया ११ व्रत	१२	,,
माघ स्नान पूर्ति	१५	,,
गु. रविदास जयं	१५	,,
महाशिवरात्रि व्रतं	२८	,,
रामकृष्ण परम हंस जयं	३	मार्च
होलाष्टक शुरू	९	,,
आमलकी ११	१२	,,
होलिकादहन त्यौ. होली	१५	,,
होला	१६	,,
शीतलाष्टमी	२३	,,
पाप मोचनी ११	२६	,,
वारूणी १३	२८	,,
चान्द्रसम्वतसर समा. २०३२ पूर्ण		

जम्मू कश्मीर के मेले

मेला बाहु फोर्ट	१९	अप्रैल

जम्मू व कश्मीर के मेले

वशीर भवानी	१७	जून
जन्म गु. हरगोबिन्द	२४	जून
शहीदी दिन	१३	जुला.
शरीक भवानी	१७	जुला.
ज्वालामुखी	२२	,,
कैलाश यात्रा	५-६	अग.
मेला रामवण (जम्मू)	१७	अग.
यात्रा अमरनाथ	२१	अग.
(जम्मू से २४ मील दूर)		
मेला पात जम्मू	९	सित
पुरमण्डल	२	दिस.
मेला लोहड़ी	१३	जन.

पंजाब व हरियाणा के मुख्य मेले

मेला वैशाखी	१४	अप्रैल
मेला मनसा देवी	१९	अप्रैल
मेला पिंजौर (हरियाणा)	११	मई
मेला भद्रकाली (शेखुपुरा)	५	जून
वामन द्वादशी (अम्बाला)	१६	सित.
मेला सुथरे शाह (देहली)	५	,,
मेला छपार (अहमदगढ़)	१९	,,
मेला सोढ़ल (जालन्धर)	१९	,,
मेला गोइन्दवाल	२०	,,
सरस्वती स्नान चैत्रवदि	३०	,,
जन्मोत्सव वीर वैरा (नकोदर)	१६	नव.
मेला रामतीर्थ	१८	नव
मेला जोड़ (फतेहगढ़)	२६-२८	दि.
मेला हरवल्लभ (जालंधर)	२७	,,
मेला मुक्तसर	१४	जन. १९७६
जयंती देवी (चंडीगढ़)	१४	फर.
महाशिवरात्रि	२८	,,
होला (आनन्दपुर)	१६	मार्च
मेला शीतला (कुराली)	२३	,,
मेला पिण्डोरी	२९	,,

हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रसिद्ध मेले (२०३२)

मेला रिवालसर (जि. मण्डी)	१४ अप्रैल
,, कलेश्वर महादेव (कांगड़ा)	१४ ,,
मेला नयना देवी (बिलासपुर)	१२ ,,
,, ,, ,,	—१४ अगस्त
,, ,, ,,	— ५ अक्तूबर
मेला मारकण्डा (बिलासपुर)	—१३-१६ अप्रैल
बिशु मेला (विभिन्न भागों में)	—वैशाख में
मेला दुर्गाष्टमी (कांगड़ा)	—१९ अप्रैल
,, ,, ,,	—१२ अक्तूबर
मेला रोहड़ू (महासू)	—२२-२३ अप्रैल
मेला राजगढ़ (सिरमौर)	—१४-१७ अप्रैल
लाहौल मेला (मण्डी)	—१८ अप्रैल
मेला माहुनाग (करसोग)	—१५-१६ मई
हरिदेवी मेला (घुमारवीं)	—२०-२१ मई
मे० श्यामाकाली (सरकाघाट)	—२ जून
मे० नारकण्डा (कुमारसेन)	—३१ मई-२ जून
त्रिभोणी मेला (सिरमौर)	आषा. के ४ रविवार
शीतला देवी (सुन्दरनगर)	—१० जून
मेला पिपलू (हमीरपुर)	—१९ जून
मे० सोलन (सोलन)	—२२ जून
मिंजर मेला (चम्बा)	—२७ जुलाई से ३ अगस्त
मे० चिन्तपूर्णी (जि. कांगड़ा)	—१४ अगस्त
गुग्गा मेला (बिलासपुर)	—३१ अगस्त
मे० वामन द्वादशी (सिरमौर)	—१६ सितम्बर
मे० चामुण्डा (कांगड़ा)	—५ अक्तूबर
मे० राम लीला (नादौन)	—५-१४ अक्तूबर
मे० दशहरा (विभिन्न भागों)	—१४ ,,
मेला दशहरा (कुल्लू)	—१४-२१ ,,
मे० तारा देवी (शिमला)	—१२ ,,
मे० ज्वालामुखी	१२ अक्तूबर
लावी मेला (तं. रामपुर व चिच्योट)	१४से२५ कार्तिक
मे० काली बाड़ी (शिमला)	—३ नवंबर
रेणुका मेला (सिरमौर)	— १३-१५ नवंबर
मेला बाबा रूद्रानन्द (ऊना)	—१४ ,,
मे० जोगी पांगा (ऊना)	—१८ ,,
मे. बसत पंचमी (बिलासपुर)	—४-५ फरवरी
मे० शिवरात्रि (मण्डी)	२८ ,,
मे० बैजनाथ (बैजनाथ)	—२९ ,,
मेला बाबा बडभाग सिंह (ऊना)	—१३ से १५ मार्च
मे० होला (पाओंटा साहब)	—१६ मार्च
मे० सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	१५-१९ ,,
मे० बाबा बालकनाथ (हमीर.)	—चैत्र मासे
मे० लिदबढ़ (नगरोटा)	— २५-२७ मार्च
मे० कनिहारा (धर्मशाला)	—चैत्र मासे
मे० साहबसिंह (ऊना)	,, ,,

गुरु पर्व सं २०३२

नाम गुरु	जन्म	ज्योति ज्योत	नाम गुरु	जन्म	ज्योति ज्योत
गु० नानक देव	१८ नवंबर	३० सितम्बर	गुरु हरिकृष्ण	१ अगस्त	२५ अप्रैल
गुरु अमर दास	२४ मई	२० सितम्बर	गुरु हरगोबिन्द	२४ जून	१६ अप्रैल
गुरु हरिराय	१३ फरवरी (७६)	२९ अक्तूबर	गुरु अर्जुन देव	२ मई	१३ जून
गुरु अगंद देव	१२ मई	१५ अप्रैल	गुरु तेग बहादुर	३० अप्रैल	७ दिसम्बर
गुरु राम दास	२२ अक्तूबर	८ सितम्बर	गुरु गोबिन्द सिंह	८ जनवरी (७६)	८ नवम्बर

ग्रह पीड़ा निवारक यन्त्र—जिस व्यक्ति का कोई ग्रह अनिष्ट कारक हो हो और वह विशेष पीड़ा पहुंचा रहा हो तो उस व्यक्ति को चाहिए कि वह इस यन्त्र को विधिपूर्वक अष्टगंध से तैयार करके धारण करे, जिससे ग्रह-पीड़ा शान्त हो और उस व्यक्ति का जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत हो।

८	१	६
३	५ ह्रींखये	७
४	९	२

(धारण करने की विधि पत्र व्यवहार करके पूछें)

जड़ी बूटियों से अनिष्ठ ग्रहों का शान्ति—हमारे परमदयालु महर्षियों ने, जो लोग बहुमूल्य रत्नों के धारण करने में असमर्थ हैं, उनके ग्रह दोषों की शान्ति के लिए जड़ी बूटी का धारण करना भी बतलाया है।

सूर्य पीड़ा कारक हो तो बेलपत्र की जड़ को डोरे में रविवार को धारण करें। चन्द्र पीड़ा कारक हो तो तो खिन्न की जड़ सफेद डोरे में सोमव र,को मंगल पीड़ा कारकहो तो अनन्तमूल की जड़ लालडोरे में मंगलवारको, बुधपीड़ाकारकहो तो विधाराकीजड़हरेडोरमेंबुधवार को। गुरु पीड़ा कारक हो नारंगीवाकेले की जड़ पीले डोरे में गुरुवार को शुक्र पीड़ा कारक हो तो तोसरपोंखा की जड़ सफेद डोरे से शुक्रवार को धारण करें। शनिपीड़ा कारक हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिवार को धारण करे। राहु पीड़ा कारक हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। केतु पीड़ा कारक हो तो असंगध की जड़ आसमानी डोरे में बुधवार को धारण करें। इस से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति होगी।

सम्पादक :—पं. पन्ना लाल शर्मा एम. ए. (संस्कृत-हिन्दी) अड्डा होश्यारपुर जालन्धर शहर

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का वर्ष फल श्रवण तथा महात्म्य २०३२

ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने समस्त जगदाधर-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ गणनाथं नमस्कृत्य प्रणम्यहं स्वपूर्वजान्। चन्द्रमिश्रं तथा रामजीदत्तम् सुत् बुधम् ॥२॥ तत सूनं स्वप्रपितामहं देवीदयालुपण्डित स्मरन भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे। विभवनामाब्दे वंक्रमे संवत्सरे शुभे पन्ना लाल शर्मा एम. ए. ज्यो. सुपुत्र पं. चूनीलाल (प्रपौत्र पं. देवीदयाल मशहूर आलम ज्यो. एण्ड संज) कुर्वे पंचांग दिवाकरम्। राजा शनिः मन्त्री चन्द्रः।

चैत्र शुक्ल सम्वत्सर को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन घर पर ध्वज लगावें, तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगलस्नान करें। देवता ब्राह्मण गुरु की पूजा करें। स्त्रियाँ शिशु आदि वस्त्र आभूषण धारण कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे संवत्सर का फल श्रवण करें। पंचांग का दान करें—इसे घर में रखने से वर्ष भर धन-धान्य व सुख की वृद्धि होती हैं।

प्रातःकाल में कटुनीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उस में काली मिर्च, हींग नमक (सेंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह सेवन करें। इस प्रयोग से अनेक रोगों की शाँति होती है और वर्ष पर्यन्त ज्वरादि रोग नहीं होते हैं।

पंचांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्नादि भोजन करावें, कथादि श्रवणकरसम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। उस दिन शुभविचार रखें। ईश्वर की भक्ति और कीर्तन आदि में समय व्यतीत करें।

लाभ-व्यय चक्र सम्वत् २०३२

अपनी राशि के लाभ और खर्च के अंकों को जोड़कर उसमें से एक घटा दो जो शेष बचे उसको ८ पर भाग दे दो। यदि शेष १ बचे तो लाभ २ बचे तो सौख्य की प्राप्ति, ३ बचे तो क्लेश हो, ४ बचे तो रोग विपत्ति, ५ बचे तो लोक अपवाद, ६ बचे तो सामान्यफल, ७ बचे तो विजय प्राप्ति, यदि कुछ न बचे तो वर्ष हानिकारक होता है। नीचे चक्रों में पुरुष और स्त्री घाती चन्द्रमा दिया गया है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मक.	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
खर्च	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११
पुरुधा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीघा.	१	८	९	४	३	३	६	२	१०	१२	२	१२

पंचांग दिवाकर देखने की विधि

१. इस पंचाँग का ग्रीनविच से पूर्व रेखाँश ७५।१८ एवं उत्तर अक्षांश ३१।१३ के आधार पर किया गया है, अतः इस पंचांग में दिया गया सूर्योदयास्त भी इसी स्थान अर्थात् जालन्धर का है।

२. यहां सर्वत्र निरयन पद्धति को लिया गया है। जहां सायन गणना की गई है वहां चित्रा पक्षीय अयनांश प्रामाणिक मान है।

३. तिथि नक्षत्र योग एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटि पल उनका समाप्ति काल बतलाते हैं और वह सूर्योदय से है। जैसेयदि शुक्ल३ रविवार को ५० घटि और ५० पल है तो इसके घंटे मिंट बनायें तो २० घंटे और २० मिण्ट सूर्योदय से तृतीय हुई। उस दिन सूर्योदय ६ बजकर १८ मिंट पर होता है। अतः उसमें २० घंटे और २० मिंट युक्त किए तो २६ घंटे ३८ मिंट हुये अर्थात् रविवार को तृतीया सूर्योदय से रात्रि के २ बजकर ३८ मिंट तक रहेगी फिर चतुर्थी लग जाएगी। इसी प्रकार नक्षत्र योग को भी जानें। (पन्नालाल पंचांगकर्त्ता)

४. पक्षों में 'शुदि' का अर्थ शुक्ल पक्ष (चांदने पक्ष) से है और 'वदि' का अभिप्राय कृष्ण पक्ष, अन्धेरे पक्ष से है। तिथि में १ से अभिप्राय प्रतिपदा से है २ से द्वितीया ३ तृतीया आदि जानें, १५ से पूर्णमासी और कृष्ण पक्ष में ३० से अभिप्रायः अमावस है। अगले कालम में वार दिए हुए हैं जैसे 'र' का अभिप्राय रविवार है। उससे अगले कालम में तिथि के घटि पल तिथि के समाप्ति काल को बतलाते हैं जो सूर्योदय से है। नक्षत्रों में 'अ' का अर्थ अश्विनी से है। इस प्रकार सब नक्षत्र जानें। इनके घटी पल समाप्ति काल बतलाते हैं। इनसे अगले कालम में योग दिए हुए हैं जैसे 'वि' से विष्कुम्भ, प्री से प्रीति इत्यादि योगों के घटि-पल है, जो कि योगों की सूर्योदय काल से समाप्ति काल बतलाते हैं फिर अगले कालम में करण है जैसे 'वि' से विष्ठि इत्यादि। इनसे अगले कालम में राष्ट्रीय शक सम्वत के प्रविष्टा हैं अर्थात् भारत सरकार द्वारा संचालित तारीख मास है। अगले कालम में मुसलमानी हिजरी सन् के प्रविष्टा हैं, फिर अगले कालम में अंग्रेजी महीनों के प्रविष्टा है और उससे अगले कालम में सम्वत् के मासों के प्रविष्टा हैं।

इन कालमों के बाद लस्टर में भद्रा पंचक ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश, राशि परिवर्तन, चन्द्रमा का राशि संचार, ग्रहों के वक्री-मार्गी उदय-अस्त, त्योहार, व्रत, महापुरुषों की जयन्तियाँ इसमें दी हुई हैं। लस्टर के बाद आगे रात्रि के १२ बजे का दैनिक सूर्य स्पष्ट (राशि, अंश, कला, विकला) में दिया हुआ है। सूर्य स्प के बाद जालन्धर का इण्डियन स्टैंडर्ड टाईम घण्टे मिन्टों में सूर्योदय काल दिया है। नीचे अष्टमी तथा पूर्णिमा के नव ग्रह स्पष्ट दिये गए हैं।

(सम्पादक : पन्नालाल शर्मा एम. ए.)

सम्वत् २०३२ मध्ये वर्ष राजा-मन्त्री आदि का फलादेश

अथ श्री शुभ सम्वत्सरेऽस्मिन् विक्रमादित्य राज्यात् २०३२ शाकाब्द: १८९७ सन् फसली १३८२-८३ सन् ईसवी १९७५-७६ सन् हिजरी १३९४-९५ श्री कृष्ण जन्म सम्वत् ५२११ कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९०७६ सृष्ट्यादि गताब्द १९५५८८५०७६ कलियुग को आरम्भ हुए ५०७६ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। प्रभावादि सम्वत्सरों के मध्य प्रभव नामक सम्वत्सर व्यतीत हो चुका है। आगामी विभव नामक सम्वत्सर मेषादि से पूर्व भुक्त ६।१७।२९।३५ भोग्य मासादि ५।१२।३०।२५ कार्तिक प्रविष्टे १८ रविवार ३ नवम्बर १९७४ को ३८ घटि ५ पल पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगा।

विभवनाम सम्वत्सर फल—दण्डनीतिपराभूपा बहुसस्यार्धवृष्टय:। विभवाब्देऽखिला लोका: सुखिन: स्युर्विवैरिण:।। शासक लोग प्रजा के प्रति कठोर एवं दृढ़ नीति का पालन करेंगे। गर्मी और वर्षा की अधिकता रहेगी भरपूर कृषि की पैदावार होगी लोग सुखी व सम्पन्न रहेंगे।

१. **अस्मिन् वर्षे राजा शनिस्तत्फलम्**—शनैश्चरे भमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगै: परिपीड्यते जना:। युद्धं नृपाणां गद तस्कराद्यै र्भ्रमन्ति लोका: क्षुधिताश्च देशान्।। वर्ष पति शनि होने पर वर्षा की अल्पता तथा लोग अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित रहें। शासक वर्ग युद्धोन्मुख हो तथा देश में युद्धभय, लोग भुखमरी एवं अभावग्रस्त हो कर चोरी, ठगी इत्यादि दुष्कर्मों में लगेंगे।

२. **मन्त्री चन्द्रस्तत्फलम्**—शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यापि धरा रमते सुख मण्डिता। वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदा: सुख राशि सुशोभिता:।। मन्त्री चन्द्रमा होने पर वर्षा की अधिकता एवं कृषि की बहुलता रहती है। लोगों में सुख की वृद्धि तथा पृथ्वी सुख सम्पदा से सुशोभित होती है।

३. **सस्येश बुधस्तत्फलम्**—कृषि का स्वामी बुध होने पर अत्यधिक वर्षा होती है। भूमि जल, कृषि, वृक्षों आदि से समृद्ध होती है। प्राकृतिक उपद्रव शांत हो जाते हैं। ब्राह्मण लोग जप-पाठादि धर्म कर्म में रत होते हैं।

४. **धान्येशो भौमस्तत्फलम्**—धान्येश मंगल होने पर ग्रीष्मऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यादि में कमी हो जाएगी। चावल, घी, ईख, तेलादि पदार्थ महगेहोंगे।

५. **मेघेश सूर्य: फलम्**—वर्षा पर्याप्त होती है। जौ, चने, ईख, वृक्ष, और चावल आदि पर्याप्त उत्पन्न होंगे और पृथ्वी पर सुख, सम्पन्नता व्याप्त रहे। गर्मी अधिक पड़े।

६. **रसेश शुक्रस्तत्फलम्**—लोग यज्ञ, पूजन उत्सवादि करने में उत्सुक रहें और इन कार्यों में संतुष्टि अनुभव करें। पृथ्वी सुख सम्पदा से युक्त हो और शासक लोग कुटिल हों।

७. **नीरसेश बुध का फल**—नीरसेश बुध होने पर रंग बिरंगे कपड़े, शंख चन्दन आदि के मूल्यों में वृद्धि होती है।

८. फलेश शनि का फल—वृक्षों पर फलों, पुष्पों और कृषि आदि की हानि होती है। हिमपात का भय, तथा, लोग जंगली जानवरों, चोरादि एव अनेक प्रकार के रोगों से व्याकुल हों।

९. दुर्गेश सूर्य का फल—सेना का स्वामी सूर्य हो तो राजा लोग न्याय में तत्पर रहें। राजद्वार में जाने वाले निर्भय हों। साधारण और विशेष वर्ग में भेद कम रह जाएगा। निश्चित मार्ग पर चलने वालों को कोई भय न होगा।

१०. धनेशबुध का फल—विविध प्रकार की वस्तुओं के संग्रह से लाभ रहता है। फलों की वृद्धि हो, ब्राह्मण यज्ञादि शुभ कर्मों में परायण रहें। कृषि अच्छी हो। अनाजादि के व्यापार से लाभ रहेगा। धन-संग्रह अधिक होगा।

नव मेघों में द्रोण नामक मेघ का फल—वर्ष पर्यन्त वर्षा रहती है।

रोहिणी निवास: समुद्रे फलम्—रोहिणी का वास समुद्र पर होने पर वर्ष भर अत्यन्त भारी वर्षा रहती है।

समय का निवास माली के घर—होने पर भी वर्ष पर्यन्त बहु मात्रा में वर्षा होती है। कृषि आदि में वृद्धि एवं लाभ होगा।

समय का वाहन—महिष (भैंस) है।

वर्षादि विश्वामान—वर्षा विश्वा५, धान्य११, वायु:१३, तेज५, शीत१७, तृणं७, वृद्धि१५, क्षय१५, सत्यं ।।, धर्म १।। पाप१८ **शनि की दृष्टि पूर्व की ओर**—फल—पूर्वी देशों में अशांति व युद्ध-भय रहे रोग, उपद्रव, दुर्भिक्ष व प्राकृतिक प्रकोप बाढ़ादि से क्षति का भय।

आर्द्रा प्रवेश फल—सूर्य ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष१४ रविवार ८ आषा तदनुसार २२ जून १९७५ ई० को १३।२१ इष्ट तथा ज्येष्ठा नक्षत्र और शुभ योग पर सिंह लग्न में आर्द्रा में प्रवेश करेंगे। फल—विदेश में राष्ट्र की प्रतिष्ठा बढ़े, किन्तु स्वदेश में शासक और प्रजा में विरोध व रोष की भावना फैले। लोगों में क्रोध बढ़े अग्नि की घटनाएं अधिक हों!

चतुर्युगाणां व्यवस्था

सत्युग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमीं को हुई। इसकी आयु १७२८००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म्म वाराह आदि ४ अवतार हुए। कूर्म्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने २ धर्म पर स्थित थी। ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे शाप व वरदान देने में समर्थ थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में सत्यवक्ता थे शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म पर तत्पर थे। समय पर वर्षा होतीथी। फसल अच्छी होती थी स्त्रियां पतिव्रता थीं। मनुष्य की परमायु १००००० वर्ष बाल्यावस्था १०००० वर्ष। देह की लम्बाई २१ हाथ थी पुण्य २० विश्वेपा का नाम भी न था। सुवर्ण रत्नादि का व्यवहार था। **त्रेता युग:**—वैसाख शुक्ल तृतीय को त्रेता युग की उत्पति हुई। इस की आयु १२१५००० वर्ष थी इसी युग में तीन अवतार वामन्, परशुराम, रामचन्द्रजी हुए। श्री वामनजी ने महाबलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नापकर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। राजा रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया था। मनुष्य की आयु १०००० वर्ष और बाल्यावस्था १००० वर्ष थी पुण्य १५ विश्वे पाप ५ विश्वे था। स्त्रियां पतिव्रता थी सुवण का सिक्का चलता था। **द्वापर युग:**—माघ कृष्णा ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इस की आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें दो अवतार हुए श्री कृष्ण जी ने कंश शिशु पालादि का वध किया और बुद्ध जी ने अहिंसा का प्रचार किया। लोग अपने धर्म में स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यापार किया जाता था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था।

कलियुग:—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४३२००० हजार वर्ष है, इसमें कल्कि अवतार है जिसका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है पुरुष का देह मान ३॥ हाथ है। पुण्य ३ विश्वे पाप १५ विश्वा है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी पात्र और तांबे का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जाएंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमख तप यज्ञादि—कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे, वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी सर्य और चन्द्र ग्रहण ४६००० होंगे कलियुग के ५०७४ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४२६९२५ वर्ष रह गये है कलियुग के अन्त से सम्भल ग्राम में विष्णु यज्ञ नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियग में नीचों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों में वृद्धि होगी व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गो, ब्राह्मण की हत्या से भी भय न करेंगे।

बालारिष्ट एवं गण्डान्त नक्षत्र-विचार

ज्योतिष-विदों ने बालारिष्ट तीन प्रकार से माना है।

१) गण्डान्तारिष्ट २) ग्रह-अरिष्ट ३) पताकी-अरिष्ट

(ग्रहारिष्ट जानने के लिए पृष्ठ १८ देखें)

गण्डारिष्ट—मघा, मूला और अश्विनी नक्षत्र के आदि चार चार घड़ियां तथा आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र की अन्तिम चार घड़ियां गण्डदोष युक्त मानी जाती है। इन्हीं को गण्डमूल नक्षत्र कहते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक अथवा बालिका अपने शरीर के लिए अरिष्टकारी तथा माता, पिता एवं उनके धन का नाश करने वाली होती है। यदि किन्हीं उपायों से जीवित रहे तो धन, धान्य एव सुख से सम्पन्न होता है। गण्डमूल में उत्पन्न सन्तान को छ: मास अथवा २७ दिन तक पिता को देखना नहीं चाहिए। किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा गण्डान्त नक्षत्र की विधिवत् शांति करवा कर मुख दर्शन करना शुभ रहता है।

मघा फलम्—प्रथम पाद में उत्पन्न हो तो माता या नानके पक्ष को हानि, द्वितीय पाद में पिता को भय, तीसरे पाद में शुभ, चतुर्थ में धन लाभ होगा।

ज्येष्ठा फलम्—प्रथम पाद में बड़े भ्राता को अरिष्टकारी, द्वितीय में लघु का नाश, तृतीय में माता या नानी का नाश, चतुर्थ में पिता को कष्ट।

अश्विनी फल—प्रथम पाद में जन्म होने से पिता को कष्टकारी। शेष तीन चरणों में शभ कहा गया है।

आश्लेषा फलम—प्रथम चरण शुभ है। दूसरे में पिता के धन का नाश, तीसरे में सास माता का नाश चतुर्थ चरण में पिता को कष्टकारी हैं।

रेवती फलम—रेवती नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में जन्म हो तो शुभ किन्तु चतुर्थ चरण में गृह में भय और कष्टकारी होता है।

ज्येष्टा अथवा मूला—नक्षत्र के मध्य दिन में जन्म हो तो पिता को कष्ट।

मूला अथवा आश्ले—नक्षत्र के मध्य रात्रि में जन्म हो तो माता को कष्ट।

रेव अथवा अश्वि—नक्षत्र के मध्य सध्या में जन्म हो तो अपने शरीर को कष्ट जानें।

तिथि विचार—दोनों पक्षों की पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या की अन्तिम घट्यादि में जन्म होना अरिष्टकारी होता हैं। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (१४) के किसी भी भाग में जन्म होना भी अशुभ माना गया है।

समान नक्षत्र जन्म फल—यदि पिता पुत्र, माता-कन्या अथवा दो भाईयों का जन्म नक्षत्र एक हो तो दोनों में से एक की अवश्य मृत्यु हो जाती है। कल्याण के लिए कुल देवता की पूजा तथा महामृत्युञ्जय का पाठ करें।

विक्र संवत-२०३२ (१९७५-७६) में कुल चार ग्रहण होंगे जिनमें से दो खण्ड सूर्य ग्रहण तथा दो खग्रास चन्द्रग्रहण लगेंगे ।।

(१) **खण्ड सूर्यग्रहण**—११ मई दोपहर १२ बजकर ३६ मिनट पर।

(२) **खग्रास चन्द्र ग्रहण**—२५ मई को दोपहर ११-१६ पर लगेगा।

(३) **ग्रस्तास्त खण्ड सूर्य ग्रहण**—३ नवंबर को सायं ६-३५ पर प्रारम्भ होगा।

(४) **खग्रास चन्द्रग्रहण**—१८ नवंबर १९७५ को रात्रि ३ बजकर ३३ मिनट पर दिखाई देगा।

(१, ३) **खण्ड सूर्य ग्रहण**— २८ वैशाख-रविवार तदनुसार ११ मई को दोपहर १२बजकर ३२ मिनटके प्रारम्भ होगा। भारत में दोनों ही दिखाई नहीं देंगे।
इसका प्रभाव विश्व के दक्षिणी पश्चिमी देशों पर ही मुख्यत: पड़ेगा।

(३) **खग्रास चन्द्रग्रहण** तथा **खण्ड सूर्य ग्रहण** भारत के विभिन्न भागों पर दिखाई नहीं देंगे।

(४) **खग्रास चन्द्रग्रहण** : यह ग्रहण १८ नवंबर मंगलवार कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा कृतिका नक्षत्र एवं वृष राशि के मध्य रात्रि ३ बजकर ३३ मिनट पर आरम्भ होकर ५ बजकर १४ मिनट पर समाप्त होगा।

स्पर्शकाल ४९ घड़ी ३५ पल
मध्यकाल ५३ ,, ५४ ,,
मोक्ष ५८ ,, १५ ,,

यह ग्रहण भारत के दक्षिणी पश्चिमी सीमावर्ती तटों में दृष्टिगोचर होगा।

ग्रहण का सूतक—सांय ६ बजकर ४४ मिनट पर आरम्भ हो जाएगा। इस काल से धर्म-परायण मनुष्यों को भोजनादि खाना-पीना, छल, कपट, नवीन कार्यारम्भ मैथुनादि विशेषत: त्याज्य हैं। भजन, पूजन, हवन मन्त्र दानादि शुभ कार्यों का सम्पादन करना चाहिए। ग्रहणान्तें बिम्ब का दर्शन करके स्नान अनन्तर भोजनादि कर सकते हैं। बाल, वृद्ध एवं रोगियों को क्षम्य है।

ग्रहण का फल—यह ग्रहण सोमवार, कृतिका नक्षत्र में लगेगा। अत: सर्व प्रकार के अनाज, चावल, घी, गुड़ादि एवं सोना, तांबा, पीतल, लोहा आदि धातुएं तेज होंगी। यह तेजी चार मास तक रहेगी। लाल रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी रहेगी।

चन्द्र ग्रहण राशि फल—

राशि	फल	राशि	फल
मेष	अचानक-धन हानि	तुला	शरीर कष्ट रहे
वृष	कोई दुर्घटना पेश हो	वृश्चिक	स्त्री को कष्ट
मिथुन	धन का अपव्यय	धन	शुभ समाचार मिले
कर्क	शुभ, धन लाभ हो	मकर	मानसिक व्यथा बढ़े
सिंह	पदोन्नति होगी	कुंभ	शरीर कष्ट व धन हानि
कन्या	कोई झगड़ापवाद लगे	मीन	धन लाभ व सम्पत्ति बढ़े

गुरु का मेष राशि प्रवेश

सम्वत् २०३२ आषाढ़ शुक्ल ९ बृहस्पतिवार तदनुसार

१७ जुलाई १९७५ को गुरु मेष राशि में प्रवेश करेंगे। गोचरफलानुसार गुरु का प्रत्येक राशि पर शुभाशुभ प्रभाव दो मास पूर्व ही आरम्भ हो जाता है। सूक्ष्म व विस्तार से फल जानने हेतु जन्मपत्री में गुरु की अवस्था का पता होना आवश्यक है।

मेष राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ लाभ

विशेष फल—गुरु जिन राशि वालों को शुभ फलदायक है, उन्हें विद्या में सफलता, विवाह अथवा सन्तान का सुख, धन लाभ, श्रेष्ठ व्यक्ति से मुलाकात, पदोन्नति उत्सव इत्यादि शुभ लक्षण घटित होंगे। मध्यम फल वाले व्यक्ति को कभी कष्ट, तो कभी सुख प्राप्त होता है। अशुभ फल वाले **व्यक्तियों को विद्या** में असफलता, स्त्री अथवा सन्तान को कष्ट, धन हानि, शारीरिक व मानसिक चिन्ता उत्पन्न होती है। अशुभ फल के निवारणार्थ वहस्पतिवार का व्रत, गुड़, गेहूं व पीले लड्डुओं तथा हल्दी व पीले पुष्प व फल, पीले चावल व वस्त्र का दान करना चाहिए।

राहु का राशि प्रवेश फल—१२ अक्तूबर १९७५ को राहु तुला राशि में और केतु मेष राशि में प्रवेश करेगा। केतु का फल राहु से विपरीत जानना।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ

राहु अपनी शुभ अवस्था में अकस्मात—धन-प्राप्ति, उच्च पद की प्राप्ति, स्वास्थ्यलाभ इत्यादि शुभ फल करता हैं। तथा अशुभ अवस्था में धन हानि, निकट सम्बन्धी का वियोग, दुर्घटना, मानसिक चिन्ता व क्लेश इत्यादि अशुभ फल प्रदान करता है।

नोट—राहु की शान्ति के लिए शनि की भान्ति उपाय करने चाहिएं।

शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव सम्वत् २०३२

सम्वत् २०३२ आषाढशुक्ल पूर्णिमा तदनुसार २३ जुलाई १९७५ ईसवी बुधवार को शनि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्रमा कालीन २ घडी १९ पल पर कर्क राशि में प्रवेश करेगा। शनि के इस राशि परिवर्तन से द्वादश राशियों पर अलग अलग प्रभाव करेगा। नीचे मनुष्य के जन्म नक्षत्र सम्बन्धी विभिन्न अंगों पर प्रभाव तथा प्रसिद्ध नाम राशि का सुवर्णादि पाया फल विचार किया गया है। शनि जिनके जन्म नक्षत्र और प्रसिद्ध नाम राशि--दोनों में अच्छा है उनके लिए आगामी सम्पूर्ण अढ़ाई वर्ष लाभदायक रहेंगे। यदि दोनों राशियों या एक में अशुभ फल है तो अढ़ाई वर्ष की अवधि अत्यन्त अनिष्टकारी सिद्ध होगी। जिन राशि वालों को शनि अशुभ एवं नेष्ट फलकारी है अथवा मध्यम फली है उनको कल्याणार्थ २३ जुलाई या कृष्ण पक्षीय शनिवार को माष, काले वर्ण का कपड़ा, लोह बर्तन, काले तिल-तैल, तैल युक्त मिष्टान्न भोजनादि का दान करना तथा तैल सरसों युक्त सतनाजा पक्षियों को डालना शुभ फलदायक रहेगा। इसके अतिरिक्त शनि के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए किसी विद्वान् की सम्मति से विधिवत् नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करना शुभ है। शनि-यंत्र भी शास्त्रविधि अनुसार निर्मित ही ग्रहण करना चाहिए।

मेष का पाया ताम्बा :—मेष राशि को शनि ताम्बा के पाया पर राशि बदलेगा। कारोबार अथवा नौकरी में तरक्की, कोई शुभ समाचार मिले। नये कामों से लाभ मिले।

वृष का पाया चान्दी :—वृष को शनि चान्दी के पाया पर राशि बदलेगा। भूमि सम्बन्धी कार्यों से लाभ। बिछड़े बन्धुओं से मिलाप। किन्तु यात्रा में हानि। अचानक लाभ मिले।

मिथुन का पाया लोहा :—मिथुन राशि को शनि लोहे के पाया पर राशि बदलेगा। शरीर अस्वस्थ व स्त्री को कष्ट, व्यवसाय में हानि, व्यर्थ यात्रा अधिक।

कर्क का पाया ताम्बा :—कर्क राशि को शनि ताम्बे के पाया पर बदलेगा। घर में कोई मंगल कार्य हो, नये व्यवसाय से लाभ, शत्रु का नाश, अचानक लाभ।

सिंह का पाया सोना :—सिंह राशि को शनि सोने के पाया पर बदलेगा। कोई मिथ्यापवाद लगे, सगे सम्बन्धियों से बिगाड़, धन का खर्च आय से अधिक रहे, शरीर कष्ट।

कन्या का पाया चान्दी :—कन्या राशि को शनि चान्दी के पाया पर राशि बदलेगा। भाग्य में परिवर्तन होगा। धर्म कार्यों में रुचि बढ़ेगी, धन लाभ हो।

तुला का पाया लोहा :—तुला राशि को शनि लोहे के पाया पर राशि बदलेगा। कारोबार में हानि, कोई अशुभ समाचार मिले, बनते कामों में बाधा पड़े।

बृश्चिक का पाया ताम्बा :—इस राशि को शनि ताम्बे के पाया पर राशि बदलेगा। व्यापार तथा नौकरी में समुचित लाभ, बिगड़े हुये कार्यों में सफलता, कोई शुभ समाचार मिले।

धन का पाया चान्दी :—धन राशि को शनि चान्दी के पाया पर राशि बदलेगा। सन्तान सुख मिले, विद्या में सफलता, शुभ समाचार मिले।

मकर का पाया सोना :—मकर राशि को शनि सोने के पाया पर राशि बदलेगा। शरीर कष्ट, व्यापार में लाभ, यात्रा अधिक रहे, मन में चिन्ता रहे।

कुम्भ का पाया लोहा :—कुम्भ राशि को शनि लोहे के पाया पर राशि बदलेगा। रुधिर विकार, धन हानि, बनते कार्यों में रुकावट, शरीर कष्ट, स्त्री की ओर से परेशानी।

मीन का पाया सोना :—मीन राशि को शनि सोने के पाया पर राशि बदलेगा। रिश्तेदारों से बिगाड़ व धन हानि, गुप्त शत्रुओं का भय रहे, मुकद्दमे व झगड़े पर अपव्यय।

मनुष्य के विभिन्न अंगों पर शनि का प्रभाव

नक्षत्रादि	स्थान	फल
उ. षा.	मुखे	हानि
श्रव. धनि. शत. पू. भा.	द. हस्ते	लाभ
उभा. रेव अश्वि	द पाद	यात्रा
भर. कृति रोहि	बायां पाद	यात्रा, खर्च
मृग. आ. पुन. पुष्य	बायां हस्त	रोग
श्ले. मघ. पूफ. उफ हस्त	हृदय	लाभ
चित्र स्वा. विशा	मस्तिष्क	वृद्धि
अनु.	द. नेत्र	सुख
ज्ये.	बायां नेत्र	सुख
मूला. पू. षा.	गुदा	कष्ट

नोट :—प्रत्येक नक्षत्र पर शनि का प्रभाव ३ मास १० दिन तक विशेषतः रहता है।

अथ शनि साढ़ेसती विचार

शनि जिनकी राशि से पहले, दूसरे और द्वादश भाव पर राशि परिवर्तन करता है उनको शनि की साढ़ेसती एवं बृहत्कल्याणी (साढ़े सात वर्ष पर्यन्त की महादशा) कुटिल चक्र में से गुज़रना पड़ता है। २३ जुलाई से मिथुन, कर्क और सिंह राशि वालों को साढ़ेसती रहेगी। मेष और धन राशि को अढ़ैया रहेगा। इन राशि वालों में जन्मकालीन भी यदि शनि अशुभ स्थान में पड़ा हो तो मनुष्य को अनेक प्रकार के शरीर कष्टों एवं दुष्टों का भय रहता है। धन व सम्पत्ति की हानि, ऋण में वृद्धि, व्यर्थ यात्राएं तथा संतान और स्त्री को कष्ट रहता है। कर्क राशि वाले को व्यर्थ यात्रा, शरीर कष्ट, चर्म एवं वायु रोग का भय रहेगा। सिंह राशि वालों को धन के कारण विशेष चिन्ता तथा खर्च अत्यधिक रहेगा। मिथुन राशि वालों को व्यवसाय में धन हानि, परिवार में किसी की मृत्यु।

पंचांग दिवाकर से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय ज्ञात

विश्व में प्रत्येक स्थान पर एक समय पर सूर्योदय नहीं होता अतः किसी स्थान का लग्न व इष्ट्यादि बताने के लिए वहां का सूर्योदय का ज्ञान अति आवश्यक है। प्रायः बहुत से लोग अभीष्ट स्थान का सूर्योदय निकालते समय पंचांग में मुद्रित जालन्धर के सूर्योदय काल में केवल रेखांतर संस्कार करके ही वहां का सूर्योदय काल निकाल लेते हैं, जो कि प्रायः अशुद्ध रहता है। अतः पाठकों की सुविधा के लिए पचाँग दिवाकर में भिन्न अक्षांशों का मध्यम स्थानीय सूर्योदय काल (लोकल मीन टाईम) दिया जा रहा है इस में चरान्तरादि सभी संस्कार किए हुए हैं। इस में केवल अभिष्ट स्थान का देशान्तर संस्कार (पृष्ट ८९ पर) ही युक्त-वियुक्त करने से उस अक्षांश (स्थान) का सूर्योदय काल स्टैण्डर्ड टाईम से निकल आएगा।

जिस शहर का आपको सूर्योदय काल निकालना है। पंचाँग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर उस शहर का अक्षाँश देखो फिर पंचाग दिवाकर पृष्ट ९ से १४ पर अभीष्ट अक्षांश के नीचे और जिस अंग्रेजी तारीख का आपको सूर्योदय निकालना हो उस तारीख के सामने अभीष्ट शहर का माध्यम सूर्योदय काल दिया हुआ है। फिर उस शहर का देशांतर संस्कार जो कि पंचाँग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर दिया हुआ है। उसे + चिन्ह हो तो धन और — चिन्ह हो तो ऋण करने से अभीष्ट शहर का सूर्योदय काल स्टैंडर्ड टाईम में आ जाएगा।

उदाहरण—जैसे आपको देहली में ८ मार्च का सूर्योदय निकालना है। पंचाँग के पृष्ठ ८९ पर देहली का अक्षांश २८।३९ दिया हुआ है। अतः पृष्ठ ११ पर ८ मार्च के सामने और ३०° के नीचे ६।१९ मध्यकालीन सूर्योदय दिया हुआ है। चूंकि देहली का अक्षाँश ३०° से लगभग डेढ़ अंश कम है अतः इसी तारीख को यदि १० अंश पर ४ मिन्ट का अन्तर पड़ा है तो डेढ़ अंश के होने पर केवल ३६ सैकण्ड का अन्तर रहेगा जो कि ६।१९ से कम करने पर ६।१८।२४ होगा इसमें पृष्ठ ८९ पर ही लिखे देहली के देशान्तर + २१'।८" होने से मध्यम सूर्यकाल में जमा करने से कुल ६ घण्टे ३९ मिन्ट ३२ सैकण्ड अर्थात्—6 बजकर ४० मिन्ट पर सूर्योदय निकल आएगा (३० से अधिक सैकण्ड होने पर १ मिन्ट बढ़ा लेना चाहिए)। इसी प्रकार अन्य शहरों का सूर्योदय दें भी जानें।

विदेशों का सूर्योदय काल जानने के लिए वहां का भारत के स्टैंडड टाईम से अन्तर का ज्ञान होना आवश्यक है इसके लिए पृष्ठ ९१ देखें।

नोट:—पाठकों की सुविधा के लिए इस वर्ष मे उत्तरी भारत (हिमाचल प्रदेश व जम्मू इत्यादि) के कुछ प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (अंतिम पृष्ठों पर) भी दे दिए गए हैं। **सम्पादक : बन्सीलाल शर्मा [illegible]**

अपनी जन्म कुण्डली अथवा जन्म या नाम राशि के आधार पर उपयुक्त ग्रह-रत्नों को धारण कर मनुष्य चमत्कारिक रूप से लाभ उठा सकता है। शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि करने और क्रूर-ग्रहों के के अनिष्ट-प्रभाव को दूर करन में ग्रह-रत्न निश्चित रूप से अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए हैं। इनको धारण करते समय उपयुक्त रत्नों का चुनाव, विधि और शुभ मुहूर्त का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। किसी विद्वान् ज्योतिषी से परामर्श करना उचित रहेगा।

नाम राशि	सम्बद्धग्रह	रत्न	नाम रा.	ग्रह	रत्न
मेष	मंगल	मूंगा	तुला	शुक्र	हीरा
वृष	शुक्र	हीरा	वृश्चि.	मंगल	मूंगा
मिथुन	बुध	पन्ना	धन	गुरू	पुखराज
कर्क	चन्द्रमा	मोती	मकर	शनि	नीलम
सिंह	सूर्य	माणक्य	कुम्भ	शनि	नीलम
कन्या	बुध	पन्ना	मीन	गुरू	पुखराज

ग्रह-रत्न-धारण करने की विधि

(१) **माणिक्य**—सूर्य की शान्ति के लिए इसको सोने की अंगूठी में रविवार को जब कृतिका पुष्य उ.षा या उ.फा. नक्षत्र हो सूर्य पूजा के पश्चात् पहिनना चाहिए। १५ अगस्त से १४ सितम्बर तक उत्पन्न व्यक्तियों को माणिक्य धारण करना विशेष शुभ है। पित्त, ज्वर, क्षय शिरपीड़ा व नेत्रादि रोगों में लाभ पहुंचाता है।

(२) **मोती** Moon-Stone)—क्षीण चन्द्रमा को बल प्रदान करता है। १५ जुलाई से १४ अगस्त तक उत्पन्न व्यक्तियों को श्रेयकर है इसे शुक्लपक्ष के सोमवार को चांदी की अंगूठी में जड़वा कर धारण करें। यह विचारों को शक्ति प्रदान करता है। प्रमेह, वायु और मस्तिष्क रोगों में लाभ करता है।

(३) **मूंगा**—मंगल ग्रह के प्रभाव को शुभत्व प्रदान करता है। १५ अप्रैल से १४ मई तक व १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक उत्पन्न व्यक्तियों को धारण करना उचित है। इसकी मंगलवार पूजा करके सोने की अंगूठी में शुभ मुहुर्त में धारण करे। रक्त विकार, हृदय की दुर्बलता व चर्म रोगों को लाभ करता है।

(४) **पन्ना**—बुध रत्न है। १५ जून से १४ जुलाई तक और १५ सितम्बर से १४ अक्तूबर तक जन्मे व्यक्तियों को शुभ मुहूर्त में धारण करना उपयोगी है। यह बुद्धिवर्धक और शीत पित्त मूर्च्छा रोगों में शुभ।

(५) **पुखराज**—जिनका जन्म १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक हो, उन्हें शुभ मुहूर्त्त में वीरवार के दिन धारण करना चाहिये। इसका वजन ४ रत्ति से कम न होवे। आंतड़ी और कफ-जन्य रोगों म गुणकारी। बल, बुद्धि विद्या व संतान में वृद्धि करता है। स्त्रियों के सुखमय विवाह के लिये विशेष शुभ।

(६) **हीरा**—१५ मई से १४ जून तक और १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक जन्मे व्यक्तियों के लिये उपयोगी है। शुक्रवार को भरणी. पू. षा आदि शुभ नक्षत्रों में सोने या चांदी की अंगूठी मे पहनने से श्वेत प्रदर, स्वरभंग काम-जन्य रोगों को शांति होती है। यह सुखमय विवाह के लिए शुभ। इसकी बदल श्वेत गोमेध है।

(७) **नीलम**— १५ जन. से १४ फर. तक उत्पन्न व्यक्तियों को उपयुक्त रहेगा। पंचधातु या लोह की अंगूठी में धारण करनें से दिल और दिमाग के रोगों की शांति और नौकरी या व्यापारादि में तरक्की करता है।

(८) **गोमेध**—राहु के अनिष्ट कुप्रभाव को दूर कर मन और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। जिनका जन्म १५ फरवरी से १४ मार्च तक है, वे यह रत्न किसी शुभ मुहूर्त्त में धारण करें।

(९) **लहसनिया**—१५ मार्च से १४ अप्रैल तक उत्पन्न व्यक्ति पहन सकते हैं। यह केतु-रत्न है। यह रत्न धातु की अंगूठी मे अश्विनी मघा मूला इत्यादि नक्षत्रों के शुभ मुहूर्त में डालें। यह वायु रोगों में उत्तम है।

अधिक जानकारी के लिए हमें स्वयं मिलें या पत्र लिखें।

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इस में अभीष्ट स्थान के रेखांतर टाईमको युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा । पूरा विवरण पृष्ठ ? पर देखें । १०

ज०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°	६०°	फ़०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°	६०°
जन	५।५९	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।२०	८।३२	८।४६	९।०३	फ़र	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	७।००	७।१०	७।२२	७।३६	७।४२	[illegible]	७।५८	८।०७	८।१७
२	६।०	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६	९।०३	२	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	६।५९	७।०९	७।२१	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१५
३	६।०	६।१८	६।३६	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४६	९।०२	३	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५९	७।०८	७।१९	७।३३	७।३९	७।४६	७।५४	८।०३	८।१३
४	६।१	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०३	४	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५८	७।०७	७।१८	७।३२	७।३८	७।४४	७।५२	८।०१	८।१०
५	६।१	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०१	५	६।१०	६।२२	६।३५	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	६।३०	७।३६	७।४२	७।५०	७।५८	८।०८
६	६।२	६।१९	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४	९।००	६	६।१०	६।२२	६।३४	६।४८	६।५६	७।०५	७।१६	७।२८	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५
७	६।२	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१८	८।३१	८।४३	८।५९	७	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५५	७।०४	७।१४	७।२७	७।३३	७।३९	७।४६	७।५३	८।०३
८	६।३	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१७	८।३०	८।४३	८।५८	८	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५४	७।०३	७।१३	७।२५	७।३१	७।३७	७।४४	७।५२	८।००
९	६।३	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०६	८।१७	८।३०	८।४३	८।५७	९	६।११	६।२१	६।३३	६।४६	६।५३	७।०२	७।१२	७।२४	७।२९	७।३४	७।४२	७।४९	७।५८
१०	६।४	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०६	८।१६	८।२९	८।४१	८।५६	१०	६।११	६।२१	६।३३	६।४४	६।५२	७।०१	७।१०	७।२२	७।२७	७।३३	७।४०	७।४६	७।५५
११	६।४	६।२०	६।३८	६।५७	७।०९	७।२३	७।३७	७।५७	८।०५	८।१५	८।२७	८।४०	८।५५	११	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५१	७।००	७।०९	७।२०	७।२५	७।३१	७।३७	७।४५	७।५३
१२	६।४	६।२१	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५६	८।०५	८।१५	८।२६	८।३९	८।५४	१२	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५०	६।५८	७।०८	७।१८	७।२४	७।२९	७।३५	७।४२	७।५०
१३	६।५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३७	७।५६	८।०४	८।१४	८।२५	८।३९	८।५३	१३	६।११	६।२०	६।३१	६।४३	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।२२	७।२७	७।३५	७।४०	७।४७
१४	६।५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१३	८।२४	८।३६	८।५१	१४	६।११	६।२०	६।३१	६।४२	६।४८	६।५६	७।०५	७।१५	७।२०	७।२५	७।३३	७।३८	७।४५
१५	६।६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१२	८।२३	८।३५	८।५०	१५	३।११	६।२०	६।३०	६।४१	६।४७	६।५५	७।०३	७।१३	७।१८	७।२३	७।३१	७।३५	७।४२
१६	६।६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०२	८।११	८।२२	८।३४	८।४९	१६	६।११	६।२०	६।३०	६।४०	३।४६	६।५३	७।०२	७।११	७।१६	७।२१	७।२९	७।३२	७।३९
१७	६।६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०१	८।१०	८।२१	८।३३	८।४७	१७	६।११	६।१९	६।२९	६।३९	६।४४	६।५२	७।००	७।१०	७।१४	७।१९	७।२६	७।३०	७।३७
१८	६।७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३४	७।५३	८।००	८।०९	८।२०	८।३१	८।४६	१८	६।११	६।१९	६।२८	६।३९	६।४३	६।५१	६।५८	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२७	७।३४
१९	६।७	६।२३	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३३	७।५२	७।५९	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४	१९	६।११	६।१९	६।२८	६।३८	६।४२	६।५०	६।५७	७।०६	७।१०	७।१४	७।२०	७।२५	७।३१
२०	६।७	६।२३	६।३८	६।५६	७।०७	७।१८	७।३३	७।५१	७।५८	८।०७	८।१७	८।२९	८।४२	२०	६।१०	६।१९	६।२७	६।३७	६।४१	६।४८	६।५५	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२८
२१	६।८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१८	७।३२	७।५०	७।५७	८।०६	८।१५	८।२७	८।४०	२१	६।१०	६।१८	६।२६	६।३६	६।४०	६।४७	६।५४	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२३	७।२६
२२	६।८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१७	७।३१	७।४९	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६	८।३८	२२	६।१०	६।१८	६।२६	६।३५	६।३९	६।४५	६।५२	७।००	७।०४	७।०८	७।१३	७।१७	७।२३
२३	६।८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१७	७।३०	७।४८	७।५४	८।०४	८।१३	८।२३	८।३६	२३	६।१०	६।१७	६।२५	६।३४	६।३८	६।४४	६।५१	६।५८	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२०
२४	६।८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१६	७।३०	७।४६	७।५३	८।०२	८।११	८।२२	८।३४	२४	६।१०	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४३	६।४९	६।५६	७।००	७।०३	७।०८	७।१२	७।१७
२५	६।९	६।२३	६।३७	६।५५	७।०४	७।१६	७।२९	७।४५	७।५२	८।००	८।१०	८।२०	८।३२	२५	६।१०	६।१६	६।२४	६।३२	६।३५	६।४१	६।४७	६।५४	६।५८	७।०१	७।०५	७।०९	७।१४
२६	६।९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०४	७।१५	७।२८	७।४३	७।५१	७।५९	८।०८	८।१९	८।३०	२६	६।१०	६।१६	६।२३	६।३१	६।३४	६।४०	६।४६	६।५२	६।५५	६।५९	७।०३	७।०७	७।११
२७	६।९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०३	७।१४	७।२७	७।४२	७।४९	७।५७	८।०६	८।१६	८।२८	२७	६।१०	६।१६	६।२२	६।३०	६।३३	६।३८	६।४४	६।५०	६।५३	६।५६	७।००	७।०४	७।०८
२८	६।९	६।२३	६।३७	६।५३	७।०३	७।१३	७।२६	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६।४२	६।४८	६।५१	६।५४	६।५७	७।०४	७।०५
२९	६।१०	६।२३	६।३७	६।५३	७।०२	७।१३	७।२५	७।४०	७।४७	७।५४	८।०३	८।१३	८।२४		।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
३०	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।१२	७।२४	७।३८	७।४५	७।५३	८।०१	८।११	८।२२		।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देखें।

उ	०°	उ१०°	उ२०°	उ३०°	उ३५°	उ४०°	उ४५°	उ५०°	उ५२°	उ५४°	उ५६°	उ५८°
मा.	६।१०९	६।११५	६।१२०	६।१२६	६।१३०	६।१३४	६।१३९	६।१४४	६।१४७	६।१५०	६।१५३	६।१५६
२	६।१०९	६।११४	६।११९	६।१२५	६।१२९	६।१३३	६।१३७	६।१४२	६।१४५	६।१४७	६।१५०	६।१५३
३	६।१०९	६।११४	६।११९	६।१२४	६।१२८	६।१३१	६।१३५	६।१४०	६।१४२	६।१४५	६।१४८	६।१५०
४	६।१०९	६।११३	६।११८	६।१२३	६।१२६	६।१३०	६।१३४	६।१३८	६।१४०	६।१४२	६।१४५	६।१४८
५	६।१०८	६।११३	६।११७	६।१२२	६।१२५	६।१२८	६।१३२	६।१३६	६।१३८	६।१४०	६।१४२	६।१४५
६	६।१०८	६।११२	६।११६	६।१२१	६।१२४	६।१२६	६।१३०	६।१३४	६।१३६	६।१३८	६।१४०	६।१४२
७	६।१०८	६।११२	६।११५	६।१२०	६।१२२	६।१२५	६।१२८	६।१३२	६।१३३	६।१३५	६।१३७	६।१४०
८	६।१०८	६।१११	६।११५	६।११९	६।१२१	६।१२३	६।१२७	६।१३०	६।१३१	६।१३३	६।१३५	६।१३७
९	६।१०७	६।१११	६।११४	६।११८	६।१२०	६।१२२	६।१२६	६।१२८	६।१२९	६।१३०	६।१३२	६।१३४
१०	६।१०७	६।११०	६।११३	६।११६	६।११८	६।१२०	६।१२४	६।१२५	६।१२७	६।१२८	६।१३०	६।१३१
११	६।१०७	६।११०	६।११२	६।११५	६।११७	६।११९	६।१२१	६।१२३	६।१२४	६।१२६	६।१२[illegible]	६।१२८
१२	६।१०७	६।१०९	६।१११	६।११४	६।११६	६।११७	६।११९	६।१२१	६।१२२	६।१२२	६।१२४	६।१२७
१३	६।१०६	६।१०८	६।११०	६।११३	६।११४	६।११६	६।११७	६।११९	६।१२०	६।१२१	६।१२२	६।१२३
१४	६।१०६	६।१०८	६।११०	६।११२	६।११३	६।११४	६।११५	६।११७	६।११७	६।११८	६।११९	६।१२०
१५	६।१०६	६।१०७	६।१०९	६।११०	६।१११	६।११२	६।११३	६।११५	६।११५	६।११६	६।११७	६।११७
१६	६।१०५	६।१०७	६।१०८	६।१०९	६।११०	६।१११	६।११२	६।११२	६।११३	६।११३	६।११४	६।११४
१७	६।१०५	६।१०६	६।१०७	६।१०८	६।१०९	६।१०९	६।११०	६।११०	६।१११	६।११२	६।११२	६।११२
१८	६।१०५	६।१०६	६।१०६	६।१०७	६।१०८	६।१०८	६।१०८	६।१०८	६।१०८	६।१०८	६।१०९	६।१०९
१९	६।१०५	६।१०५	६।१०५	६।१०६	६।१०६	६।१०६	६।१०६	६।१०६	६।१०६	६।१०६	६।१०६	६।१०६
२०	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०३	६।१०३	६।१०३
२१	६।१०४	६।१०४	६।१०४	६।१०३	६।१०२	६।१०२	६।१०२	६।१०२	६।१०१	६।१०१	६।१०१	६।१००
२२	६।१०४	६।१०३	६।१०३	६।१०२	६।१००	६।१००	५।१५९	५।१५९	५।१५९	५।१५८	५।१५८	५।१५८
२३	६।१०३	६।१०३	६।१०२	६।१०१	५।१५९	५।१५९	५।१५८	५।१५७	५।१५७	५।१५६	५।१५५	५।१५५
२४	६।१०३	६।१०२	६।१०१	६।१००	५।१५८	५।१५८	५।१५७	५।१५५	५।१५४	५।१५३	५।१५३	५।१५२
२५	६।१०३	६।१०२	६।१००	५।१५८	५।१५६	५।१५६	५।१५५	५।१५३	५।१५२	५।१५१	५।१५१	५।१४९
२६	६।१०२	६।१०१	५।१५९	५।१५७	५।१५५	५।१५५	५।१५३	५।१५१	५।१५०	५।१४९	५।१४७	५।१४६
२७	६।१०२	६।१००	५।१५८	५।१५६	५।१५३	५।१५३	५।१५१	५।१४८	५।१४७	५।१४६	५।१४५	५।१४३
२८	६।१०२	५।१५९	५।१५७	५।१५५	५।१५१	५।१५१	५।१४९	५।१४६	५।१४५	५।१४४	५।१४२	५।१४०
२९	६।१०२	५।१५९	५।१५७	५।१५३	५।१५०	५।१५०	५।१४७	५।१४४	५।१४३	५।१४१	५।१३९	५।१३८
३०	६।१०१	५।१५९	५।१५६	५।१५२	५।१४७	५।१४८	५।१४५	५।१४२	५।१४१	५।१३८	५।१३७	५।१३५
३१	६।१०१	५।१५८	५।१५५	५।१५१	५।१४६	५।१४६	५।१४३	५।१४२	५।१३९	५।१३४	५।१३४	५।१३२

अं	०°	उ१०°	उ२०°	उ३०°	उ३५°	उ४०°	उ४५°	उ५०°	उ५२°	उ५४°	उ५६°	उ५८°
अप्रै	६।१०१	५।१५८	५।१५५	५।१५०	५।१४८	५।१४५	५।१४२	५।१३८	५।१३६	५।१३४	५।१३३	५।१२९
२	६।१००	५।१५७	५।१५३	५।१४९	५।१४६	५।१४३	५।१४०	५।१३६	५।१३४	५।१३१	५।१२९	५।१२६
३	६।१००	५।१५६	५।१५२	५।१४७	५।१४४	५।१४२	५।१३८	५।१३३	५।१३१	५।१२९	५।१२६	५।१२४
४	५।१००	५।१५६	५।१५१	५।१४६	५।१४३	५।१४०	५।१३६	५।१३१	५।१२९	५।१२६	५।१२४	५।१२१
५	५।१५९	५।१५५	५।१५१	५।१४५	५।१४२	५।१३८	५।१३४	५।१२९	५।१२७	५।१२४	५।१२१	५।११९
६	५।१५९	५।१५५	५।१५०	५।१४४	५।१४१	५।१३७	५।१३२	५।१२७	५।१२६	५।१२२	५।११९	५।११५
७	५।१५९	५।१५४	५।१४९	५।१४२	५।१३९	५।१३५	५।१३०	५।१२५	५।१२२	५।११९	५।११६	५।११२
८	५।१५९	५।१५४	५।१४८	५।१४२	५।१३८	५।१३४	५।१२९	५।१२३	५।११९	५।११७	५।११३	५।११०
९	५।१५८	५।१५३	५।१४७	५।१४०	५।१३७	५।१३२	५।१२७	५।१२०	५।११६	५।११४	५।१११	५।१०७
१०	५।१५८	५।१५२	५।१४६	५।१३९	५।१३५	५।१३१	५।१२५	५।११८	५।११४	५।११२	५।१०८	५।१०४
११	५।१५८	५।१५२	५।१४५	५।१३८	५।१३४	५।१२९	५।१२३	५।११६	५।११३	५।११०	५।१०६	५।१०१
१२	५।१५७	५।१५१	५।१४५	५।१३७	५।१३३	५।१२८	५।१२१	५।११५	५।१११	५।१०७	५।१००	४।१५८
१३	५।१५७	५।१५१	५।१४४	५।१३५	५।१३१	५।१२६	५।१२०	५।११२	५।१०९	५।१०४	५।१०८	४।१५६
१४	५।१५७	५।१५०	५।१४३	५।१३५	५।१३०	५।१२५	५।११८	५।११०	५।१०६	५।१०२	४।१५५	४।१५३
१५	५।१५७	५।१५०	५।१४२	५।१३४	५।१२९	५।१२३	५।११६	५।१०८	५।१०४	५।१००	४।१५३	४।१५०
१६	५।१५६	५।१४९	५।१४१	५।१३३	५।१२७	५।१२१	५।११४	५।१०६	५।१०२	४।१५८	४।१५०	४।१४७
१७	५।१५६	५।१४९	५।१४१	५।१३१	५।१२६	५।१२०	५।११३	५।१०४	५।१००	४।१५५	४।१४८	४।१४४
१८	५।१५६	५।१४८	५।१४०	५।१३०	५।१२१	५।११८	५।११२	५।१०२	४।१५८	४।१५३	४।१४५	४।१४२
१९	५।१५६	५।१४८	५।१३९	५।१२९	५।१२४	५।११७	५।१०९	५।१००	४।१५६	४।१५१	४।१४३	४।१४०
२०	५।१५६	५।१४७	५।१३९	५।१२८	५।१२२	५।११६	५।१०८	४।१५८	४।१५३	४।१४८	४।१४०	४।१३७
२१	५।१५५	५।१४७	५।१३८	५।१२७	५।१२१	५।११५	५।१०५	४।१५६	४।१५१	४।१४६	४।१३९	४।१३४
२२	५।१५५	५।१४६	५।१३७	५।१२६	५।१२०	५।११३	५।१०४	४।१५४	४।१४९	४।१४४	४।१३६	४।१३१
२३	५।१५५	५।१४६	५।१३६	५।१२५	५।११९	५।१११	५।१०२	४।१५२	४।१४७	४।१४२	४।१३३	४।१२९
२४	५।१५५	५।१४५	५।१३६	५।१२४	५।११७	५।११०	५।१०१	४।१५०	४।१४५	४।१३९	४।१३०	४।१२६
२५	५।१५५	५।१४५	५।१३५	५।१२३	५।११६	५।१०९	४।१५९	४।१४८	४।१४३	४।१३७	४।१२८	४।१२४
२६	५।१५४	५।१४५	५।१३४	५।१२२	५।११४	५।१०८	४।१५८	४।१४६	४।१४१	४।१३५	४।१२५	४।१२१
२७	५।१५४	५।१४४	५।१३४	५।१२३	५।११४	५।१०५	४।१५६	४।१४५	४।१३९	४।१३३	४।१२३	४।११८
२८	५।१५४	५।१४४	५।१३३	५।१२३	५।११३	५।१०४	४।१५५	४।१४२	४।१३७	४।१३१	४।१२०	४।११६
२९	५।१५४	५।१४४	५।१३२	५।११९	५।११२	५।१०३	४।१५३	४।१४१	४।१३५	४।१२९	४।१२	४।११३
३०	५।१५४	५।१४३	५।१३२	५।११८	५।१११	५।१०२	४।१५१	४।१३३	४।१३३	४।१२६	४।११९	४।१११
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

सूर्य उदय ज्ञान :—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इस में अभीष्ट स्थान के रेखान्तर स्टैण्डर्ड टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट स्थान का स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आयेगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देखें।

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
मई १	५।५४	५।४३	५।३१	५।१८	५।१०	५।००	४।५०	४।३६	४।३१	४।२४	४।१७	४।०८
२	५।५४	५।४२	५।३०	५।१६	५।०९	४।५९	४।४८	४।३५	४।२९	४।२२	४।१४	४।०६
३	५।५३	५।४२	५।३०	५।१६	५।०८	४।५८	४।४७	४।३४	४।२७	४।२०	४।१२	४।०४
४	५।५३	५।४२	५।२९	५।१५	५।०७	४।५७	४।४५	४।३२	४।२५	४।१८	४।१०	४।०१
५	५।५३	५।४१	५।२९	५।१४	५।०६	४।५६	४।४४	४।३०	४।२४	४।१६	४।०८	३।५९
६	५।५३	५।४१	५।२८	५।१३	५।०५	४।५४	४।४३	४।२८	४।२२	४।१४	४।०६	३।५६
७	५।५३	।।४१	५।२८	५।१२	५।०४	४।५३	४।४१	४।२७	४।२०	४।१२	४।०४	३।५४
८	५।५३	५।४०	५।२७	५।१२	५।०३	४।५२	४।४०	४।२५	४।१८	४।१०	४।०१	३।५२
९	५।५३	५।४०	२।२७	५।११	५।०२	४।५१	४।३९	४।२३	४।१६	४।०८	३।५८	३।४९
१०	५।५३	५।४०	५।२६	५।११	५।०१	४।५०	४।३७	४।२२	४।१५	४।०६	३।५७	३।४७
११	५।५३	५।४०	५।२६	५।०९	५।००	४।४९	४।३६	४।२०	४।१३	४।०५	३।५५	३।४५
१२	५।५३	५।४०	५।२५	५।०९	४।५९	४।४८	४।३५	४।१९	४।११	४।०३	३।५३	३।४३
१३	५।५३	५।३९	५।२५	५।०८	४।५८	४।४७	४।३४	४।१७	४।१०	४।०१	३।५१	३।४०
१४	५।५३	५।३९	५।२४	५।०७	४।५७	४।४६	४।३२	४।१६	४।०८	३।५९	३।५०	३।३८
१५	५।५३	५।३९	५।२४	५।०७	४।५७	४।४५	४।३१	४।१४	४।०[illegible]	३।५८	३।४८	३।३६
१६	५।५३	५।३९	५।२४	५।०६	४।५६	४।४४	४।३०	४।१३	४।०५	३।५६	३।४६	३।३४
१७	५।५३	५।३९	५।२३	५।०६	४।५५	४।४३	४।२९	४।१२	४।०३	३।५४	३।४४	३।३२
१८	५।५३	५।३८	५।२३	५।०५	४।५४	४।४२	४।२८	४।१०	४।०२	३।५३	३।४२	३।३०
१९	५।५३	५।३८	५।२३	५।०४	४।५४	४।४२	४।२७	४।०९	४।०१	३।५१	३।४०	३।२८
२०	५।५३	५।३८	५।२२	५।०४	४।५३	४।४१	४।२६	४।०८	३।५९	३।५०	३।३९	३।२६
२१	५।५३	५।३८	५।२२	५।०३	४।५२	४।४०	४।२५	४।०७	३।५८	३।४८	३।३७	३।२४
२२	५।५३	५।३८	५।२२	५।०३	४।५२	४।३९	४।२४	४।०६	३।५७	३।४७	३।३६	३।२३
२३	५।५३	५।३८	५।२१	५।०२	४।५१	४।३८	४।२३	४।०४	३।५५	३।४५	३।३४	३।२१
२४	५।५३	५।३८	५।२१	५।०२	४।५१	४।३८	४।२२	४।०३	३।५४	३।४४	३।३२	३।१९
२५	५।५३	५।३८	५।२१	५।०२	४।५०	४।३७	४।२१	४।०२	३।५३	३।४३	३।३१	३।१७
२६	५।५३	५।३८	५।२१	५।०१	४।५०	४।३६	४।२१	४।०१	३।५२	३।४२	३।३०	३।१६
२७	५।५३	५।३८	५।२१	५।०१	४।४९	४।३६	४।२०	४।००	३।५१	३।४०	३।२८	३।१४
२८	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४९	४।३५	४।१९	३।५९	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३
२९	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४८	४।३५	४।१८	३।५८	३।४९	३।३८	३।२६	३।११
३०	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४८	४।३४	४।१८	३।५८	३।४८	३।३७	३।२४	३।१०
३१	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४८	४।३४	४।१७	३।५७	३।४७	३।३६	३।२३	३।०८

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
जून १	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३३	४।१७	३।५६	३।४६	३।३५	३।२२	३।०७
२	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३३	४।१६	३।५५	३।४५	३।३४	३।२१	३।०६
३	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३२	४।१६	३।५५	३।४४	३।३३	३।२०	३।०५
४	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४६	४।३२	४।१५	३।५४	३।४४	३।३२	३।१९	३।०४
५	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३२	४।१५	३।५३	३।४४	३।३२	३।१९	३।०३
६	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५३	३।४३	३।३१	३।१७	३।०२
७	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५२	३।४२	३।३०	३।१७	३।०१
८	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५२	३।४२	३।३०	३।१६	३।००
९	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३१	४।१३	३।५१	३।४१	३।२९	३।१५	२।५९
१०	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३१	४।१३	३।५१	३।४१	३।२९	३।१५	२।५८
११	५।५६	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५१	३।४०	३।२८	३।१४	२।५८
१२	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२८	३।१४	२।५७
१३	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७
१४	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२७	३।१३	२।५६
१५	५।५७	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१६	५।५७	५।३९	५।२०	४।५९	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१७	५।५७	५।३९	५।२०	४।५९	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१८	५।५७	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३०	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१९	५।५७	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७
२०	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७
२१	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७
२२	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५१	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७
२३	५।५८	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३१	४।१३	३।५१	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७
२४	५।५८	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३२	४।१४	३।५१	३।४१	३।२८	३।१४	२।५७
२५	५।५९	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३२	४।१४	३।५२	३।४१	३।२८	३।१४	२।५७
२६	५।५९	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३२	४।१४	३।५२	३।४१	३।२९	३।१४	२।५८
२७	५।५९	५।४२	५।२३	५।०१	४।४८	४।३३	४।१५	३।५३	३।४१	३।२९	३।१५	२।५८
२८	५।५९	५।४२	५।२३	५।०१	४।४८	४।३३	४।१५	३।५३	३।४२	३।३०	३।१६	२।५८
२९	५।५९	५।४२	५।२३	५।०१	४।४८	४।३४	४।१६	३।५४	३।४२	३।३०	३।१६	३।००
३०	५।५९	५।४२	५।२३	५।०२	४।४९	४।३४	४।१६	३।५४	३।४३	३।३१	३।१७	३।००
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर स्टैण्डर्ड टाईम को युक्त-(१३)
वियुक्त करने से अभीष्ट स्थान का स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देख।

अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
जु०	६।००	५।४२	५।२४	५।००	४।४९	४।३४	४।१७	३।५४	३।४४	३।३२	३।१८	३।०१
२	६।००	५।४३	५।२४	५।०२	४।५०	४।३५	४।१७	३।५५	३।४४	३।३२	३।१९	३।०२
३	६।००	५।४३	५।२४	५।०३	४।५०	४।३५	४।१८	३।५६	३।४५	३।३३	३।२०	३।०३
४	६।००	५।४३	५।२५	५।०३	४।५१	४।३६	४।१८	३।५७	३।४६	३।३४	३।२०	३।०४
५	६।०१	५।४४	५।२५	५।०४	४।५१	४।३७	४।१९	३।५८	३।४७	३।३५	३।२१	३।०६
६	६।०१	५।४४	५।२५	५।०४	४।५१	४।३७	४।२०	३।५९	३।४८	३।३६	३।२२	३।०७
७	६।०१	५।४४	५।२६	५।०५	४।५२	४।३८	४।२०	४।००	३।४९	३।३७	३।२४	३।०८
८	६।०१	५।४४	५।२६	५।०५	४।५३	४।३८	४।२१	४।०१	३।५०	३।३८	३।२५	३।०९
९	६।०१	५।४५	५।२७	५।०६	४।५३	४।३९	४।२२	४।०२	३।५१	३।३९	३।२६	३।११
१०	६।०१	५।४५	५।२७	५।०६	४।५४	४।४०	४।२३	४।०३	३।५२	३।४०	३।२७	३।१३
११	६।०२	५।४५	५।२७	५।०७	४।५४	४।४०	४।२४	४।०४	३।५३	३।४१	३।२८	३।१५
१२	६।०२	५।४५	५।२८	५।०७	४।५५	४।४१	४।२४	४।०५	३।५४	३।४१	३।३०	३।१६
१३	६।०२	५।४६	५।२८	५।०८	४।५६	४।४२	४।२५	४।०६	३।५५	३।४४	३।३१	३।१८
१४	६।०२	५।४६	५।२८	५।०८	४।५६	४।४२	४।२६	४।०७	३।५६	३।४५	३।३३	३।२०
१५	६।०२	५।४६	५।२९	५।०९	४।५७	४।४३	४।२७	४।०८	३।५७	३।४६	३।३४	३।२१
१६	६।०२	५।४६	५।२९	५।०९	४।५७	४।४४	४।२८	४।०९	३।५८	३।४८	३।३६	३।२३
१७	६।०२	५।४७	५।२९	५।१०	४।५८	४।४५	४।२९	४।१०	४।००	३।४९	३।३७	३।२५
१८	६।०२	५।४७	५।३०	५।१०	४।५९	४।४५	४।३०	४।११	४।०१	३।५०	३।३९	३।२६
१९	६।०३	५।४७	५।३०	५।११	४।५९	४।४६	४।३१	४।१२	४।०२	३।५२	३।४०	३।२७
२०	६।०३	५।४७	५।३१	५।११	५।००	४।४७	४।३२	४।१३	४।०३	३।५३	३।४२	३।२८
२१	६।०३	५।४७	५।३१	५।१२	५।०१	४।४८	४।३३	४।१४	४।०५	३।५५	३।४३	३।३०
२२	६।०३	५।४७	५।३१	५।१३	५।०२	४।४९	४।३४	४।१५	४।०६	३।५६	३।४५	३।३२
२३	६।०३	५।४७	५।३२	५।१३	५।०२	४।५०	४।३५	४।१६	४।०८	३।५९	३।४७	३।३४
२४	६।०३	५।४८	५।३२	५।१४	५।०३	४।५१	४।३६	४।१८	४।०९	३।५९	६।४८	३।३६
२५	६।०३	५।४८	५।३२	५।१४	५।०४	४।५१	४।३७	४।१९	४।१०	४।०१	३।५०	३।३८
२६	६।०३	५।४८	५।३३	५।१५	५।०४	४।५२	४।३८	४।२०	४।१२	४।०३	३।५२	३।४०
२७	६।०३	५।४८	५।३३	५।१५	५।०५	४।५३	४।३९	४।२२	४।१३	४।०४	३।५४	३।४२
२८	६।०३	५।४८	५।३४	५।१६	५।०६	४।५४	४।४०	४।२३	४।१५	४।०६	३।५५	३।४४
२९	६।०३	५।४९	५।३४	५।१७	५।०७	४।५५	४।४१	४।२५	४।१७	४।०८	३।५६	३।४६
३०	६।०३	५।४९	५।३४	५।१७	५।०७	४।५६	४।४२	४।२६	४।१८	४।०९	३।५९	३।४८
३१	६।०३	५।४९	५।३५	५।१७	५।०८	४।५७	४।४३	४।२७	४।१९	४।११	४।०१	३।५०

अ०	०°	१०°	२०°	३०.३५°		४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
अग	६।०३	५।४९	५।३५	५।१८	५।०९	४।५८	४।४५	४।२८	४।२१	४।१२	४।०३	३।५२
२	६।०३	५।५०	५।३५	५।१९	५।०९	४।५९	४।४६	४।३०	४।२२	४।१४	४।०५	३।५४
३	६।०३	५।५०	५।३६	५।२०	५।१०	५।००	४।४७	४।३१	४।२४	४।१६	४।०७	३।५६
४	६।०२	५।५०	५।३६	५।२०	५।११	५।००	४।४८	४।३३	४।२५	४।१७	४।०८	३।५८
५	६।०२	५।५०	५।३६	५।२१	५।१२	५।०१	४।४९	४।३४	४।२६	४।१९	४।१०	४।००
६	६।०२	५।५०	५।३६	५।२२	५।१२	५।०२	४।५०	४।३६	४।२८	४।२१	४।११	४।०३
७	६।०२	५।५०	५।३७	५।२३	५।१३	५।०३	४।५१	४।३७	४।३०	४।२३	४।१४	४।०५
८	६।०२	५।५०	५।३७	५।२३	५।१४	५।०४	·।५३	४।३८	४।३२	४।२४	४।१६	४।०७
९	६।०२	५।५०	५।३८	५।२४	५।१५	५।०५	४।५४	४।४०	४।३३	४।२६	४।१८	४।०९
१०	६।०२	५।५०	५।३८	५।२५	५।१६	५।०६	४।५५	४।४२	४।३५	४।२८	४।२०	४।११
११	६।०१	५।५१	५।३८	५।२५	५।१६	५।०७	४।५६	४।४३	४।३७	४।३०	४।२२	४।१३
१२	६।०१	५।५१	५।३९	५।२६	५।१७	५।०८	४।५७	४।४४	४।३८	४।३२	४।२४	४।१५
१३	६।०१	५।५१	५।३९	५।२६	५।१८	५।०९	४।५९	४।४६	४।४०	४।३३	४।२६	४।१८
१४	६।०१	५।५१	५।३९	५।२७	५।१९	५।१०	५।००	४।४७	४।४२	४।३५	४।२८	४।२०
१५	६।०१	५।५१	५।४०	५।२८	५।१९	५।११	५।०१	४।४९	४।४३	४।३७	४।३०	४।२२
१६	६।०१	५।५१	५।४०	५।२८	५।२०	५।१२	५।०२	४।५०	४।४५	४।३९	४।३२	४।२४
१७	६।०१	५।५१	५।४०	५।२९	५।२१	५।१३	५।०३	४।५२	४।४६	४।४०	४।३४	४।२६
१८	६।००	५।५१	५।४१	५।२९	५।२२	५।१४	५।०४	४।५३	४।४८	४।४२	४।३६	४।२९
१९	६।००	५।५१	५।४१	५।३०	५।२२	५।१५	५।०६	४।५५	४।५०	४।४४	४।३८	४।३१
२०	६।००	५।५१	५।४१	५।३०	५।२३	५।१६	५।०७	४।५६	४।५१	४।४६	४।४०	४।३३
२१	६।००	५।५१	५।४१	५।३१	५।२४	५।१७	५।०८	४।५८	४।५३	४।४८	४।४२	४।३५
२२	६।५९	५।५१	५।४२	५।३२	५।२५	५।१८	५।०९	४।५९	४।५५	४।४९	४।४४	४।३७
२३	५।५९	५।५१	५।४२	५।३२	५।२५	५।१९	५।१०	५।०१	४।५६	४।५१	४।४६	४।३९
२४	५।५९	५।५१	५।४२	५।३३	५।२६	५।१९	५।१२	५।०२	४।५८	४।५३	४।४७	४।४१
२५	५।५९	५।५१	५।४२	५।३३	५।२७	५।२०	५।१३	५।०४	४।५९	४।५५	४।४९	४।४४
२६	५।५८	५।५१	५।४३	५।३४	५।२८	५।२१	५।१४	५।०५	५।०१	४।५७	४।५१	४।४५
२७	५।५८	५।५१	५।४३	५।३४	५।२८	५।२२	५।१५	५।०७	५।०३	४।५८	४।५३	४।४८
२८	५।५८	५।५१	५।४३	५।३५	५।२९	५।२३	५।१६	५।०८	५।०४	५।००	४।५५	४।५०
२९	५।५८	५।५१	५।४३	५।३५	५।३०	५।२४	५।१८	५।०९	५।०६	५।०२	४।५७	४।५२
३०	५।५७	५।५१	५।४४	५।३६	५।३१	५।२५	५।१९	५।११	५।०८	५।०४	४।५९	४।५४
४१	५।५७	५।५१	५।४४	५।३६	५।३१	५।२६	५।२०	५।१३	५।०९	५।०५	५।०१	४।५७

सूर्य उदय ज्ञान — नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल [स्वदशीय] समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इस मे अभीष्ट स्थान के रेखान्तर स्टैंडर्ड टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट स्थान का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय काल निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देखें।

अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
सि.	५।५७	५।५१	५।४४	५।२७	५।२२	५।२८	५।२१	५।१६	५।११	५।०७	५।०२	४।५९
२	५।५६	५।५१	५।४४	५।३७	५।३३	५।२८	५।२२	५।१५	५।१२	५।०९	५।०५	५।०१
३	५।५६	५।५१	५।४५	५।३८	५।३४	५।२९	५।२४	५।१६	५।१४	५।११	५।०७	५।०३
४	५।५६	५।५०	५।४५	५।३८	५।३४	५।३०	५।२५	५।१९	५।१६	५।१३	५।०९	५।०५
५	५।५५	५।५०	५।४५	५।३९	५।३५	५।३१	५।२६	५।२०	५।१७	५।१४	५।११	५।०७
६	५।५५	५।५०	५।४५	५।३९	५।३६	५।३२	५।२७	५।२-	५।१९	५।१६	५।१३	५।०९
७	५।५५	५।५०	५।४६	५।४०	५।३७	५।३३	५।२८	५।२३	५।२१	५।१८	५।१५	५।१२
८	५।५४	५।५०	५।४६	५।४०	५।३७	५।३४	५।३०	५।२४	५।२२	५।२०	५।१७	५।१४
९	५।५४	५।५०	५।४६	५।४१	५।३८	५।३५	५।३१	५।२६	५।२४	५।२२	५।१९	५।१६
१०	५।५४	५।५०	५।४६	५।४२	५।३९	५।३६	५।३२	५।२८	५।२६	५।२३	५।२१	५।१८
११	५।५३	५।५०	५।४६	५।४२	५।३९	५।३७	५।३३	५।२९	५।२७	५।२५	५।२३	५।२०
१२	५।५३	५।५०	५।४७	५।४३	५।४०	५।३८	५।३४	५।३१	५।२९	५।२७	५।२५	५।२२
१३	५।५३	५।५०	५।४७	५।४३	५।४१	५।३८	५।३५	५।३२	५।३०	५।२९	५।२७	५।२४
१४	५।५२	५।५०	५।४७	५।४४	५।४२	५।३९	५।३७	५।३३	५।३२	५।३०	५।२९	५।२७
१५	५।५२	५।५०	५।४७	५।४४	५।४२	५।४०	५।३८	५।३५	५।३४	५।३२	५।३१	५।२९
१६	५।५२	५।५०	५।४७	५।४५	५।४३	५।४१	५।३९	५।३६	५।३५	५।३४	५।३३	५।३१
१७	५।५१	५।५०	५।४८	५।४५	५।४४	५।४२	५।४०	५।३८	५।३७	५।३६	५।३५	५।३३
१८	५।५१	५।५०	५।४८	५।४६	५।४५	५।४३	५।४२	५।३९	५।३९	५।३८	५।३६	५।३५
१९	५।५१	५।४९	५।४८	५।४६	५।४५	५।४४	५।४३	५।४१	५।४१	५।४०	५।३८	५।३७
२०	५।५०	५।४९	५।४८	५।४७	५।४६	५।४५	५।४४	५।४३	५।४२	५।४१	५।४०	५।३९
२१	५।५०	५।४९	५।४८	५।४७	५।४७	५।४६	५।४५	५।४४	५।४४	५।४३	५।४२	५।४२
२२	५।५०	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४७	५।४६	५।४६	५।४५	५।४५	५।४४	५।४४
२३	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४८	५।४७	५।४७	५।४७	५।४६	५।४६
२४	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४८	५।४८
२५	५।४८	५।४९	५।४९	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०
२६	५।४८	५।४९	५।५०	५।५०	५।५०	५।५१	५।५१	५।५२	५।५२	५।५२	५।५२	५।५२
२७	५।४८	५।४९	५।५०	५।५१	५।५१	५।५२	५।५२	५।५३	५।५३	५।५४	५।५४	५।५५
२८	५।४७	५।४९	५।५०	५।५१	५।५२	५।५३	५।५४	५।५५	५।५५	५।५६	५।५६	५।५७
२९	५।४७	५।४९	५।५१	५।५२	५।५३	५।५४	५।५५	५।५७	५।५७	५।५७	५।५८	५।५९
३०	५।४७	५।४९	५।५१	५।५३	५।५४	५।५५	५।५६	५।५८	५।५८	५।५९	६।००	६।०१
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
अक	५।४६	५।४९	५।५१	५।५३	५।५४	५।५६	५।५७	५।५९	६।००	६।०१	६।०२	६।०३
२	५।४६	५।४९	५।५१	५।५४	५।५५	५।५७	५।५९	६।०१	६।०२	६।०३	६।०४	६।०५
३	५।४६	५।४९	५।५१	५।५४	५।५६	५।५८	६।००	६।०२	६।०३	६।०५	६।०६	६।०८
४	५।४६	५।४८	५।५२	५।५५	५।५७	५।५९	६।०१	६।०४	६।०५	६।०७	६।०८	६।१०
५	५।४६	५।४८	५।५२	५।५५	५।५७	६।००	६।०२	६।०६	६।०७	६।०८	६।१०	६।१२
६	५।४६	५।४८	५।५२	५।५६	५।५८	६।०१	६।०४	६।०७	६।०८	६।१०	६।१२	६।१४
७	५।४६	५।४८	५।५२	५।५७	५।५९	६।०२	६।०५	६।०९	६।१०	६।१२	६।१४	६।१६
८	५।४५	५।४८	५।५३	५।५७	६।००	६।०३	६।०६	६।१०	६।१२	६।१३	६।१६	६।१८
९	५।४५	५।४८	५।५३	५।५८	६।०१	६।०४	६।०७	६।१२	६।१४	६।१६	६।१८	६।२१
१०	५।४५	५।४८	५।५३	५।५८	६।०१	६।०५	६।०९	६।१३	६।१५	६।१८	६।२०	६।२३
११	५।४४	५।४८	५।५३	५।५९	६।०२	६।०६	६।१०	६।१५	६।१७	६।२०	६।२२	६।२५
१२	५।४४	५।४८	५।५४	६।००	६।०३	६।०७	६।११	६।१७	६।१९	६।२१	६।२४	६।२७
१३	५।४४	५।४८	५।५४	६।००	६।०४	६।०८	६।१२	६।१८	६।२१	६।२३	६।२६	६।३०
१४	५।४३	५।४९	५।५४	६।०१	६।०५	६।०९	६।१३	६।२०	६।२२	६।२५	६।२८	६।३३
१५	५।४३	५।४९	५।५५	६।०२	६।०६	६।१०	६।१५	६।२१	६।२४	६।२७	६।३०	६।३४
१६	५।४३	५।४९	५।५५	६।०२	६।०६	६।११	६।१६	६।२३	६।२६	६।२९	६।३२	६।३६
१७	५।४२	५।४९	५।५५	६।०३	६।०७	६।१२	६।१८	६।२४	६।२८	६।३१	६।३५	६।३९
१८	५।४२	५।४९	५।५६	६।०४	६।०८	६।१३	६।१९	६।२६	६।२९	६।३३	६।३७	६।४१
१९	५।४२	५।४९	५।५६	६।०४	६।०९	६।१४	६।२०	६।२८	६।३१	६।३५	६।३९	६।४३
२०	५।४२	५।४९	५।५६	६।०५	६।१०	६।१५	६।२२	६।२९	६।३३	६।३७	६।४१	६।४५
२१	५।४२	५।४९	५।५७	६।०६	६।११	६।१६	६।२३	६।३१	६।३५	६।३९	६।४३	६।४८
२२	५।४२	५।४९	५।५७	६।०६	६।१२	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४०	६।४५	६।५०
२३	५।४१	५।४९	५।५८	६।०७	६।१२	६।१८	६।२६	६।३५	६।३८	६।४२	६।४७	६।५२
२४	५।४१	५।४९	५।५८	६।०८	६।१३	६।१९	६।२७	६।३६	६।४०	६।४४	६।४९	६।५५
२५	५।४१	५।४९	५।५८	६।०८	६।१४	६।२०	६।२८	६।३८	६।४२	६।४६	६।५१	६।५७
२६	५।४१	५।४९	५।५९	६।०९	६।१५	६।२१	६।३०	६।३९	६।४३	६।४८	६।५३	६।५९
२७	५।४१	५।५०	५।५९	६।१०	६।१६	६।२२	६।३१	६।४२	६।४६	६।५०	६।५६	७।०२
२८	५।४१	५।५०	६।००	६।११	६।१७	६।२३	६।३३	६।४३	६।४७	६।५२	६।५८	७।०४
२९	५।४०	५।५०	६।००	६।११	६।१८	६।२४	६।३४	६।४५	६।४९	६।५४	७।०१	७।०६
३०	५।४०	५।५०	६।००	६।१२	६।१९	६।२५	६।३५	६।४६	६।५०	६।५६	७।०२	७।०९
३१	५।४०	५।५०	६।००	६।१३	६।२०	६।२७	६।३७	६।४७	६।५२	६।५८	७।०४	७।११

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशो का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इसमें अभीष्ट स्थान के रेखांतर स्टैंडर्ड टाईम को युक्त वियुक्त करने से उस अक्षांश का स्टैंडर्ड टाइम सूर्योदयकाल निकल आएगा। परा विवरण पृष्ठ १ पर देखें।

परा विवरण पृष्ठ १ पर देखें।

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
नव	५।४०	५।५१	६।०१	६।१४	६।२१	६।२९	६।३८	६।४९	६।५५	७।००	७।०६	७।१३
२	५।४०	५।५१	६।०२	६।१४	६।२२	६।३०	६।३९	६।५१	६।५६	७।०२	७।०८	७।१५
३	५।४०	५।५१	६।०२	६।१५	६।२[illegible]	६।३१	६।४१	६।५२	६।५८	७।०४	७।१०	७।१८
४	५।४०	५।५१	६।०३	६।१६	६।२३	६।३२	६।४२	६।५४	७।००	७।०६	७।१२	७।२०
५	५।४०	५।५१	६।०३	६।१७	६।२४	६।३३	६।४३	६।५६	७।०१	७।०८	७।१५	७।२३
६	५।४०	५।५२	६।०४	६।१८	६।२५	६।३४	६।४५	६।५७	७।०३	७।१०	७।१७	७।२५
७	५।४०	५।५२	६।०४	६।१८	६।२६	६।३६	६।४६	६।५९	७।०५	७।१२	७।१९	७।२७
८	५।४०	५।५२	६।०५	६।१९	६।२७	६।३७	६।४८	७।०१	७।०७	७।१४	७।२१	७।३०
९	५।४१	५।५३	६।०५	६।२०	६।२८	६।३८	६।४९	७।०२	७।०९	७।१५	७।२३	७।३२
१०	५।४१	५।५३	६।०६	६।२१	६।२९	६।३९	६।५०	७।०४	७।१०	७।१७	७।२६	७।३४
११	५।४१	५।५३	६।०७	६।२२	६।३०	६।४०	६।५२	७।०६	७।१२	७।१९	७।२७	७।३७
१२	५।४१	५।५४	६।०७	६।२२	६।३१	६।४१	६।५३	७।०७	७।१४	७।२१	७।३०	७।३९
१३	५।४१	५।५४	६।०८	६।२३	६।३२	६।४२	६।५४	७।०९	७।१६	७।२३	७।३२	७।४१
१४	५।४१	५।५४	६।०८	६।२४	६।३३	६।४४	६।५६	७।११	७।१८	७।२५	७।३४	७।४३
१५	५।४१	५।५५	६।०९	६।२५	६।३४	६।४५	६।५७	७।१२	७।१९	७।२७	७।३६	७।४६
१६	५।४१	५।५५	६।०९	६।२६	६।३५	६।४६	६।५९	७।१४	७।२१	७।२९	७।३८	७।४८
१७	५।४२	५।५५	६।१०	६।२७	६।३६	६।४७	७।००	७।१६	७।२३	७।३१	७।४०	७।५०
१८	५।४२	५।५६	६।११	६।२७	६।३७	६।४८	७।०१	७।१७	७।२५	७।३३	७।४२	७।५२
१९	५।४२	५।५६	६।११	६।२८	६।३८	६।४९	७।०३	७।१९	७।२६	७।३५	७।४४	७।५५
२०	५।४२	५।५७	६।१२	६।२९	६।३९	६।५१	७।०४	७।२०	७।२८	७।३६	७।४६	७।५७
२१	५।४२	५।५७	६।१२	६।३०	६।४०	६।५२	७।०५	७।२२	७।३०	७।३८	७।४८	७।५९
२२	५।४३	५।५८	६।१३	६।३१	६।४१	६।५३	७।०७	७।२३	७।३१	७।४०	७।५०	८।०१
२३	५।४३	५।५८	६।१४	६।३२	६।४२	६।५४	७।०८	७।२५	७।३३	७।४२	७।५२	८।०२
२४	५।४३	५।५८	६।१४	६।३२	६।४३	६।५५	७।०९	७।२६	७।३५	७।४४	७।५४	८।०५
२५	५।४३	५।५९	६।१५	६।३३	६।४४	६।५६	७।१०	७।२८	७।३६	७।४५	७।५६	८।०८
२६	५।४३	५।५९	६।१५	६।३४	६।४५	६।५७	७।१२	७।२९	७।३८	७।४७	७।५७	८।१०
२७	५।४४	६।००	६।१६	६।३५	६।४६	६।५८	७।१३	७।३१	७।३९	७।४९	७।५९	८।१२
२८	५।४४	६।००	६।१७	६।३६	६।४७	६।५९	७।१४	७।३२	७।४१	७।५०	८।०१	८।१४
२९	५।४५	६।०१	६।१७	६।३६	६।४८	७।००	७।१५	७।३४	७।४२	७।५२	८।०३	८।१५
३०	५।४५	६।०१	६।१८	६।३७	६।४८	७।०१	७।१७	७।३५	७।४४	७।५४	८।०५	८।१७

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
दि.	५।४५	६।०२	६।१९	६।३८	६।४९	७।०२	७।१८	७।३६	७।४५	७।५५	८।०६	८।१९
२	५।४६	६।०२	६।१९	६।३९	६।५०	७।०३	७।१९	७।३८	७।४७	७।५७	८।०८	८।२१
३	५।४६	६।०३	६।२०	६।४०	६।५१	७।०४	७।२०	७।३९	७।४८	७।५९	८।१०	८।२३
४	५।४७	६।०३	६।२१	६।४१	६।५२	७।०५	७।२१	७।४०	७।४९	८।०१	८।११	८।२५
५	५।४७	६।०४	६।२१	६।४१	६।५३	७।०६	७।२२	७।४१	७।५१	८।०२	८।१३	८।२६
६	५।४७	६।०४	६।२२	६।४२	६।५४	७।०७	७।२३	७।४३	७।५२	८।०४	८।१४	८।२८
७	५।४८	६।०५	६।२२	६।४३	६।५५	७।०८	७।२४	७।४४	७।५३	८।०५	८।१६	८।२९
८	५।४८	६।०५	६।२३	६।४४	६।५५	७।०९	७।२५	७।४५	७।५४	८।०६	८।१७	८।३०
९	५।४९	६।०६	६।२४	६।४४	६।५६	७।१०	७।२६	७।४६	७।५६	८।०७	८।१८	८।३१
१०	५।४९	६।०६	६।२४	६।४५	६।५७	७।११	७।२७	७।४७	७।५७	८।०९	८।२०	८।३२
११	५।५०	६।०७	६।२५	६।४६	६।५८	७।१२	७।२८	७।४८	७।५८	८।१०	८।२१	८।३४
१२	५।५०	६।०७	६।२५	६।४६	६।५८	७।१७	७।२९	७।४९	७।५९	८।११	८।२२	८।३५
१३	५।५१	६।०८	६।२६	६।४७	६।५९	७।१३	७।३०	७।५०	८।००	८।१२	८।२३	८।३६
१४	५।५१	६।०८	६।२७	६।४८	७।००	७।१४	७।३१	७।५१	८।०१	८।१३	८।२४	८।३८
१५	५।५२	६।०९	६।२७	६।४८	७।०१	७।१५	७।३१	७।५२	८।०२	८।१३	८।२५	८।३९
१६	५।५२	६।०९	६।२८	६।४९	७।०१	७।१५	७।३२	७।५३	८।०३	८।१४	८।२६	८।४०
१७	५।५२	६।१०	६।२८	६।५०	७।०२	७।१६	७।३३	७।५३	८।०३	८।१५	८।२७	८।४१
१८	५।५३	६।१०	६।२९	६।५०	७।०२	७।१७	७।३३	७।५४	८।०४	८।१६	८।२८	८।४२
१९	५।५३	६।११	६।२९	६।५१	७।०३	७।१७	७।३४	७।५५	८।०५	८।१६	८।२९	८।४३
२०	५।५४	६।११	६।३०	६।५१	७।०४	७।१८	७।३५	७।५५	८।०५	८।१७	८।३०	८।४३
२१	५।५४	६।१२	६।३०	६।५२	७।०४	७।१८	७।३५	७।५६	८।०६	८।१८	८।३१	८।४४
२२	५।५५	६।१३	६।३१	६।५२	७।०५	७।१९	७।३६	७।५६	८।०६	८।१८	८।३१	८।४५
२३	५।५५	६।१३	६।३१	६।५३	७।०५	७।१९	७।३६	७।५७	८।०७	८।१९	८।३१	८।४६
२४	५।५६	६।१३	६।३२	६।५३	७।०६	७।२०	७।३७	७।५७	८।०७	८।१९	८।३२	८।४६
२५	५।५६	६।१४	६।३२	६।५४	७।०६	७।२०	७।३७	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६
२६	५।५७	६।१४	६।३३	६।५४	७।०६	७।२१	७।३७	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६
२७	५।५७	६।१५	६।३३	६।५४	७।०७	७।२१	७।३८	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
२८	५।५८	६।१५	६।३४	६।५५	७।०७	७।२१	७।३८	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
२९	५।५८	६।१६	६।३४	६।५५	७।०७	७।२१	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
३०	५।५९	६।१६	६।३४	६।५६	७।०८	७।२२	७।६८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
३१	५।५९	६।१७	६।३४	६।५६	७।०८	७।२२	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७

सकल साधरणापयोगी प्रश्न चक्र

नीचे लिखे हुए इन सात चक्रों में विवाह सम्बन्धी, सन्तान आदि ७ प्रकार के प्रश्न कहे हैं जिस प्रश्न की कामना हो उस प्रश्न चक्र पर अपने दहिने हाथ की अनामिका ऊंगली किसी कोष्ठ पर रखें जिस कोष्टक में जो अंक और जो अक्षर होगा उसी प्रश्न फल चक्र में उतने अंक के उस अक्षर के आगे उस प्रश्न का फल लिखा होगा वह ही फल प्रश्नकर्त्ता को प्राप्त होगा। जैसे किसी ने विवाह चक्र के अक्षर ३ कोष्टक के ऊपर ऊंगली को रखा ता विवाह फल चक्र में ३ अंक के सामने उसका फल लिखा है तुम्हारा विवाह बहुत जल्दी होने वाला है सो यही फल प्रश्नकर्त्ता को मिलेगा। इसी तरह अन्य प्रश्नों में भी शुभाशुभ विचार जान लेना चाहिए।

विवाह परीक्षा चक्रम् (१)

ए	ऋ	ओ	क	ख	ग	अ	ई	उ	ऋ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

रोजगार परीक्षा चक्रम् (५)

छ	ज	झ	ठ	ट	ढ	ड	त	थ	च	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

सन्तान परीक्षा चक्रम् (२)

ऋ	ए	लृ	आ	क	ख	ग	अ	इ	उ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

व्यापार परीक्षा चक्रम् (६)

क	ख	अ	इ	ऊ	ऋ	ए	लृ	ओ		प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

रोग परीक्षा चक्रम (३)

ज	झ	उ	ट	ढ	ड	त	घ	च	छ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

नष्ट द्रव्य परीक्षा चक्रम् (७)

य	म	भ	प	थ	न	व	द	ब	फ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

विद्या परीक्षा चक्रम (४)

लृ	ओ	क	ख	ग	आ	इ	उ	ऋ	ए	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठक

विवाह विचार फलम् (१)—१ ए। तुम्हारे मकान के दक्षिण की ओर विवाह होगा देर है। २ ऋ। कुछ देर है विवाह मकान के दक्षिण दिशा में होगा। ३ ओ। विवाह बहुत जल्दी होने वाला है ऐसा जाना जाता है। ४क। मकान से पूर्व दिशा में विवाह होने वाला है। ५ख। विवाह तुम्हारा होगा परन्तु अभी देर से होगा। ६ग अभी विवाह नहीं होगा ऐसा जाना जाता है। ७अ। मकान के पूर्व दिशा में विवाह होने वाला है। ८ई। तुम्हारा विवाह मकान के उत्तर की ओर होगा। ९उ। विवाह मकान के उत्तर दिशा में कुछ देर से होगा। १ ऋ। तुम्हारा विवाह पश्चिम दिशा में जल्दी होगा।

सन्तान विचारफलम्(२)—१ऋ। तुम्हारे संतान होगी देरी है ईश्वर की ऐसी इच्छा है। २ए। कन्या होने का योग पाया जाता है जल्दी होगी। ३लृ। बहुत यत्न करने से कभी पुत्र की उत्पत्ति होगी। ४आ। कुछ समय के बाद आपके पुत्र उत्पन्न हो जावेगा ५क। तुम्हारे घर में शीघ्र कन्या उत्पन्न होने वाली है। ६ख। पुत्र प्राप्ति का योग है परन्तु कुछ अभी देरी है। ७ग। सुन्दर बालक होगा ऐसा जानने में आता है। ८अ। अभी तुम्हारे भाग्य में संतान नहीं है चिंता मत करो। ९इ। तीन संतान तुम्हारे घर में होंगी ऐसा योग है। १०उ। कन्या संतान होगी ऐसा योग प्रतीत होता है।

रोग विचारफलम्(३)—१ज पित्त के विकार से रोग हुआ है जल्दी ठीक होगा २झ नाड़ी में कफ का विकार है अच्छा हो जावेगा। ३उ गर्मी का विकार है भला होगा ऐसा निश्चय है। ४ट कफ विकार से बहुत कष्ट है आराम हो जावेगा। ५ढ पित्त के विकार से शरीर दूषित है भला हो जावेगा। ६ड वात और पित की व्याधि है कष्ट दूर होने वाला है ७त इडा नाम की नाडी में रोग हुआ है देरसे आराम होगा ८घो गर्मी और धातु का विकार है देर से भला होगा। ९च गर्मी अधिक होने से कष्ट है सो भला होगा। १०छ। शरीर में जो रोग है उसे देर से आराम होगा।

विद्या विचारफलम्(४)—१लृ बहुत परीश्रम करने से विद्या प्राप्त होगी। २ओ तुम्हारे भाग्य में विद्या बहुत है सफलता के योग है ऐसा योग। ३क जो विद्या पढ़ोगे वह ही जल्दी से आ जावेगी। ४ख विद्या बहुत फलदायक है इसको पढ़ते जावो। ५ग विद्या पढ़ो देर से इसका फल मिल जावेगा। ६आ विद्या नहीं आवेगी कोई और काम करो। ७इ विद्या पढ़ो अनेक प्रकार की विद्या प्राप्त होगी। ८उ विद्या भाग्य में नहीं है परिश्रम से प्राप्त होगी। ९ऋ विद्या कष्ट से प्राप्त होगी ऐसा योग है। १०ए। विद्या मध्यम दरजे की है ऐसा जाना जाता है।

रोजगार विचारफलम्(५)—१छ उद्यम करो रोजगार लग जावेगा कुछ देर है। २ज देर से रोजगार लगेगा भजन किया करो। ३झ रोजगार बहुत अच्छा लगेगा थोड़ीदेरहै। ४ठतुम्हारारोजगारबहुतअच्छा लग जावेगा। ५ट चिंतामतकरोकारोबार बनने वाला है। ६ढ। रोजगार अच्छा बनेगा कुछ विलम्ब से होगा। ७ड तुम्हारा रोजगार परदेश में होगा ऐसा लिखा है। ८त रोजगार हो कर बिगड गया है फिर हो जायेगा। ९थ तुम्हारा रोजगार नहीं लगेगा कुछ नुकसान होगा। १०च रोजगार लगने वाला है इसकी चिन्ता मत करो।

व्यापार परीक्षाफलम्(६)—१क तुम को मूल द्रव्य के व्यापार से लाभ होगा। २ख इस व्यापार से लाभ होगा चिन्ता मत करो। ३अ तुम को जीव वस्तु के व्यापार से लाभ होगा। ४अ व्यापार मत करो इसमें तुम्हारा धन नष्ट होगा। ५इ नप व्यापार करो इससे तुमको बहुत लाभ होगा। ६उ तुम व्यापार मत करो इससे नुकसान उठाओगे। ७ऋ तुम मन में व्यापार की इच्छा करते हो ठीक नहीं। ८ए। मूल और जीव वस्तु का व्यापार लाभकारी है। ९ल व्यापार करने से अपने धन का भी नुकसान है। १०ओ व्यापार करो निश्चय ही तुम को बहुत लाभ होगा।

नष्ट द्रव्यफलम्(७)—१य जो वस्तु खो गई है बड़े कष्ट से मिलेगी। २म। मूल सहित धातु खो गया है सो घर में है। ३भ जो द्रव्य धातु खो गया है मिलेगा चिन्ता नहीं। ४प जो द्रव्य धातु खो गया है कठिनता से मिलेगा। ५थ मकान के पश्चिम उत्तर में खोई हुई वस्तु मिलेगी। ६न यह गई वस्तु तुमको कठिनता से मिलेगी। ७व धातु द्रव्य खो गया है सो मित्र के पास है। ८द। तुम्हारी खोई हुई वस्तु देर से मिल जावेगी। ९फ धातु द्रव्य खो गया है खोजने से मिल जावेगा। १०व। मूल सहित धातु द्रव्य खो गया है घर में मिलेगा।

सम्पादक :—पन्नालाल शर्मा एम. ए.

मेष लग्न—कृश, भूरी आख, बाल अधिक, गोल चेहरा, सुन्दर, ऊष्ण प्रकृति, वात बिकार, कठोर भाषण, मन की अनिश्चित स्थिति, क्रोधी, छोटा कद, माता का मुख पूर्व की ओर, मकान पुराना, स्त्रियें १, ५ व ७ पास हों, माता का वस्त्र लाल रंग का हो, पहले मीठा भोजन किया हो और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

वृष लग्न—गौर वर्ण, स्थूल शरीर; काले नेत्र, निष्कपटी, स्थिर व शांत स्वभाव, गम्भीर, शीत प्रकृति, लम्बा, माता का शिर दक्षिण की ओर, मकान नया, ड्योढ़ी का दरवाजा दक्षिण की ओर, माता का वस्त्र सफेद और चांदी के भूषण, पहले शाकादि भोजन किया हो, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मिथुन लग्न—कृश शरीर, वात-श्लेष्म-प्रकृति, भूरे नेत्र, अल्प बाल; लम्बा चेहरा, तीक्ष्ण विचार, शूर, अभिमानी, द्रव्यवान्, रोगयुक्त नेत्र, चचल स्वभावी, स्त्रियें ३ व ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध थोड़ा, पित्त पीड़ा, माता के दाहिने अंग में लसन, पहले नमकीन भोजन लिया हो, वस्त्र पुराना, मकान का दरवाजा पश्चिम की ओर, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

कर्क लग्न—स्थूल शरीर, गोल मुख, गौर वर्ण, बहुत बाल, तैरने में प्रवीण, दूरदर्शी, निःस्वार्थी, लेखक, परिश्रमी, लोकनायक व हितवादी, कद लम्बा, कोमल शरीर, वात-श्लेष्म प्रकृति, नेत्र चंचल, माता पिता को कष्ट, माता का मुख उत्तर की ओर, पुराने वस्त्र, पहले कुछ थोड़ा भोजन किया हो, सोने का आभूषण हाथ में, स्त्रियें ३, ५ व ७ हों, बालक ने शब्द देर से किया हो।

सिंह लग्न— रक्त वर्ण, गोल व लाल नेत्र, केश बहुत, चौड़ा चेहरा, अस्थिर, मन कठोर, कद छोटा, माता का मुख दक्षिण की ओर रक्त वस्त्र, सोने के आभूषण, कसैला खट्टा भोजन किया हो, स्त्रियें ३, ५ व ७, नया मकान, बालक की पीठ पर चिह्न हो और दीर्घ शब्द से रोये।

कन्या लग्न—स्थूल व मध्य देह, ऊंचा मस्तक, गौर-वर्ण, गोल चेहरा, चंचल वृत्ति, थोड़े बाल, स्वार्थी, पाप बुद्धि, स्त्री प्रिय, कंठ और जघा में चिह्न हो, माता का मुख उत्तर की ओर, स्त्रियें ४व५, माता लाल वस्त्र से युक्त हो, पिता घर से बाहर, बालक थोड़े शब्द से रोया हो।

तुला लग्न—साधारण प्रकृति, गौर वर्ण, लम्बा चेहरा काले नेत्र, बडा नाक, थोड़े बाल, तीक्ष्ण बुद्धि, रोगी, स्त्री अभिलाषी, व्यापार में निपुण, द्रव्य सम्पन्न, दुबला शरीर, माता कष्ट में, लड़ाई झगड़ा, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्त्रियां ३ व ७ एक कंवारी कन्या भी हो, कषाय भोजन किया हो, पुराना वस्त्र, बालक दीर्घ शब्द से रोये।

वृश्चिक लग्न—ऊंचा कृश शरीर परन्तु मजबूत, भूरे नेत्र, कपटी, स्वार्थ के लिए दूसरे का नुकसान चाहने वाला, व्यवहार कुशल, स्वतन्त्र विचार, कपिल वर्ण, केश लम्बे, माता ने भूषण पहने हों, स्त्रियां ४ व ५, माता का सिर पूर्व को, माता पिता क्लेश में, पुराना रक्त वस्त्र, घर का दरवाजा उत्तर को, बालक की पीठ पर चिह्न, कंठ में पीड़ा, बालक देर से शब्द करे।

धन लग्न—स्थूल शरीर, गोल चेहरा, लम्बा नाक, लाल गौर वर्ण, स्थिर व शांत स्वभाव, द्रव्य अभाव का दुःख, विद्वान, वेदांत विषय प्रिय, आलसी, स्थिर बुद्धि, डरपोक, ऊंचा मस्तक, विशाल नेत्र, माता का मुख उत्तर की ओर, रक्त वस्त्र, चांदी के भूषण, स्त्रियें, ३व५, नया मकान दरवाजा दक्षिण की ओर, पक्वान्न भोजन किया हो, बालक के हृदय पर चिह्न और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मकर लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक, ऊंचा मस्तक, द्वेषी, आलसी लोभी, विचार हीन, वात विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियें ३, ४व६, पुराना घर, घर का दरवाजा उत्तर की ओर, बालक ने थोड़ा शब्द किया हो।

कुम्भ लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक, ऊंचा मस्तक द्वेषी, आलसी, लोभी, विचार हीन, वात विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियें ३, ४व६, पुराना भोजन किया हो, पिता घर में न हो और बालक ने थोड़ा रुदन किया हो।

मीन लग्न—स्थूल शरीर, गौर वर्ण, चपटी नाक ऊंचा … परोपकारी व दयालु, धर्मप्रिय, गम्भीर, द्रव्याभिलाषी, कीर्तिमान, माता का मुख उत्तर की ओर, पिता घर में, पहले २ स्त्रियां हों बाद में ३ व ५ स्त्रियां आई हों, पलंग का पाया टूटा हुआ हो, बालक देर से रोये।

पितृ परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय यदि लग्न को चन्द्रमा देखता हो और सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान पर चर राशि का हो कर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो तो पिता घर में नहीं था परन्तु देश में ही है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे। परन्तु इन योगों में चन्द्रमा लग्न को न देखता हो।

सुख और दुख के कारण ग्रह

गुरुशुक्र से सांपत्तिक स्थिति व द्रव्य लाभ का विचार, शुक्र से पैतृक सुख का, सूर्य चन्द्रमा से शारीरिक या मानसिक सुख का, गुरु से बुद्धि, विद्या व संगीत का, सूर्य गुरु और शनि से नौकरी, अधिकार, राजसम्मान का विचार, बुध, शुक्र से व्यापार का, लेन देन के धन्धे का, और मंगल से साहस, पराक्रम व यश का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के रोग निदान ज्ञान

किन ग्रहों में रोग होते हैं। नीचे लिखे अनुसार जानना, गुरु चंद्र से कफ रोग, शुक्र-चन्द्रमा से वात कफात्मक, शनि-राहु-केतु से वात रोग, बुध से त्रिदोष, सूर्य मंगल से पित्त रोग।

अंग पीड़ा ज्ञान

कुंडली के द्वादश भावों से शरीर के किसी भाग में पीड़ा या रोग होना निश्चित है। प्रथम भाव से मुख, दांत, दाढ़, गला, जीभ, मस्तक में पीड़ा व रोग होता है। द्वितीय भाव से दाहिने नेत्र में, तृतीय भाव से दाहिना कान, गर्दन, हाथ में, चतुर्थ से पेट, गुदा, पंचम से कमर के ऊपर का भाग, षष्ठ से गुप्त स्थान, दाहिना पांव, सप्तम से पेट का मध्यभाग नाभी, अष्टम से गुह्य स्थान, बायां पाव, नवम से कमर के ऊपर का भाग, दशम से पेट गुदा, एकादश से बायां हाथ, कान, गर्दन और द्वादश भाव से बाईं आंख और पैर के तलवे में रोग कहे।

जन्म कुण्डली में विचारणीय योग

बालक जन्म के समय मृत्यु योग

लग्न में व सप्तम में पापी ग्रह हों और चन्द्रमा पापी ग्रहों के साथ वहां स्थित हो उस चन्द्रमा को सौम्य ग्रह न देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥१॥

चन्द्रमा पापी ग्रह से युक्त हुआ लग्न, द्वादश, सप्तम, अष्टम इन में से किसी स्थान में हो, शुभ ग्रह केन्द्रों में न हों, चन्द्रमा भी शुभ ग्रहों की दृष्टि से वर्जित हो तो जन्म वाले की मृत्यु को देने वाला होता है। क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, केन्द्रों में व आठवें घर पापी ग्रह हों इस योग में उत्पन्न हुआ बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी तरह पापी ग्रहों के मध्य चन्द्रमा शुभ लग्न में हो और सातवें आठवें पापी ग्रह हों यदि बलवान् शुभग्रह से चन्द्रमा दृष्ट न हो तो बालक माता-पिता के साथ मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि बलवान शुभ ग्रहों करके चन्द्रमा देखा जाता हो तो माता की मृत्यु नहीं होती। द्वादश स्थान में शनि हो, सूर्य नवम में हो, चन्द्रमा लग्न में, मंगल अष्टम स्थान में हो यह सब ग्रह यदि बलवान गुरु से दृष्ट न हों तो उत्पन्न बालक की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। यदि बलवान् गुरु किसी को देखे किसी को न देखे व बलहीन गुरु सब को देखे तो शीघ्र मृत्यु नहीं होती। यदि गुरु सब को देखता हो तो यह फल नहीं होता। पापी ग्रह से युक्त चन्द्रमा पंचम, सप्तम, नवम, द्वादश, लग्न और अष्टम स्थानों में हों, बलवान्, बुध, गुरु और शुक्र इनमें से किसी एक से भी युक्त दृष्ट न हो तो यह योग नहीं होता।

चन्द्रमा जन्म लग्न से आठवें स्थान में हो और पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है। इस चन्द्रमा को पापी ग्रह न देखते हों, शुभ ग्रह देखते हों तो आठ वर्ष तक जीवित रहता है। पापी ग्रह और शुभ ग्रह तीनों देखते हों तो चार वर्ष जीता रहता है। शुभ या पापी ग्रह कोई नहीं देखता हो तो यह योग नहीं होता। शुभ ग्रह से युक्त और शुभ क्षेत्र में छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो मृत्यु को नहीं देता। कृष्ण पक्ष में जिन का जन्म हो शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो तो भी छठे आठवें स्थान में शुभ व पापी ग्रह से दृष्ट हो तो भी मृत्यु का देने वाला नहीं होता। छठे आठवें स्थान में शुभ ग्रह हों इनको बलवान् पापी ग्रह देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक महीना भर जीता है।

माता पिता का अरिष्ट योग

पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से, और माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिए। यदि बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम स्थान में पापी ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के मध्य में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए! यदि सूर्य से ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो, शुभ नवांश में स्थित शुभ ग्रहों करके देखे जा सकते हों तो भी पिता को कष्ट जानें।

इस प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करे, चन्द्रमा के साथ २।१२वें स्थान व ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

अरिष्ट भंग योग

अति बलवान् गुरु लग्न में विराजमान हुआ अनेक प्रकार के अरिष्टों को दूर करता है। लग्नपति अति बलवान् केन्द्रस्थित शुभ ग्रहों करके देखा हुआ दीर्घ आयु देता है। पापी ग्रहों के वर्गों में स्थित हों तो अरिष्टों को दूर करते हैं।

नेत्र विकार योग

तनु १ धन २ व्यय १२ पति युत भृगु आये बसे त्रिक ३।८।१२ धाम। राशीश धन २ रवि युत माहि नेत्र की हान॥ शुक्र सूर्य तनुनाथ युत जाए बसे त्रिकधाम, जन्म अन्ध का योग है भाषत बुध गुण ग्राम। मात, तात, भ्रात, पुत्र वामी नारी ग्रह नाथ। सूर्ययुत शुक्र त्रिकधाम बसे तिन के नेत्र नहीं साथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादश वाम नेत्र का हान, भौम, राहु, दाहिनी नयन बुध जन कहत बखान।

मूक योग

छटे घर का स्वामी बुध के साथ लग्न में बैठा हो तो बालक तोतला या गूंगा होता है। चन्द्रमा लग्न में हो और छठे घर की राशि मिथुन या कन्या हो अथवा दूसरे घर का स्वामी बृहस्पति के साथ ६।८वें या १२वें घर में हो अथवा शुक्लपक्ष का चन्द्रमा मंगल के साथ लग्न में हो तो तोतली जबान और गूंगा होता है।

ऋणी मनुष्य का योग

धन स्थान में पापी ग्रह हों लग्नेश द्वादश स्थान में स्थित हो और नवमेश लाभेश से दृष्ट व युक्त हो तो ऋणी हो।

धनेश अस्तंगत नीच राशिगत हो, षष्ठ व अष्टम भाव पाप युक्त हों तो मनुष्य ऋण से दबा रहे।

लाभेश की राशि जिस नवांशक में हो उसका स्वामी दुष्ट भाव में पापयुक्त हो तथा क्रूर षष्ठांश में हो तो मनुष्य ऋण ग्रस्त होता है।

संन्यास योग

लग्नेश पर केवल शनि की दृष्टि हो अन्य की नहीं अथवा शनि को लग्नेश देखे और लग्नेश को शनि देखे, बल रहित हो तो संन्यास योग होता है।

कर्ण दोष

षष्ठेश बुध चौथे हो उसे शनि चतुर्थ दृष्टि (शत्रु दृष्टि से) देखे अथवा छठे भाव में बुध शनि से दृष्ट हो तो बधिर योग होता है कानों से नहीं सुनता। बुध छटे सुकर दशम हो और रात्रि का जन्म हो तो कान से नहीं सुनता।

जिह्वा दोष

बुध ७।८।१२ राशि में किसी में हो, सूर्य चौथे भाव में चन्द्रमा से दृष्ट हो षष्ठेश पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य गूंगे स्वर वाला होता है। शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा लग्न में मंगल युक्त हो तो जीभ नष्ट हो। बुध १।११ राशि का गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो गतवाणी मनुष्य की हो।

कुब्जा दोष

चन्द्रमा पहले या पिछले नवांशक के तीसरे भाव में हो, शनि चौथे हो, लग्नेश शत्रु राशि का हो और मंगल क्षीण चन्द्रमा के साथ हो तो मनुष्य कुबड़ा हो।

राशि	स्वामी	शुभ अशुभ	स्त्री, पुरुष संज्ञा	सम विषम	जाति	जाति धर्म	लक्षण	स्वभाव	अवस्था	वर्ण	गुण	तत्त्व	बलाबल समय	शरीर अंग विभाग	स्थान	सजल निर्जल	दिशा	घं । पह
मेष	मंगल	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चंचल	चर	युवा	लाल	रज	अग्नि	रात्रि	मस्तक	पर्वत	निर्जल	पूर्व	२
वृष	शुक्र	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	गोरा	तम	भूमि	,,	मुख	जमीन	,,	दक्षिण	४
मिथुन	बुध	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चं+शां	द्विस्वभाव	बाल	हरा	सत	वायु	,,	स्तन	जंगल	,,	पश्चिम	३
कर्क	चन्द्र	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	बाल	गोरा	रज	जल	,,	हृदय	जल	सजल	उत्तर	१
सिंह	सूर्य	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	शांत	स्थिर	बृद्ध	लाल गोरा	तम	अग्नि	दिन	उरु	पर्वत	निर्जल	पूर्व	१
कन्या	बुध	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चं+शां	द्विस्वभाव	बाल	चित्र	सत	भूमि	,,	कमर	जमीन	,,	दक्षिण	१
तुला	शुक्र	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चंचल	चर	युवा	नीला	रज	वायु	,,	नाभि	जंगल	सजल	पश्चिम	४
वृश्चिक	मंगल	अशुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	सुनहरा	तम	जल	,,	लिंग	जल	सजल	उत्तर	१
धन	गुरु	शुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चं+शा	द्विस्वभाव	बाल	पीला	सत	अग्नि	रात्रि	जंघा	पर्वत	निर्जल	पूर्व	३
मकर	शनि	अशुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	बृद्ध	भूरा	रज	भूमि	,,	घुटना	जमीन	सजल	दक्षिण	४
कुम्भ	शनि	अशुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	शांत	स्थिर	बृद्ध	काला	तम	वायु	दिन	पिंडुली	जंगल	सजल	पश्चिम	३
मीन	गुरु	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	चं+शां	द्विस्वभाव	बृद्ध	कर्कट	सत	जल	रात्रि	पाँव	जल	सजल	उत्तर	४

ग्रह—गुणस्वभाव चक्र

ग्रह	स्वगृह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	स्वभाव	वर्ण	रूप	अधिकार	शारीरिक भाग	शरीर के अंतर्भाग	जाति	तत्त्व	आप्तवर्ग सुख	स्त्री पुरुष	विद्या	शुभाशुभ	दिशा	बलाबल समय	भाग्योदय काल
																		वर्ष
रवि	सिंह	सिंह	सत्व	स्थिर	लाल	गोल	सिर से मुख	आत्म	अस्थि	क्षत्रिय	अग्नि	पिता	पुरुष	राजविद्या	अशुभ	पूर्व	दिन	२२—२४
चन्द्र	कर्क	वृष	सत्व	चंचल	गोरा	सुन्दर	गले से हृदय	मन	रुधिर	वैश्य	जल	माता	स्त्री	ज्योतिष	बलीशुभ निर्बलीऽशु	वायव्य	रात्रि	२४—२५
मंगल	वृश्चिक	मेष	तम	उग्र	लाल	कृश	पेट से पीठ	सत्व	मज्जा	क्षत्रिय	अग्नि	बन्धु	पुरुष	मनु	ऽशुभ	दक्षिण	रात्रि	२८—३२
बुध	कन्या	कन्या	रज	मिश्र	हरा	प्रसन्न	हाथ पाँव	वाचा	त्वचा	वैश्य	भूमि	बन्धु	क्लीव नपुंसक	गणित	शुभाशुभ	उत्तर	सर्वकाल	३२—३६
गुरु	मीन	धन	सत्व	क्षिप्र	पीला	स्थूल	कमर से जंघा	जीव	चर्बी	ब्राह्मण	आकाश	संतान	पुरुष	वेदांत व्याकरण	शुभ	ईशान	दिन	१५—२२
शुक्र	वृष	तुला	रज	मृदु	सफेद	तिजस्वी	शिशन से वृषन	काम	वीर्य	ब्राह्मण	जल	स्त्री	स्त्री	गायन वादन	शुभ	आग्नेय	दिन	२६—२८
शनि	मकर	कुम्भ	तम	दारुण	काला	आलसी	पि घुटना	दु:ख	स्नायु	अन्त्यज	वायु	नौकर	क्लीव	कायदा	अशुभ	पश्चिम	रात्रि	३६—४२
राहु	कन्या	कर्क	तम	दारुण	मिश्र	मलीन		दु:ख	स्नायु	नीच		आजी		गारुडी	अशुभ	नैर्ऋत्य		२४—५०
केतु	मीन	मकर	तम	दारुण	मिश्र	मलीन		दु:ख	स्नायु	नीच		आजी		तंत्रमंत्र	अशुभ			४८—५४

सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावों में गोचर फल

भाव	लग्न	धन	सहज	सुख	सुत	रिपु	स्त्री	मृत्यु	भाग्य	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	स्थान हानि	भय	धन प्राप्ति	मान नाश	दीनता	शत्रु नाश	यात्रा	पीड़ा	पुण्य नाश	अभीष्ट सिद्धि	लाभ	व्यय
चन्द्र	उत्तम भोजन	धन क्षय	धन लाभ	कुक्षि में पीड़ा	कार्यनाश	लाभ	धनप्राप्ति	रोग बड़	राजा से भय	सुख	लाभ	शोक
मंगल	भय	हानि	सुख	शत्रु वृद्धि	द्रव्यनाश	धन हानि	शस्त्र घात	रोग	शोक	लाभ	द्रव्य प्राप्ति	व्यय
बुध	बन्धन	धन लाभ	शत्रु भय	द्रव्य प्राप्ति	मान	बुरी स्थिति	पीड़ा	धनप्राप्ति	चित्त में खेद	सुख	लाभ	धन हानि
गुरु	भय	धन लाभ	पीड़ा	शत्रु वृद्धि	सुख	शोक	राजमान	रोग वृद्धि	सुख	दीनता	प्रतिष्ठा	पीड़ा
शुक्र	शत्रु नाश	धन लाभ	प्रसन्न	धन लाभ	पुत्र सुख	शत्रुवृद्धि	शोक	धनलाभ	श्रेष्ठ	पीड़ा	धन वृद्धि	लाभ
शनि	बुद्धि भ्रम	क्लेश	सुख प्राप्ति	शत्रुवृद्धि	पुत्र कष्ट	सुखप्राप्ति	कलह	रोग	सुख	निर्धन	द्रव्य प्राप्ति	धन हानि
रा. के.	हानि	निर्धन	धन लाभ	वैर	शोक	लाभ	कलह	पीड़ा	पाप कर्म	वैर	सुख	द्रव्य हानि

अथ जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ फलानि

ग्रह	१ तनु	२ धन	३ सहज	४ सुख	५ पुत्र	६ रिपु	७ स्त्री	८ मृत्यु	९ भाग्य	१० कर्म	११ लाभ	१२ व्यय
सूर्य	शूरवीर	बहुधन	सुमति	पीड़ा	असुता	बलवान्	पराजित	अल्पायु	पुत्रवान्	दैन्य	बहुधन	पतित
चन्द्र	जड़	कुटुम्ब	हिंसक	सुख	पुत्रवान्	अल्पाय	कामी	रोगी	सौभाग्य	धनी	धनी	अंगहीन
मंगल	कामी	कुटुम्ब	सुमति	असुखी	असुता	सुखी	पराजित	अल्पायु	पापी	सुखी	धनी	मतिभंग
बुध	व्रणी	धनी	खल	पीड़ा	मन्त्री	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	दुर्जन
गुरु	विद्वान्	सुवाक्या	कृपण	सुखी	धीमान्	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शुक्र	कामी	कुल प्रीत	कृपण	सुखी	सुखी	अशत्रु	कलह	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शनि	कामी	बहुधन	बुद्धिमान्	असुखी	कुपुत्र	बली	पराजित	अल्पायु	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
राहु	कामी	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कुमति	सबल	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
केतु	सकाम	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कुमति	अधर्मी	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	[illegible]	[illegible]

[illegible]

राशय:	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा	६	८	१२	५	६	१	[illegible]	१०	७	११	२	[illegible]
चं. घा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
भौ. घा	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	७
बु. घा	२	३	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा	६	१०	२	७	११	३	८	१६	९	१	४	५
शु. घा	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	२०	१	२
रा. घा	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	२	१२	९
मा. घा	का	मा	पौ.	मा.	फा	चै०	वै०	ज्ये.	आ	आ	भा	आ
तिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घात	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वा. घा	सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	गु०	शु०	शु०	मं०	गु०	शु०
न. घा	म०	ह०	स्वा	ऽनु	मू०	श्र०	श०	रे०	भ०	रो.	आ	श्ले
यो. घा	वि	शु०	प	धृ०	प्री	शु०	शु०	व०	वै०	ग०	व्या	व०
ल. घा	१	२	४	८	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र. घा	मं	श०	बु०	चं०	सू०	बु०	शू०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
व. घा	क्ष	वै	शु०	वि	क्ष.	व०	शु०	वि	त्र.	१व	शु०	वि.
ब. घा	र०	श्वे	ह०	पा	धू०	चि	कृ०	क०	पी	कृ०	मधू	कुवें
स्त्री	मे०	वृ	वी	क०	सि	क०	तु०	वृ०	ध०	मं०	कु०	मी
चं घा	१	८	७	९	६	६	४	२	१०	११	५	१२

राशी घातक चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घातक चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, चन्द्रमा घातक हैं। अत: मनुष्य को चाहिए कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय [illegible] न करें।

बाल-कष्टवली पूतना-विधान

जन्म से			पूतना नाम	असित लक्षण	मूर्ति द्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि	मा	वर्ष						
०१	०१	०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर	नदी की मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चन्दन का लेप सफेद फूल ध्वजा ५ (खिलड़ियां) पूड़े ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्व पत्र बिल्ली और मनुष्य के केश नीम के घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनि स्वाहा
०२	०२	०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोच दांतों का पसीना आंखें मींचना ज्वरार्द्ररोदन आंखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला २ दिन विधान	उबले चावल सेर भर आटे के पूड़े मछली और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवति स्वाहा
०३	०३	०३	१ पूतना	ज्वर कम्प प्रलाप अरुचि आंख मींचना वमन रोमांच	पूर्ववत् मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लाल फूल सायं काल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप की कांचली का धूप देना।	ॐ नमो भगवति स्वाहा
०४	०४	०४	१ मुखमंड-किका२था-कार्मोमिनी	ज्वर गात्रभंग आंख मींचना सिर झुकना श्वास श्या-मता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला बिल्व के कांटे से रेखा	सफेद चन्दन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवे।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो-घृत का धूप देना।	ॐ नमो पूतनेमाविमर्लि भसुशोभने बालकं मुंच।
०५	०५	०५	बिडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि	सेर भर चावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपराह्न के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् धूप देना।	ॐ सुभगे सुभगे देवि सर्वशत्रु-निवारिणि। कुरु शांतिं शिशोः स्वास्थ्यं जीवदानेन रक्षि।
०६	०६	०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मछली का मांस बकरे का मांस पायस दूध आध सेर आटे के पूड़े अपराह्न पश्चिम दिशा में तीन दिन बलि देवे।	कुठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो-घृत का धूप देना।	ॐ रक्षसि त्वं महाभागे बालं मुंच शुभात्र न, वरं कुरु।
०७	०७	०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत् मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चन्दन सायं काल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमोपद्मपत्राक्षि विशालाक्षि वने शिवे। संगृह्य बलिमायच्च बालं मुञ्च सुशोभने।
०८	०८	०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आंखें मींचना रोना जिह्वा-शोष सिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत् मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्याह्न व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गुग्गुल में घृत मिला कर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्वभूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनि। बलिं चैवोररीकृत्य त्वरितं मुंच बालकम्॥
०९	०९	०९	मदोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच शूल	पूर्ववत् मूर्ति	उबले चावल मछली का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् स्वाहा।
१०	१०	१०	रेवती	ज्वर वमन तृष्णा श्वास पीड़ा	पूर्ववत् मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लाल फूल २५ सफेद फूल ४४ संध्या समय दक्षिण में २ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिला कर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् स्वाहा।
११	११	११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी की मूर्ति	उबले चावल सफेद चन्दन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहरताय ॐ हुं फट् स्वाहा।
१२	१२	१२	मदुखुवा	ज्वर रोदन पसीना आंखें दुखना सन्ताप रोमांच	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मछली का मांस बकरे का मांस पापड़ सन्ध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमोनारायण प्रज्वल २ तापं हर २ शोषय २ मर्दय २ हनदुष्टान् हुं फट् स्वाहा

नक्षत्र-कष्टावली

नक्षत्र चरण	च १	च २	च ३	च ४	कष्टलक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप-संख्या	जपार्थ नक्षत्रमन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	दि ०६	दि ११	दि १०	दि २०	अर्ध गात्रपीड़ा वात ज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुम्भ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५००० हजार	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेंद्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	कुंकुम चन्दन चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़ोदन धूप दिल ।
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दिरोग शीतज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी छायापात्र दान	१००७० हजार	ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः सँ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीर पुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा ।
कृत्तिका ३	दि ०६	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरशूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गोदान ग्रह-शांति	१०००० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति ँ वनस्पतिः मूर्द्धा कवीरयीणाम् ॥३॥ अग्नये नमः ॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुल धूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य ।
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०६	दि १८	दि ३०	शिरदर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौ दुग्ध खंड	१००० हजार	ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठा. सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥४॥	चन्दन गन्ध पुष्प असगन्ध धूप मोदक घृत क्षीर नैवेद्य ।
मृगशिर ५	दि ०६	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधि तंडुल गोवत्स दान ब्राह्मण भोजन	१०००० हजार	ॐ सोमो धनु ँ सोमो अवन्तुमाशु ँ सोमो वीरः कर्मण्यन्दधाति यदस्यविदथ्य ँ सभेयम्पितृ श्रवणयो ददाश दस्तस्मै नमः ॥५॥	चन्दन गन्ध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृत दुग्ध दध्योदन ।
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वाङ्ग पीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वस्तु दान कृष्ण वस्त्रादि	१०००० हजार	ॐनमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यमुत ते नमः ॥६॥ ॐ रुद्राय नमः ।	हरिद्रा कुंकुम गन्ध सवन्तिकापुष्प अष्ट-गन्ध तिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत श्रीपक्वनैवेद्य ।
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिरपीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्या भोजन वस्त्र	१०००० हजार	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥७॥	कुंकुम गन्ध वारिज पुष्प गुग्गुल पुष्प घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़ घृत ।
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि ४१	ज्वर पीड़ा शूल अति कठिनरोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गोदान पक्वान्न दान	१०००० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दी दयच्छ्वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐगुरवे नमः ॥८॥	कुंकुम अगर गंध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुल धूपसार नैवेद्य दध्योदन ।
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ४१	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा पाद पीड़ा	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गो शय्यादान	१०००० हजार	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत पुष्प मिष्टान्न हवि नैवेद्य तिल घृत दुग्ध ।
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्ध गात्र पीड़ा शीतजन्य रोगभय	पितर देवता	तिल तंडुल माष वस्त्र दान	१०००० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्य. स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्य.स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त: पितरोऽतितृपन्त पितरः शुन्धध्वम् ॥१०॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत पुष्प मिष्टान्न हवि नैवेद्य तिल घृत दुग्ध ।
पूर्वा फाल्गुनी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्र पीड़ा ज्वर अर्धशिर रोग	भग देवता	त्रिस्तल पात्र यव माष गो स्वर्ण दान	१०००० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मांधियमुदयाददन्नः भगप्रजन्नाय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥११॥ भगाय नमः ॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत धूप शर्करा मोदक पूपादान घृत-पायस नैवेद्य ।
उत्तरा फा० १२	दि ०७	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षि शूल रोग	अर्यमा देवता	सुवर्ण रजत अन्न गौ वस्त्र दान	२००० हजार	ॐ देव्यावध्वर्यू आगत ँ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वायज्ञ ँ समञ्जाथे प्रत्वथायं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ अर्यम्णे नमः ॥	कपूर कुंकुम गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य घृतान्न होम ।
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफरा	सविता देवता	गोदान छाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	१००० हजार	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् वातजूतोयो अभिरक्षति त्मना प्रजा पुपोष पुरुधा विराजति ॥१३॥	कुंकुम रक्तचन्दन गन्ध कमल पुष्प सुगंध गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य ।
चित्रा १४	दि ११	दि ०६	दि ०६	दि १६	विविध रोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्र वृषभ गुड तिल छाया पात्र	५००० हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धनम् । द्विपदाछन्द इन्द्रियमुक्षा गौर्नवयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रे नमः ॥	कुंकुम अगरगन्ध विचित्र पुष्प गुग्गुल धूप मोदक घृत विचित्रान्न हवि नैवेद्य ।

नक्षत्र	च १	च २	च ३	च ४	कष्टलक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप-संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदानद्रव्याणि
स्वाति १५	दि ६०	दि १७	दि ३०	दि ००	अनेक तरह के रोग पैदा होवें	वायु देवता	रक्तगो स्वर्णपक्वान्न दान	५००० हजार	ॐवायोऽन्नरयि वृद्धः सुमेधः श्वेतः सिषक्तिनि यूनामभिश्री ॐतेवायवेसमनसा विस्थुरविश्वनरः स्वपन्था निचक्रः ॥१५॥	चन्दनगन्ध कमल पुष्प अगर गुग्गल धूप पायस शर्करा घृत नैवेद्य ।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नि देवता	रक्तपित्त वस्त्र कृष्ण वृषभ दान	२००० हजार	ॐइन्द्राग्नि आगतं सुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यं । अस्य पादन्धियविता ॥१६॥	श्रीखण्ड चंदन गंध कमलपुष्प देव-दारु धूप घृत पायस नैवेद्य ।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गोदान छायापात्र	१००० हजार	उँ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृतं सपर्यत् दूरेदृशं तादेवजातायकेतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशं शत:॥१७॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥१८॥	कुंकुम गन्ध कमल पुष्प चंदनधूप पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य । चदन गन्ध सुगन्ध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य ।
ज्येष्टा १८	दि ५६	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर काँपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नीलवस्त्र छायात्र दान	५००० हजार	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारुयनां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिःसंविदानःप्रजापतिर्विश्वकर्माविमुञ्चतु १९	कृष्ण अगर गंध नीलपद्म पुष्पकृष्ण अगरधूप मिष्टान्नहवि माष नैवेद्य
मूला १९	दि ००	दि ०६	दि १५	दि ०६	ज्वर शूल सन्निपात महा कठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्णकृष्ण गौछायापात्र दान	५००० हजार	ॐअपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप, अपामार्गत्वमस्म-दपटु: दुश्वप्न्यं सुव; ॥२०॥	चन्दन गन्ध पद्म गुग्गल धप घृत पायस नैवेद्य ।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ कंपरोग शिररोग महाकष्ट	आप देवता	श्वेतवस्त्र तंडुलस्वर्ण जलकुम्भ १०००	२००० हजार	ॐ विश्वे अद्यमरुतो विश्व ऊति विश्वे भवत्यग्नः समिद्धः विश्वे नांदेवा अवसागमन्तु विश्वमस्त द्रविणवाजा अस्म २१	चन्दन गंध मालती पुष्प गुग्गल पायस नैवेद्य ।
उ० षाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटि पीड़ा प्रलापउरु शूल रोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१००० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रे स्थोविष्णोस्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः ।	चन्दन गंध मालतीपुष्पकपूर गुग्गल धूप ओदन पायसषड्रस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०६	वात पित्त कफ रोग अतिसारसर्वगात्रपीड़ा	गोविन्द देवता	सुवर्णगोदान ब्राह्मण भोजन छायापात्र	१००० हजार	ॐ वसी: पवित्रमसि शतधारंवसो:पवित्रमसि सहस्रधारम् देवस्त्वासविता पुनातुवसो: पवित्र नशधारेणसुप्वाकामधुक्षः	अगर गंध कमलपुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य ।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि ०७	दि २०	दि २१	मत्रकच्छ्र कंप ज्वर रक्त अतिसार	वसू देवता	छत्री जूतों स्वर्ण गौ छायापात्र दान	१००० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदनमासीद	कुंकुम अगर गंध कमलपुष्प अगर धूप घृत नैवेद्य ।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपात ज्वर पीड़ा	वरुण देवता	तिल सुवर्ण घृत तेल अजा गोदान	१०००० हजार		
पूर्वाभाद्र पदा २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १६	सर्वगात्र पीड़ासर्दी चिन्ता व्याकुलता	अजकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेतवस्त्र घृत दूध	५००० हजार	ॐउतनाऽहिर्बुध्न्यःश्रृणात्वजएकपात्पृथिवि समुद्रः । विश्वे देवा ऋतावृधो हुतानां स्तुतामंत्रा कविशस्ता अवन्तु ।।२५।	कुंकुम चंदन गंध श्वेताकपुष्प सर्वौ-षधमिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य ।
उ० भाद्र पदा २६	दि १०	दि २०	दि ०६	दि १५	कामलारोग अतिसार ज्वर वायु सूल भ्रम	अहिर्बुध्न्य देवता	रजत कृष्णवस्त्र तिल सुवर्ण दान	१००० हजार	ॐशिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽस्तु मामा हिंसीः निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय [सुवीर्याय ॥२६॥	कपूर चन्दन गन्ध पद्मपुष्प बिल्व गुग्गल धूप दधि पायस नैवेद्य ।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ९	दि २०	वातपित्त ज्वर भ्रम ऊरुशूल पीड़ा	पूषा देवता	पित्तलपात्र रक्तवृषभ वस्त्र छायापात्र दान	१०००० हजार	ॐ पूषं तवव्रते वयन्तरिष्येम कदाचन । स्तोतारस्त इहमस्मि ॥२७॥	रक्त चन्दन गन्ध सम्पर्क पुष्प घृत गुग्गल पायस नैवेद्य ।

सूर्यादि ग्रहों के लिए दान

													संख्या	मन्त्र	अवस्था
सूर्य	कनक	मनि	धन	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	कमल	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	चामर	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	वर्ष २२
चन्द्र	मोती	चांदी	सिता	शंख	वंशपात्र	चावल	कपूर	श्वेतवस्त्र	श्वेतचन्दन	श्वेतवस्त्र	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	वर्ष २४
भौमः	मूंगा	कनक	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	रक्तवृषभ	मसूर	रक्तपुष्प	दक्षिणा	जप	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	वर्ष २८
बुधः	हरितवस्त्र	मूंगी	कांस्य	घृत	मिश्री	गजदन्त	सवर्ण	पन्ना	पुष्प	कपूर	दक्षिणा	जप	८०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	वर्ष २२
गुरुः	हरिद्रा	घोड़ा	खाण्ड	सुवर्ण	सिता	पुष्पराग	पीतवस्त्र	लवण	पीतपुष्प	मोदक	दक्षिणा	जप	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	वर्ष १६
शुक्रः	श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	घृत	श्वेतचन्दन	हीरा	चांदी	चावल	खाण्ड	दुग्ध	श्वेतपुष्प	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	वर्ष २५
शनिः	तिल	तेल	माष	नीलम	कृष्णपुष्प	कृष्णवस्त्र	कृष्ण गौ	महिषी	लोहा	सुवर्ण	दक्षिणा	जप	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	वर्ष ३६
राहु	गुलमेद	घोड़ा	खड्ग	नीलम	कम्बल	सुवर्ण	तिल	तेल	नरेल	सप्तधान्य	दक्षिणा	जप	१८०००	ॐ छ्रां छ्रीं छ्रौं सः राहवे नमः	वर्ष ४२
केतु	कस्तूरी	कम्बल	खण्ड	बकरा	तिल	सुवर्ण	खण्ड	सप्तधान्य	खोपा	कृष्णवस्त्र	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	वर्ष ४२

सूर्यादि ग्रह पीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधैः रोगान्नश्य सुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नान विधानेनग्रह दोष प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन शिला	पञ्चगव्य	बिल्व छाल	गोबर	मालती	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	पुष्प	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	श्वेतसरसों	सूवृक्षमुल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
केशर	सिपी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मुलट्ठी	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खश	श्वेतचन्दन	सिंगरफ	मधु	मधु		सौंफ	कुस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती	मालती		मुत्थरा		
रक्त पुष्प		मौलसरी	सुवर्ण			खिला		
रक्त कनेर								

ग्रहपीड़ा निवृत्ति के लिये यन्त्र

सूर्ययन्त्रम			चन्द्रयन्त्रम			भौमयन्त्रम			बुधयन्त्रम			गुरुयन्त्रम			शुक्रयन्त्रम			शनियन्त्रम			राहुयन्त्रम			केतुयन्त्रम		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	५	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

नवदल मुद्रा

बुध-पन्ना	शुक्र-हीरा	चन्द्र मोती
गुरु-पुखराज	सूर्य-मणि	मं०-मूंगा
केतु-लस्ब	शनि-नीलमे	रा०-गुल्मे

अदरक के लाभ :—अदरक को नमक लगा कर खाने से हाजिमा को तेज करता है। जबान और गले को साफ करता है। कब्ज को दूर करके भूख को बढ़ाता है। अदरक के रस में मधु मिलाकर प्रयोग करने से खांसी दमा और जिगर के रोगों को दूर करता है। अदरक घी में भून कर कुछ नमक मिलाकर खाने से अफारा दूर होता है। अदरक का रस निबु के रस में नमक डाल कर पीने से बदहजमी दूरहोती है। चाए कीतरह जल में पका कर दूध मिलाकर पीने से सर्दी, खांसी, जुकाम को लाभ होताहै ।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत	भर.	कृ.	प्रथम
पुन	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा	अश्विनी	रो	द्वितीय
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पू षा	उ षा	उ. भा	रेव.	मृ.	अन्त

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र, जन्म नक्षत्र अथवा नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में जब एक ही नाड़ी पर हो तो असाध्य होता है रोगी का मरण होता है। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित है।

मंगलवार १।६।११ तिथि कृतिका, नक्षत्र बुधवार २।७।१२ तिथि अश्लेषा नक्षत्र, गुरुवार ३।८ १३ तिथि मघा हस्त नक्षत्र, शुक्रवार ४।९।१४ तिथि आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र, शनिवार ५।१०।१५तिथि भरणी नक्षत्र इन तिथि वार और नक्षत्रों के योग में रोग का आरम्भ हो तो मृत्यु व मृत्यु तुल्य कष्ट जानें :

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१३।२१ संख्या पर हो तो काल मुख होता है, और १०।१८ नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती है, इस ग्रन्थ में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष को मृत्यु तुल्य कष्टजाने ।

मेषादि राशियों का निम्नलिखित फलादेश स्थूलत: गोचर ग्रहों की गत्यनुसार लिखा गया है। सूक्ष्म तथा विस्तृत फलादेश के लिए बड़ी जन्मपत्री या वर्षफल बनवाएं।

मेष राशि—(जन्म १४ अप्रैल से १३ मई तक) इस राशि वाले व्यक्तियों के लिए आगामी वर्ष साधारणत: अशुभ एवं संघर्षमय रहेगा! १४ जनवरी १९७५ से ११ फरवरी तक मकरस्थ सूर्य व मिथुनस्थ शनि का षडाष्टक योग बनता है। जिससे व्यवसाय सम्बन्धी चिन्ता, पिता को कष्ट तथा किसी सम्बन्धी से कलह रहेगा! किन्तु स्वराशि पति मंगल भाग्य स्थान में होने से स्थिति में सुधार अवश्य होगा। २२ फरवरी के बाद व्यवसाय में वृद्धि, धन लाभ रहेगा! खर्च भी अधिक रहेगा! किसी दुर्घटना की आशंका है सावधान रहें! मार्च-अप्रैल के मध्य में कोई अशुभ समाचार मिलेगा! कोई झूठा अपवाद भी लग सकता है। समय निरर्थक विरोध, झगड़े इत्यादि में व्यतीत होगा! १४ अप्रैल से ११ मई तक की अवधि शुभ रहेगी! पदोन्नति हो, मान व प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कोई शुभ समाचार मिले। किन्तु स्त्री को कष्ट रहेगा! १५ मई से १९ जुलाई तक का समय विशेष संघर्ष पूर्ण रहेगा! खर्च बढ़ेगा संतान व शरीर को कष्ट; २२ जून से भौम स्वराशि में रहेगा तथा सूर्य और शनि की तृतीय भाव में युति होगी। रिश्तेदारों व गुप्त शत्रुओं से हानि व मानसिक चिन्ता बढ़ेगी! ब्लड प्रेशर, बवासीर इत्यादि रोगों से सावधान रहें! २३ जुलाई से सूर्य-शनि का साहचर्य पुन: कर्क राशि में होगा। भूमि जायदाद सम्बन्धी झगड़े की सम्भावना, मुकद्दमे इत्यादि में धन की क्षति। शनि मंगल की १०-४ परस्पर दृष्टि स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं। तथापि भाग्येश और लग्नेश का राज योग बनता है जो कि भाग्योदय का प्रतीक है। २० अगस्त से मंगल-केतु का योग और सूर्य शनि का सिंह राशि में योग स्त्री व सन्तान सम्बन्धी चिंता उत्पन्न करता है। सितम्बर में ननिहाल पक्ष को हानि, अक्तूबर से दिसम्बर तक की अवधि में शरीर को कष्ट रहे, व्यवसाय में क्षति गुप्त रोग व चिन्ता बढ़ेगी! महिलाओं को इस वर्ष गृहस्थ जीवन के बारे विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। मंगल का जाप, व्रतादि उपाय करने से लाभ रहेगा।

वृष राशि (जन्म १४ मई से १४ जून तक) वर्ष पर्यन्त उतार-चढ़ाव बहुत रहेंगे। शनि की साढ़ सती समाप्त प्राय है। धन लाभ समुचित होगा। किन्तु वर्ष पर्यन्त स्त्री एवं निजी स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। १ जनवरी से २४ जनवरी तक भाग्य अच्छा रहेगा! १९ फरवरी से लाभ स्थान में गुरू शुक्र का योग धनलाभ के लिए शुभ है। ४ मई से अकस्मात् धन प्राप्ति का योग बनता है। भूमि जायदाद सम्बन्धी अथवा किसी नए व्यवसाय से लाभ रहेगा निकट सम्बन्धी से मिलाप होगा। बिगड़े हुए कामों में सुधार होगा! जून-जुलाई की मध्य अवधि में धन की क्षति होगी! किसी निकट सम्बन्धी की अकस्मात् मृत्यु सम्भव है! नेत्रों एवं पेट में विकार रहेगा! २३ जुलाई से शनि वृष राशि को चांदी के पाया पर राशि परिवर्तन करेगा जो कि शुभ फल के संकेत करता है। भूमि सम्बन्धी कार्यों से लाभ रहे। बिछुड़े बन्धुओं से मिलाप हो। यात्रा में हानि रहेगी! शनि की पंचम भाव पर दृष्टि मन में चिन्ता उत्पन्न करती है। विद्या-प्राप्ति में रुकावट तथा सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता रहेगी! स्त्री को कष्ट तथा व्यय अधिक रहेगा! १२ अक्तूबर से राहु तुला राशि में छठे भाव में तथा केतु द्वादश भाव मेष राशि में प्रवेश करेगा! स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा किन्तु पेट, कमर आदि में वायु के कारण पीड़ा रहेगी। दीर्घ-यात्रा के योग हैं। किसी नई विद्या में रूचि बढ़ेगी। व्यवसाय परिवर्तन से लाभ रहेगा। इस राशि की स्त्रियों को विद्या, नौकरी इत्यादि में सफलता रहेगी किन्तु मासिक-धर्म सम्बन्धी रोगों का भय है। मार्च, जून, जुलाई, सितम्बर और नवम्बर मास अशुभ हैं। इस राशि वाले व्यक्तियों को श्वेत गोमेध धारण करना तथा शुक्रवार का व्रत दान इत्यादि करने से लाभ रहेगा!

मिथुन राशि—(१५ जून से १६ जुलाई) वालों को वर्ष का पूर्व भाग प्राय: मध्यम रहेगा। जनवरी से अप्रैल तक धन लाभ अच्छा, कार्य में सफलता, किसी महापुरुष से मिलाप होगा। किसी सहयोगी अथवा मित्र द्वारा हानि। शनि की साढ़े सती लगी हुई है। और शनि इस राशि को लोहे के पाया राशि-बदलता है। शरीर अस्वस्थ व स्त्री को कष्ट रहेगा। व्यवसाय में हानि रहे। सन्तान को कष्ट तथा परिवार में अशान्ति रहे। अपने सहयोगियों से मत भेद बढ़ेगा। व्यर्थ की यात्रा हो। २१ मई से ७ जुलाई तक का समय कुछ अच्छा रहेगा किन्तु जुलाई के पश्चात् धन अभाव सम्बन्धी समस्याएं बहुत बढ़ जाएंगी मनोऽनुकूल सहायता न मिल पाएगी। अपने गुप्त विरोधियों से सावधान रहें। अधिक ऋण लेने से बचें। दुष्टों के कारण मन अशान्त रहेगा स्त्री को कष्ट रहेगा। अक्तूबर के पश्चात् स्थिति में कुछ सुधार दिखाई देगा। स्थान-परिवर्तन करने में लाभ होगा। अकस्मात् धन-प्राप्ति होगी। यात्रा से लाभ रहे। नवबर में किसी दुर्घटना का भय है। दिसबंर में कोई कठिन समस्या पेश आवेगी। स्त्रियों को यह वर्ष चिन्ता प्रद रहेगा। वर्ष के २, ४, ७, ८, ११, १२ मास विशेष अशुभ रहेंगे। शनि व बुध ग्रहों का जाप व विधिवत् शान्ति करवानी चाहिए।

कर्क राशि—(जन्म १७ जुलाई से १६ अगस्त तक) वर्षारम्भ जनवरी से १८ फरवरी तक का समय शुभ नहीं। गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा। राजपक्ष से चिंता, कारोबार में उलझन, स्त्री व सन्तान को कष्ट तथा आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। किसी शुभ कार्य पर व्यय भी होगा। १९ फरवरी से गुरु का भाग्य स्थान में पड़ना शुभ है। फरवरी से अप्रैल तक की अवधि में व्यवसाय में लाभ अच्छा, मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी, नौकरी में वृद्धि किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। मई जून में अचानक धन प्राप्ति के योग है जून-जुलाई के मध्य का समय शुभ नहीं है। किसी नजदीकी सम्बन्धी की मृत्यु संभव है। व्यय आमदन से अत्यधिक रहेगा। कोई दुर्घटना घटेगी। २३ जुलाई से शनि इस राशि को ताम्बे के पाया पर राशि बदलेगा। व्यवसाय में लाभ। स्त्री व सन्तान का सुख प्राप्त हो। कोई शुभ समाचार मिलेगा। नया कारोबार करने से लाभ रहेगा। वस्तुत: यह स्थिति नवम्बर के पश्चात् ही प्रारम्भ होंगी क्योंकि जुलाई अगस्त में सूर्य-शनि की युति लग्न मे होगी जो कि जातक के स्वास्थ्य इत्यादि के लिए शुभ नहीं। १७ अगस्त से १६ नवम्बर तक नेत्रों व शिर में पीड़ा सीमित मात्रा में धन लाभ, रिश्तेदारों से बिगाड़, माता को कष्ट तथा सतान की ओर से चिंता रहेगी। मन में असंतोष रहेगा। दिसम्बर में किसी से अनावश्यक रूप से झगड़ा पैदा होने का भय है। वर्ष के १, २, ६, ७, ८ १०, ११ वें मास शुभ नहीं हैं। इस राशि वाली स्त्रियों के लिए वर्ष संघर्षमय रहेगा। शनि व चन्द्रमा का जप व पूजन विधिवत करवाना श्रेयकर रहेगा।

चन्द्रमणि धारण करना शुभ है।

सिंह राशि—(जन्म १७ अगस्त से १६ सितम्बर तक) ग्रहस्थिति के अनुसार वर्ष का फल सिंह राशि के लिए विशेष शुभ नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ में ही शनि की दृष्टि सूर्य पर पड़ रही है। राहु सुख स्थान में तथा केतु कर्म भाव में है। चतुर्थ भाव में स्थित मंगल तथा ११ वें भाव में शनि षडाष्टकयोग बनाते है। इस ग्रहस्थिति के अनुसार जातक को अपनी वर्तमान स्थिति से स्थानान्तर होना पड़ता है। माता एवं स्त्री को कष्ट रहेगा। सफलता में रुकावट उत्पन्न होगी संतान पक्ष से चिंता रहेगी। उदर में विकार वर्ष पर्यन्त रहेगा तथा निजी स्वास्थ्य को हानि पहुंचे। २८ जनवरी से १२ मार्च तक स्थिति सामान्य रहेगी यद्यपि माता के कुल की हानि, चौपायों को कष्ट रहे। इस अवधि में स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि और मन चिन्तित रहेगा। रक्तचाप अथवा हृदय में पीड़ा का भय। अप्रैल से जून तक भाग्य में वृद्धि होगी धन-लाभ, आयात-निर्यात के कार्य से धन वृद्धि, भाईयों से विरोध उत्पन्न हो। पिता को कष्ट रहे। सर्विस अथवा व्यवसाय में अचानक उन्नति के अवसर प्राप्त [illegible] शनि की साढ़सती प्रारम्भ हो रही है जो शुभ नहीं है। अगस्त से दिसम्बर तक का समय मानसिक परेशानियों में व्यतीत होगा। दीर्घ यात्रा रहेगी। स्त्री, सन्तान तथा कुटुम्बियों के कारण मन व्यथित रहेगा। नेत्र, पित्तादि रोगों का भय। वर्ष के १, ३, ८, १०, ११, १२, मास अशुभ हैं। स्त्रियों का पारिवारिक कलह से बचना चाहिए। सूर्य, शनि आदि ग्रहों का जाप व रविवार को व्रतादि उपाय करना शुभ रहेगा। माणिक्य धारण करना लाभप्रद है।

कन्या राशि—(जन्म १७ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक) वर्ष सामान्यत: शुभ रहेगा। यद्यपि आरम्भ के दो मासों में कष्ट रहेगा। पेट में विकार तथा मन में चिन्ता रहेगी। निकट सम्बन्धियों से विरोध की स्थिति उत्पन्न होगी। मार्च के पश्चात् स्थिति मे सुधार हो जाएगा। व्यापार एवं व्यवसाय में धन लाभ रहेगा। बिगड़े हुए काम बनेंगे। विद्या में अच्छी सफलता मिलेगी किसी शुभ कार्य में धन का खर्च रहे। मार्च-अप्रैल के मध्य में माता एवं स्त्री को कष्ट रहेगा। यह कष्ट १० जून तक सम्भव है। व्यवसाय में अकस्मात क्षति भी उठानी पड़ेगी। जुलाई में कारोबार एवं नौकरी में विघ्न रहेगा। जुलाई के पश्चात स्थिति में परिवर्तन होगा। व्यवसाय में सुधार होगा। नई योजना अथवा कार्य से लाभ रहेगा। सन्तान एवं स्त्री का सुख प्राप्त होगा। अगस्त में कोई अप्रिय घटना घटेगी, मन में असँतुष्टि तथा बेचैनी बढ़ेगी धर्म में प्रवृत्ति रहेगी। कोई शुभ यात्रा पड़ेगी। धन का व्यय अधिक रहे। अक्तूबर के पश्चात् आर्थिक संकट पेश आ सकता है। आठवें भाव में केतु रक्तविकार, पेट विकार एवं वायु रोग करेगा। किसी अनिष्ट दुर्घटना का भी भय है। दिसम्बर से अकस्मात-धन प्राप्ति के योग हैं। वर्ष के १, २, ३, ७, ८, १०, ११ मास नेष्ट हैं। स्त्रियों के लिए वर्ष विशेषत: सुखकर रहेगा। कोई शुभ समाचार मिले। सूर्य, मंगल गुरु इत्यादि ग्रह पूज्य हैं। पन्ना धारण करना शुभ है।

तुला राशि (जन्म १७ अक्तूबर से १६ नवम्बर) इस राशि वालों के लिए यह वर्ष विशेष अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ जनवरी से मंगल राहु की युति दूसरे धन भाव में है। लग्नेश शुक्र चतुर्थ गृह में बुध युक्त होगा। गुरु पंचमभाव में मंगल से दृष्ट है। शनि और सूर्य में सातवीं दृष्टि है। इस ग्रह-योग के अनुसार जनवरी-फरवरी के दो मास में कुटुम्ब में परस्पर विरोध उत्पन्न होगा। धन का व्यय आमदन से अधिक हो बवासीर, रक्तचाप आदि रोगों का भय। बनते हुए कार्यों में बाधा उत्पन्न हो। संतान व स्त्री की ओर से चिन्ता होगी। २० फरवरी से १८ मार्च तक के समय में अचानक धन प्राप्ति के योग हैं। मार्च में गुप्त शत्रु उभरेंगे। किन्तु स्वयमेव दब जाएंगे। अप्रैल-मई में शरीर को कष्ट तथा स्वभाव में तेजी रहेगी, जून एवं जुलाई के अन्त मे कोई दुर्घटना पेश आयेगी। कोई व अशुभ समाचार [illegible] २३ जुलाई को शनि इस राशि को लोहे के पाया पर राशि परिवर्तन करता है जो कि कारोबार में नुकसान के संकेत करता है। स्त्री व माता

द्वादश राशियों का वार्षिक फलादेश स० २०३२

को कष्ट रहेगा। व्यर्थ खर्च अधिक होगा। अक्तूबर के पश्चात्-राहु तुला राशि में
होंगे जिस से मानसिक परेशानियां और शारीरिक कष्ट और बढ़ेगे। इस राशि की
स्त्रियों को पारिवारिक कलह तथा आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।
वर्ष के १, २, ४, ५ ८, ११ मास नेष्ट रहेंगे।
राहु व शनि का जप व पाठ तथा नीलम की अंगूठी धारण करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक राशि—(जन्म १७ नव. से १७ दिसम्बर) वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि
से शुभ नहीं रहेगा! वर्षारम्भ में शनि मंगल का षडाष्टक योग है। लग्न
राशि में मंगल-राहु स्थित हैं। आठवें शनि जुलाई तक शरीर कष्ट विशेष रूप से
करेगा। स्वभाव में तेजी तथा गुस्सा पैदा होगा। ब्लड-प्रैशर, बवासीर व दंत
रोगों का भय है। धन सुख मध्यम रहेगा। भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ
होगा। जुलाई के पश्चात् अकस्मात् धन प्राप्ति व सन्तान सुख के योग हैं। यद्यपि
माता पिता के लिए यह समय शुभ नहीं। उनके शरीर को कष्ट विशेष रूप से
रहेगा। अगस्त-सितम्बर में स्त्री को मरणान्तक रोग हो सकता है। सावधान रहें।
सांझे व्यापार में नुकसान होगा। निकट सम्बन्धियों से मतभेद व हानि होगी। किसी
वाहनादि से गिरकर चोट का भय है। अक्तूबर में द्वादश भाव में राहु फिजूल खर्ची
कराएगा। उद्योग करने पर भी कार्य सिद्ध नहीं होंगे। दुष्ट व्यक्तियों की संगत अधिक
रहेगी। दिसम्बर तक की अवधि चिन्ताजनक एवं कष्टदायक परिस्थितियों में
गुजरेगी। इस राशि वाली स्त्रियों को भी संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में से गुजरना
होगा। वर्ष के १, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११ मास शुभ नहीं। मंगल राहु वा
शनि आदि ग्रहों का उपाय तथा मूंगा धारण करना श्रेयकर रहेगा।

धन राशि—(ज. १८ दि०. से १४ जनवरी तक)

वर्ष का पूर्वार्द्ध अर्थात् जून तक का समय शुभ नहीं है। इस अवधि
तक इस राशि पर शनि की सातवीं शत्रु दृष्टि रहेगी। १२ वें राहु ११ अक्तूबर तक
रहेगा। गुरु तृतीय एवं चतुर्थ भाव में शुभ है। मंगल क्रमश: १२, १, २. ३, ४, ५
भावों में रहेगा। इस ग्रह स्थिति के अनुसार वर्ष के पूर्वार्द्ध काल में फिजूल खर्ची
बढ़ेगी, कारोबार में हानि. शरीर को कष्ट, विवाह में विलम्ब तथा विवाहित होने
पर पत्नी अथवा पति की तरफ चिन्ता एवं परेशानी उत्पन्न हो। सांझेदारी के
व्यवसाय में नुकसान उठाना पड़ेगा। नेत्र, कर्ण, मुख एवं वायु रोगों से पीड़ा रहे,
रक्तचाप की अधिकता रहेगी। अभी किसी नए काम में जोखिम उठाने से बचें। विकट
स्थिति का सामना करना होगा। व्यर्थ यात्रा अधिक रहेगी उत्तरार्द्ध में धन लाभ में वृद्धि
होगी, किसी कार्य से लाभ भी सम्भव है। मकान, भूमि सम्बन्धी लेने देन के कार्यों
में लाभ रहेगा। दीर्घ अथवा विदेश यात्रा के भी योग हैं। पेट में विकार एवं वायु
रोग रहेगा। सावधान रहें। पति एवं स्त्री के स्वास्थ्य में सुधार होगा। धर्म में
रुचि बढ़ेगी। स्त्री के गर्भ को हानि पहुंचेगी। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। इस
राशि की स्त्रियों को अपने तथा पति की सेहत के बारे में विशेषत: सचेत रहना
चाहिए। शनि, चन्द्रमा व केतु आदि ग्रहों के उपाय से लाभ रहेगा।

मकर राशि—(जन्म १५ जनवरी से १४ फरवरी तक)

इस राशि वालों को वर्ष का पूर्व भाग शुभ रहेगा जबकि उत्तरार्द्ध
अशुभ। धन लाभ मध्यम रहेगा। वर्ष आरम्भ में राहु लाभ स्थान में,
केतु सुत भाव में, गुरु धन भाव में, और शनि शत्रु भाव में स्थित है। ग्रह स्थिति के
अनुसार ३ जनवरी से मार्च तक लाभ अच्छा रहेगा, कोई शुभ समाचार मिले,
नौकरी अथवा व्यवसाय में तरक्की. मित्रों से लाभ तथा बिगड़े हुए काम बन जाएंगे।
किसी शुभ कार्य में धन व्यय होगा। अप्रैल से मध्य जुलाई तक अचानक धन प्राप्ति
का योग है। शत्रु का नाश होगा किन्तु सन्तान की तरफ से चिन्ता बराबर रहेगी।
जुलाई से सितम्बर तक स्त्री एवं माता को विशेष कष्ट रहेगा, कारोबार में रुकावट
रहेगी; निजि स्वास्थ्य को हानि पहुंचेगी, गुप्त शत्रु उभरेंगे। वात, कफ, पित आदि
विकार उत्पन्न होंगे. नए कारोबार करने का विचार पैदा होगा। अक्तूबर से राहु
कर्म भाव में तथा केतु सुख स्थान में प्रवेश करेगा। परिणाम स्वरूप इस मास से
[illegible] स्थान से अलग होंगे, मानसिक परेशानी बढ़ेगी तथा बढ़ते हुए कार्य में फिर
बाधा पहुंचेगी. माता पिता को कष्ट पहुंचे, भूमि सम्बन्धी कार्यों से हानि रहे।
नवम्बर में कोई अप्रिय घटना घटे। दिसम्बर के अन्तिम पन्द्रह दिन धन लाभ के
लिए अच्छे हैं, यात्रा में हानि रहे गी। नवम्बर-दिसम्बर में पारिवारिक कलह का
भय है। विद्या प्राप्ति में रुकावट अथवा असफलता रहेगी। वर्ष के ६-४-७-८-१०-
११-१२ मास विशेष अशुभ रहेंगे। इस राशि वाली स्त्रियों को गृह क्लेश से बचना
चाहिए। शनि, गुरु तथा. केतु इत्यादि ग्रहों का विधि पूर्वक उपाय करना शुभ
रहेगा।

कुम्भ राशि:—(जन्म १५ फरवरी से १४ मार्च)

इस राशि वाले को वर्ष के पहले दो मास विशेष शुभ रहेंगे,
आरम्भिक मासों में गुरु क्रमश: कुम्भ व मीन राशि में स्थित है, केतु सुख स्थान में
है, शनि पांचवें भाव में। मार्च, अप्रैल के मध्य में धन हानि, नेत्र रोग और किसी
अनिष्ट की आशंका है। लोक अपवाद का भय तथा कुटुम्ब में मतभेद रहेगा। अप्रैल-
मई में भाइयों से लाभ एवं सुख होगा। कारोबार मे बाधाएं उत्पन्न होती रहेंगी,
जुलाई तक स्त्री, सन्तान व धन सम्बन्धी चिन्ता विशेष रूप से रहेगी। जुलाई के
पश्चात् किसी नये व्यवसाय का विचार उत्पन्न होगा। निकट बन्धुओं से विरोध
होगा: स्त्री एवं माता को कष्ट रहेगा। रक्त-चाप व कफ विकार रहेगा, पेट में
गड़बड़, कोई अशुभ समाचार मिलेगा। नए कारोबार में रुकावट, मित्रों से मन-

(शेष पृष्ठ २९ पर देखें)

सूर्यादि ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश सम्वत् २०३२

ग्रहों का राशि प्रवेश

सू० रा० प्र०
१४ अप्रै मेष
१४ मई वृष
१५ जून मिथुन
१६ जुला कर्क
१७ अग. सिंह
१७ सित. कन्या
१७ अक्तू. तुला
१६ नव. वृश्चि.
१६ दिस. धन
१४ जन. मकर
१३ फर. कुम्भ
१३ मार्च मीन

मं० रा० प्र०
१२ मई मीन
२२ जून मेष
५ अग. बृष
२८ सित. मिथु
१४ दिस. वृष
१ मार्च मिथुन

बु० रा० प्र०
१६ अप्रै. मेष
३० ,, वृष
२१ मई मिथुन
७ जुला. मिथुन
२४ ,, कर्क
८ अग. सिंह
२६ अग. कन्या
२२ सित. तुला
१ अक्तू. कन्या
२ नव. तला
२१ नव. वृश्चि
९ दिस. धन
२९ ,, मकर
१ फर. धन
६ ,, मकर
५ मार्च कुम्भ
२३ ,, मीन

गु० रा० प्र०
१७ जुला. मेष
११ सित. मीन
२४ फर. मेष

शुक्र रा० प्र०
४ मई मिथन
३१ ,, कर्क
१ जुला. सिंह
६ अग. वक्री
३ नव. कन्या
१ दिस. तला
२७ ,, वृशि.
२० जन. धन
१४ फर. मकर
९ मार्च कुम्भ

शनि
२३ जुल. कर्क

राहू रा० प्र०
१२ अक्तू. तुला

केतु रा० प्र०
१२ अक्तू. मेष

सू. नक्षत्र प्रवेश

१४ अप्रै अशि. १
१७ ,, ,, २
२० ,, ,, ३
२४ ,, ,, ४
२७ अप्रै भरणी १
१ मई ,, २
४ ,, ,, ३
८ ,, ,, ४
११ ,, कृति १
१४ ,, ,, २
१८ ,, ,, ३
२१ ,, ,, ४
२५ ,, रोहि १
२८ ,, ,, २
१ जून ,, ३
४ ,, ,, ४
८ ,, मृग १
११ ,, ,, २
१५ ,, ,, ३
१८ ,, ,, ४
२२ ,, आर्द्रा १
२६ ,, ,, २
२९ ,, ,, ३
२ जुला. ,, ४
१६ ,, पुर्न १
९ ,, ,, २
१३ ,, ,, ३
१६ ,, ,, ४
२० ,, पुष्य १
२३ ,, ,, २
२७ ,, ,, ३
३० ,, ,,
३ अग आश्ले १
७ ,, ,, २
१० ,, ,, ३
१३ ,, ,, ४
१७ ,, माघ १
२१ ,, ,, २
२४ ,, ,, ३
२७ ,, ,, ४
३० ,, प.फा. १
३ सित. ,, २
६ ,, ,, ३
९ ,, ४
१३ ,, उ.फा. १
१७ ,, ,, २
२० ,, ,, ३
२३ ,, ,, ४
२७ ,, हस्त १
३० ,, ,, २
३ ,, ,, ३
७ अक्तू ,, ४
१० ,, चित्रा १
१४ ,, ,, २
१७ ,, ,, ३
२० ,, ,, ४
२४ ,, स्वा १
२७ ,, ,, २
३० ,, ,, ३
२ नव ,, ४
६ ,, विशा १
९ ,, ,, २
१३ ,, ,, ३
१६ नव ,, ४
१९ नबम अनु १
२३ ,, ,, २
२६ ,, ,, ३
२९ ,, ,, ४
२ दिस ज्ये. २
६ ,, ,, ४
९ ,, ,, ३
१२ ,, ,, ४
१६ ,, मूला. १
१९ ,, ,, २
२२ ,, ,, ३
२५ ,, ,, ४
२९ ,, पूषा. १
१ जन ,, २
४ ,, ,, ३
७ ,, ,, ४
११ जन.
१९७६ उषा. १
१४ ,, ,, २
१८ ,, ,, ३
२१ ,, ,, ४
२४ ,, श्रव. १
२७ ,, ,, २
३० ,, ,, ३
२ फर ,, ४
६ ,, धनि. १
९ ,, ,, २
१३ ,, ,, ३
१६ ,, ,, ४
१९ ,, शत. १
२२ ,, ,, २
२६ ,, ,, ३
२९ ,, ,, ४

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

३ मार्च पू.भ. १
७ ,, ,, २
१० ,, ,, ३
१३ ,, ,, ४
१७ ,, उभा १
२१ ,, ,, २
२४ ,, ,, ३
२७ ,, ,, ४
३० ,, रेव. १

मंगल नक्षत्र प्रवेश

१२ अप्रै शत. १
१६ ,, ,, २
२० ,, ,, ३
२५ ,, ,, ४
२९ ,, पूभा. १
३ मई ,, २
८ ,, ,, ३
१२ ,, ,, ४
१७ ,, उभा. १
२१ ,, ,, २
२६ ,, ,, ३
३० ,, ,, ४
४ जून रेव १
८ ,, ,, २
१३ ,, ,, ३
१८ ,, ,, ४
२२ ,, अशि. १
२७ ,, ,, २
१ जुला ,, ३
[illegible] ,, ,, ४
११ जुला. भर १
१६ ,, ,, २
२१ ,, ,, ३
२५ ,, ,, ४
३१ ,, कृति १
५ अग. ,, २
१० ,, ,, ३
१५ ,, ,, ४
२१ ,, रोहि १
२६ ,, ,, २
१ सित. ,, ३
७ ,, ,, ४
१४ ,, मृग १
२१ ,, ,, २
२८ ,, ,, ३
८ अक्तू. ,, ४
१८ ,, आर्द्रा १
२४ ,, ,, २
२९ , ,, ३
४ नवम्ब. ,, ४
१२ ,, वक्री भौ.
२५ ,, मृग १
२९ ,, रोहि ४
१ दिस. ,, ३
३ ,, ,, २
५ ,, ,, १
७ ,, कृति ४
१० ,, ,, ३
१४ ,, ,, २
१९ ,, ,, १
२३ ,, भर. ४
२७ ,, ,, ३
३१ ,, ,, २
[illegible] नव ,, १
२३ ,, मार्गी भौ
२३ जन. रोहि १
२७ ,, ,, २
३१ ,, ,, ३
२ फर. ,, ४
६ ,, मृग १
१८ ,, ,, २
१ मार्च ,, ३
१० ,, ,, ४
१८ ,, आर्द्रा १
२७ ,, ,, २

बुध नक्षत्र प्रवेश

१२ अप्रैल रेव ३
१४ ,, ,, ४
१६ ,, अशि. १
१८ ,, ,, २
२१ ,, ,, ४
२२ ,, भर. १
२४ ,, ,, २
२७ ,, ,, ४
२९ ,, कृति १
३० ,, ,, २
३० ,, बु.उ.पशि.
२ मई कृति ३
४ ,, ,, ४
६ ,, रोहि १
८ ,, ,, २
१३ ,, ,, ४
१५ ,, मृग १
२१ ,, ,, ३
२७ ,, वक्री बु
१ जूनबु.पशिअ.
१५ ,, रोहि १
२० ,, बुध.पूर्व.
२३ जून बुधमार्गी
२९ ,, मृग १
७ जुला. ,, ३
१० ,, ,, ४
१२ ,, आर्द्रा १
१८ ,, ,, ४
२० ,, पुर्न १
२१ ,, ,, २
२१ ,, पूर्वऽस्तबु
२४ ,, ,, ४
२६ ,, पुष्ये १
३१ ,, ,, ४
२ अग. श्ले १
४ ,, ,, २
७ ,, ,, ४
८ ,, मघा १
१० ,, ,, २
१३ ,, पशि.उ.बु
१४ ,, मघा ४
१६ ,, पूफ़ा १
१८ ,, ,, २
२२ ,, ,, ४
२४ ,, उफा. १
२६ ,, ,, २
३१ ,, ,, ४
२ सित. हस्. १
५ ,, ,, २
१० ,, ,, ४
१३ ,, चित्रा १
२२ ,, ,, ३
२५ ,, वक्री बुध
२८ ,, उफा. ४
१ अक्तू. ,, २
३ ,, पशि.अ.बु.
६ ,, हस्त १
१५ ,, उदय पूर्व
१८ ,, मार्गीबुध
२८ ,, चित्रा १
२ नव. ,, ३
४ ,, ,, ४
६ ,, स्वा. १
६ पूर्वोऽस्त बु.
८ नव स्वा. २
१२ ,, ,, ४
१४ ,, विशा १
१९ ,, ,, ३
२१ ,, ,, ४
२३ ,, अनु १
२९ ,, ,, ४
१ दिस ज्ये, १
७ ,, ला १
९ ,, मू, ४
१६ ,, ४
१८ ,, पूषा १
२१ ,, पश्चिउदय
२६ ,, उषा १
२९ ,, ,, २
१ जन ,, ३
५ ,, श्रवण १
११ ,, ,, ३
१४ ,, वक्री बुध
१७ ,, प. अस.
२२ ,, उ.षा १
२६ ,, पूषा १
२८ जन. पूर्वोदय
१ फर मूला १
५ ,, मार्गी बु
६ ,, उ.षा २
१५ ,, ,, ४
१९ ,, श्रवण १

पृष्ठ २७ का शेष—(द्वादश राशि फल)

मुटाव पैदा होंगे। सितम्बर-अक्तूबर में दीर्घ अथवा विदेश यात्रा के योग हैं, व्यवसाय में परिवर्तन होगा, अचानक लाभ की स्थिति बनेगी। माता के पक्ष को हानि। नवम्बर, दिसम्बर में किसी नई विद्या की तरफ रुचि बढ़ेगी, गुप्त शत्रु उभरेंगे किन्तु पुन: दब जाएंगे। व्यर्थ झगडा उत्पन्न होगा। लाभ मध्यम होगा। मानसिक परेशानी बढेगी। पार्टीबाजी से दूर रहें, कारोबार ढ़ीला, परिश्रम से से मासान्त तक लाभ होगा। इस राशि वाली स्त्रियों के लिए यह वर्ष शुभ है विवाह अथवा सन्तान सुख होगा। वर्ष के ३-५-६-७-११-१२ मास विशेष नेष्ट हैं। शनि तथा केतु ग्रहों का उपाय कराने से लाभ रहेगा। नोलम धारण करें।

(जन्म १५ मार्च से १२ अप्रैल तक)

मीन राशि—वर्ष के आरम्भिक अढ़ाई मास विशेष संघर्ष पूर्ण रहेंगे। चूंकि राशि पति गुरु द्वादश भाव में तथा सूर्य ११-१२ भाव रहेंगे। केतु भ्रातृ भाव में राहु भाग्य स्थान तथा शनि सुख स्थान में होंगे। जनवरी के मास में किसी नए मित्र की सहायता से कोई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होगा धन-लाभ भी रहेगा, किन्तु सन्तान पक्ष से चिन्तित। फरवरी-मार्च में पिता के साथ मतभेद उत्पन्न हों। चाचा ताऊ की ओर से चित्त दुखी, नेत्र एवं उदर रोग, यात्रा में व्यर्थ खर्च पड़ेगा। किसी निकट सम्बन्धी द्वारा धोखा मिले। मार्च अप्रैल में किसी शुभ कार्य पर खर्च हो। स्वभाव में क्रोध रहे, स्त्री-पुत्र आदि की ओर से दुखी। सिर में चोट में की सम्भावना है। अप्रैल-मई में धन लाभ होगा। मई से जुलाई तक की अवधि में करीबी रिश्ते-दारों से बिगाड़, हृदय में पीड़ा, माता को कष्ट, मानसिक चिन्ता बढ़ेगी तथा गृहस्थ जीवन में अशान्ति फैलेगी। कारोबार में बाधाएं उत्पन्न होंगी। अगस्त-सितम्बर में सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता, सट्टे अथवा व्यवसाय से हानि, विद्या में असफलता रहेगी। व्यर्थ खर्च पड़ेगा। भाग्योदय में राहु बाधक बन रहा है। केतु धन राशि में सहायक है। नवम्बर के पश्चात स्थिति में सुधार दिखाई पड़ेगा। इस राशि की स्त्रियों को यह वर्ष संघर्षमय रहेगा।

राहु, केतु व शनि ग्रहों का उपाय लाभप्रद होगा।

नोट :—अधिक सूक्ष्म व विस्तृत फलादेश के लिए अपने जन्म का समय, तारीख, वर्षादि अथवा पत्र लिखने का ठीक समय लिखकर भेजें।

फीस १५) रु. ७५ पैसे अग्रिम भेजें।

भवदीय पं. पन्ना लाल एम. ए. ज्योतिषी
सम्पादक पचांग दिवाकर
माई हीरां गेट जालन्धर शहर।

पृ० २८ का शेष

बुद्ध नक्षत्र प्रवेश	
२६ फर. श्रव.	४
२९ ,, धनि.	१
५ मार्च ,,	३
७ ,, ,,	४
९ ,, शते	१
१५ ,, ,,	४
१७ पू.भा.	१
१७ पूर्वस्त बुध	
१९ मार्च पू.भा.	२
२३ ,, ,,	४
२४ ,, उ.भा.	१
३० ,, ,,	४

गुरु नक्षत्र प्रवेश	
१६ अप्र.उ.भा.	४
३० ,, रेवती	१
१५ मई ,,	२
१ जून ,,	३
२० ,, ,,	४
१७ जुला. अ.	१
१३ अग.गुरु.वक्री	
११ सित. रेव.	४
१० अक्तू. ,,	३
५ नव. ,,	२
१२ दि गुरु.मार्गी	
१४ जन. रेव	३
६ फर. ,,	४
२४ ,, अश्वि	१
११ मार्च ,,	२
२६ ,, ,,	३

शुक्र नक्ष. प्रवेश	
१३ अप्रै. कृति	४
१६ अप्रै. रोहि	१
२२ ,, ,,	३
२५ ,, ,,	४
२८ मृग ,,	१
१ मई ,,	२
४ ,, ,,	३
७ ,, ,,	४
९ ,, आर्द्रा	१
१५ ,, ,,	३
१८ ,, ,,	४
२१ मई पुर्न	१
२४ ,, ,,	२
३१ ,, ,,	४
३ जून पुष्ये	१
७ ,, ,,	२
१३ ,, ,,	४
१६ ,, आश्ले	१
२० ,, ,,	२
२७ ,, ,,	४
१ जुला.मघा	१
५ ,, ,,	२
१० ,, ,,	३
१५ ,, ,,	४
२० ,, पू.फा	१
२ अग. ,,	३
६ शुक्र वक्री	
२२ ,, माघा	१
१७ शुक्र: मार्गी	
१४ अव.पू फा.	१
१८ ,, ,,	२
२६ अक्त.	४
३० ,, उ.फा	१
३ नव. ,,	२
१० ,, ,,	४
१३ नव. हस्त	१
१६ ,, ,,	२
२२ ,, ,,	४
२५ ,, चित्र	१
१ दिस ,,	३
८ ,, स्वाती	१
१५ ,, ,,	४
१८ ,, विशा	१
२४ ,, ,,	३
२७ ,, ,,	४
२९ ,, अनु	१
१ जन. ,,	२
७ ,, ,,	४
८ ,, ज्येठा	१
१८ ,, ,,	४
२० ,, मूला	१
२५ ,, ,,	३
२८ ,, ,,	४
३१ ,, पू षा	१
३ फर ,,	२
९ ,, ,,	४
११ फर.उ.षा	१
१४ ,, ,,	२
१८ ,, ,,	४
२२ ,, श्रवण	१
२८ ,, ,,	३
१ मार्च ,,	४
४ धनिष्ठा	१
९ ,, ,,	३
१२ ,, मार्च	४
१५ ,, शत	१
१७ ,, ,,	२
२३ ,, ,,	४
२५ ,, पू.भा	१
३० ,, ,,	३

शनि नक्षत्र प्रवेश	
२३ अप्रै. पुर्न	१
२९ मई ,,	२
२६ जून ,,	३
२७ शनि अस्त	
२३ जु पुर्न.कर्के	४
२ अ. श उदय.	
१८ ,, पुष्ये	१
१८ सित. ,,	२
१४ नव. व.शनि	
१३ जन. पुष्ये	१
२८ फर. पुर्न	४
२७ मर्च मा.श	

राहु नक्षत्र प्रवेश	
८ जून अनु.	१
१० अग. वि.	४
१२ अक्तू. ,,	३
१४ दिस. ,,	२
१५ फर. ,,	१

केतु नक्षत्र प्रवेश	
८ जून कृत	३
१० अग. कृति	३
१२ अक्तू. ,,	१
१४ दि. भर.	४
१५ फर. ,,	३

मंगल वक्री अस्त
१२ नवं भौ.वक्री
२४ जन मार्गी

गुरु वक्री अस्त
१३ अग वक्री
१२ दिस. मार्गी

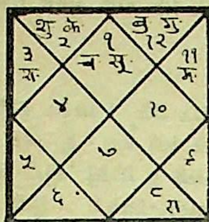
शुक्र वक्रीस्तअ
६ अग. वक्री
१६ ,, अस्त
२ सित उदय
१८ ,, मार्गी

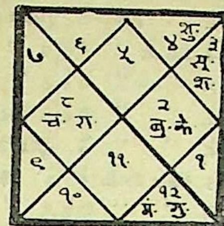
शनि वक्री अस्त
२७ जून अस्त
२ अग. उदय
१५ नव. वक्री
२७ मार्च मार्गी

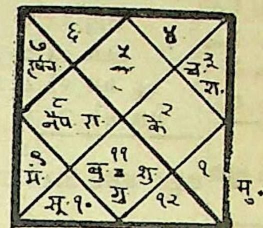
नोट :-बुध का वक्री अस्त पृ० २८ पर देखें

ग्रहों की आकाशी कौंसिल का बिश्व पर प्रभाव सम्वत् २०३२


वर्ष प्रवेश लग्न ३९।३८


(मेष प्रवेश) जगद् लग्न ३।४३


आर्द्रा प्रवेश लग्न १३।२१


२५वां गणतन्त्र दिवस ३२।११

सर्वज्ञ परमात्मा की असीम अनुकम्पा एवं पाठकों के सतत सहयोग से "पचांग दिवाकर" को प्रकाशित होते हुए ५१ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस पंचांग के आद्य-कर्ता परम पूज्य पण्डित देवी दयाल जी से आज तक की दीर्घावधि में इस पचांग को जो लोकप्रियता प्राप्त होती रही है, वह पाठकों से छिपी हुई नहीं है। ज्योतिष परम्परा के प्राचीन एवं साँस्कृतिक मूल्यों को चिरावधि तक अक्षुण्ण बनाए रखना इसकी निजी देन हैं।.........भगवती की कृपा से गत वर्षों की भान्ति इस बार भी गत वर्षीय हमारी पचांग में प्रतिपादित अनेक भविष्योक्तियां अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई हैं। उदाहरणार्थ—

(१) प्रजा में सुख की अल्पता तथा लोग शासक वर्ग से सन्तुष्ट न होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक असतुलन। (पृष्ठ २९)

(२) मुद्रा की क्रय-शक्ति बहुत कम हो जाएगी। गेहूं, चावल आदि उपभोग्य पदार्थों की कीमतों में आशातीत वृद्धि से लोगों में बेचैनी। पृ० ३० का २

(३) सरकार खाद्यान्न तथा व्यापार सम्बन्धी नीति में सुधार एवं परिवर्तन करेगी। पृष्ठ ३० कालम १

(४) मन्त्रीमण्डल में श्रीमती इन्दिरा गाधी का प्रभाव कायम रहेगा। पृ० ३० भारत

(५) मुद्रा-स्फीति को रोकने के लिए कठोर पग उठाना। पृ० ३९

(६) जुलाई में दुर्घटना की आशंका......एवं पूर्वी-दक्षिण में प्रकृति प्रकोप इत्यादि। पृ० ३०

(७) भारत-पाक समझौते से भारत को कोई लाभ न होगा। भट्टो सरकार अपने उद्देश्य में कपटपूर्ण रहेगी। भुट्टो सरकार समझौते पर आचरण करने में आनाकानी करेगी।

(८) हिमाचल प्रदेश में खाद्यान्न वस्तुएं दुर्लभ होंगी......पृ० (१०७) इत्यादि अनेक कथन हैं जिनकी पाठक स्वयं जांच कर सकते हैं।

आकाशी कौंसिल का विचार बाबत सम्वत् २०३२ (१९७५—७६)

ग्रहों के दशाधिकार : आगामी वर्ष भी ग्रहों के दस अधिकारों में से ५ अधिकार शुभ ग्रहों को और ५ अधिकार क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए है। वर्ष का राजा शनि तथ मन्त्री चन्द्रमा है। सस्य नीरसेश (कपडा इत्यादि) एवं धन—ये तीन अधिकार बुध को प्राप्त हुए हैं। फलों का अधिकार पुनः शनि को, सेना तथ मेघों का अधिकार सूर्य को. धान्यादि का मंगल को तथा रसों का अधिकार शुक्र को मिला है। बृहस्पति को इस वर्ष कोई अधिकार नहीं मिला। दशाधिकारों का प्रस्तुत विभाजन संकेत करता है कि आगामी वर्ष विश्व के अधिकतर शासक युद्ध की तैयारियों में लगे रहेंगे। प्रजा की भलाई की ओर कम ध्यान देंगे तथा लोगों के प्रति कठोर नीति अपनाएंगे। अनक स्थानों पर युद्ध का वातावरण बनेगा लेकिन युद्ध टल जाएगा। अनेक राष्ट्रों को गम्भीर रूप से आर्थिक सकट का सामना करना पड़ेगा। खाद्यान्न तथा अन्य जनोपयोगी वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हो जाएगी जिससे सामान्य लोगों में परेशानी, असन्तोष व क्षोभ की भावना व्याप्त होगी। चोरी, ठगी व लूटमार की घटनाएं अधिक होंगी। दुर्घटनाए, भूकम्प

बाढ़ादि प्राकृतिक-प्रकोप अधिक होंगे। वर्षा की स्थिति अनिश्चित रहेगी। तिल तेल, जूट, तांबा, पीतल, कागज, सीमेंट एवं लोहादि काले रंग की वस्तुएं विशेषतय: तेज हो जाएंगी।

ग्रह स्थिति : विश्व जगत् लग्न की कुण्डली में मेष लग्नोदय है। लग्नेश मंगल ११वें भाव (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध) में शत्रु राशि में स्थित हैं। जबकि सूर्य उच्च राशि का होकर लग्नस्थ है। शुक्र व केतु का योग द्वितीय भाव (जनसाधारण की आर्थिक दशा व वाणिज्य) में हुआ है तथा उन पर केन्द्रेश भौम की चतुर्थ दृष्टि है। शनि तृतीय भाव (निकटस्थ देशों की हलचल) दशमेश (संसद) होकर द्वादशस्थ बुध व गुरु दोनों को शत्रु दृष्टि से देख रहा है। वर्ष प्रवेश कुण्डली में वृश्चिक लग्न में राहु लग्नस्थ है। यहां भी लग्नेश भौम शत्रु राशि चतुर्थ भाव (जनसाधारण की की प्रसन्नता) में स्थित है। दशम भाव पर मंगल की मित्र दृष्टि तथा नृप शनि की शत्रु दृष्टि पड़ रही है। वृष राशि में शुक्र व केतु का योग दोनों कुण्डलियों में हुआ है तथा बुध नीचस्थ है। पंचम भाव में सू. गु. बु: व चन्द्र का चतुर्ग्रही है और उन पर शनि की दशम दृष्टि पड़ रही है। लग्न पर गुरु की नवम विशेष दृष्टि है। प्रस्तुत ग्रह-स्थिति के अनुशीलन से परिलक्षित होता है कि आगामी वर्ष विश्व का राजनैतिक वातावरण प्राय: विक्षुब्ध रहेगा। विश्व की बड़ी शक्तियों के सम्मुख अनेक विषम-समस्याएं उत्पन्न होंगी। सैनिक विद्रोह, गृहयुद्ध, अग्निकाण्ड, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप अधिक रहेंगे। उत्तर-पश्चिमी व दक्षिणी देशों में भारी क्षति होने की आशंका हैं। टर्की, मिस्र, यूनान, ईराक, पाकिस्तान एवं अफगान देशों के मध्य आपसी तनाव और बढ़ जाएगा। युद्ध की सी स्थिति बनेगी किन्तु युद्ध नहीं होगा। अनेक राष्ट्रों को गम्भीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। अमरीका, रूस आदि बड़ी शक्तियां विकासशील देशों की सहायता में भारी कटौती कर देंगी जिससे अनेक विकासशील राष्ट्रों में भयंकर आर्थिक-असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। जुलाई के पश्चात् विश्व में अनेक अप्रत्याशित घटनाएं घटित होंगी क्योंकि गुरु १७ जुलाई को महातिचार गति से मीन राशि से मेष राशि में प्रवेश करते हैं और ११ सितम्बर को वक्रातिचार होकर पुन: मीन राशि में प्रवेश करेंगे—

अतिचारगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते।

हां हा भूतं जगत्सर्वं रूण्डमाला महीतले विशेषात् दक्षिणापथे॥

२३ जुलाई को शनि का कर्क राशि में प्रवेश तथा मेष राशिस्थ मंगल की शनि के साथ ४—१०वीं दृष्टि और सूर्य-शनि की युति शुभ नहीं है। अतएव जुलाई व जुलाई के पश्चात अनेक राष्ट्रों में आन्तरिक विद्रोह भड़क उठेगा। अमरीका की वर्तमान सरकार की सत्ता में क्रांतिकारी परिवर्तन होने की आशंका है। यूनान, टर्की, पाकिस्तान, अफगानिस्तान देशों के मध्य पारस्परिक तनाव बहुत बढ़ जायेंगे।

युद्धभय हर्षचल तुला राशि तथा नैप्चन वृश्चिक राशि में वर्ष के आरम्भ से अन्त तक रहेंगे। दक्षिणी एशिया के किन्हीं प्रमुख देशों के मध्य युद्ध होते-होते टल जाएगा। अक्तूबर नवम्बर में विश्व की राजनैतिक स्थिति कुछ सामान्य रहेगी। १२ दिसम्बर को गुरु मार्गी होंगे किन्तु १३ दिसम्बर को शनि—सूर्य के मध्य षडाष्टक योग बनेगा। जिससे दिसंबर के पश्चात् विश्व का राजनैतिक व आर्थिक वातावरण पुन: बिगड़ जाएगा। पश्चिमोत्तर एशिया के मुल्कों में युद्ध-भय रहेगा। यूनान व टर्की के मध्य पुन: युद्ध-भय बनेगा। पाक सरकार के पतन का भय है। १३ फरवरी के पश्चात् एक मास के लिए पुन: सूर्य-शनि का षडाष्टक योग बनता है। इस अवधि में किन्हीं प्रमुख राष्ट्रों के प्रशासन, सरकार तथा सैनिकों के मध्य तनाव व झगड़े उत्पन्न होंगे। छत्र-भंग होंगे। विश्व के किसी प्रमुख व्यक्ति की हत्या एवं मृत्यु के योग हैं। युद्ध की चिंगारियां सुलगती रहेंगी। यान दुर्घनाएँ भूकम्प, भुखमरी, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप अधिक होंगे।

भारत—भारत की गणतन्त्र वर्ष कुण्डली में सिंह लग्न है। मुंथा पंचमस्थ है मुंथेश भौम शुभ-राशि में पड़कर राहु व नैपचून के साथ षडाष्टक योग बनाते हैं। लग्न पर बुध गुरु व शुक्र की दृष्टि, तथा शनि की तृतीय दृष्टि पड़ रही है। नैपचून सुख भाव में केतु से दृष्ट हैं। मंगल-शनि में परस्पर दृष्टि है। इस ग्रह चाल के अनुसार भारत सरकार को आगामी वर्ष राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में बहुत कठिन स्थितियों का सामन करना पडेगा।

फरवरी से जुलाई पर्यन्त राजा शनि की विशेष दृष्टि केन्द्र गृह (नेतृत्व, मन्त्रिमण्डल) पर रहेगी। अतएव यह अवधि केन्द्रीय सरकार के लिए विशेष रूप से संघर्ष पूर्ण रहेगी। सरकार को भारी विरोध का सामना करना पड़ेगा। अगस्त में संसद् में महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के पश्चात् पुन: स्थिरता आ जावेगी। वर्ष के आरम्भिक चार मासों तक देश के भीतर लोगों में अशन्ति व असंतोष की भावना अधिक रहेगी। कई स्थानों पर उपद्रव व गड़बड़ रहे। भारी विरोध के बावजूद वैधानिक लरकार को अनेक परिवर्तन करने पड़ेंगे 11 सितम्बर को गुरु वक्रातिचार होकर पुन: मीन राशि में प्रवेश होंगे। विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा विशेष रूप से बढ़ जाएगी। पड़ोसी राष्ट्रों के साथ राजनैतिक सम्बन्ध अत्यन्त सुदृढ़ हो जाएंगे। श्री लंका, अफगानिस्तान पाक, ईरान, अमेरिका आदि देशों के साथ नए व्यापारिक

सम्बन्ध स्थापित किए जाएंगे। भारत-पाक समझौते पर दोनों देशों के मध्य पुनः वार्ताएं होंगी। सीमावर्ती प्रदेशों पर गुप्त शत्रुओं की गतिविधियां जारी रहेंगी। कांग्रेस का प्रभुत्व कायम रहेगा। मुद्रा फैलाव को रोकने के लिए नए पग उठाए जाएंगे। अनाज, दूध, घी, तैलादि जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन में भारी कमी आ जाएगी। हर प्रकार की वस्तुओं के मूल्य अनिश्चित रहेंगे। गेहूं, चावल, चने, मूंग आदि के भावों में तेजी रहेगी। बिहार, उड़ीसा, आसाम, बंगाल आदि प्रदेशों में असंतोष व विद्रोह की भावना पुनः भड़क उठेगी। भुखमरी, अभाव व बाढ़ दि के कारण अनेक लोगों की मृत्यु होगी। किसी विशिष्ट नेता की मृत्यु एवं पदच्युति के योग हैं। कागज, कपड़ा, सीमेंट, लोहा, पीतल, जिस्त आदि धातुएं पूर्ववत् तेज भाव रहेंगी। अन्न की समस्या में मामूली सुधार होगा। अक्तूबर में राहु तुला राशि में तथा केतु मेष राशि में प्रवेश करेंगे। शिक्षा, कृषि, भूमि, परिवहन आदि के नियमों में विशेष परिवर्तन किए जाएंगे। १६ दिसम्बर से मार्च तक केन्द्रीय सरकार में क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे। संवैधानिक नियमों में संशोधन तथा अनेक केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के नेताओं का पुनर्गठन किया जाना सम्भव है राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र में भारी अव्यवस्था व उथल-पुथल रहेगी।

उत्तर पूर्वीय क्षेत्रों में वर्षा अनियमित रूप से होगी। वर्षा, बाढ़, हिमपात, दुर्घटनाओं आदि से भारी क्षति होने की आशंका है।

भारत के अन्य प्रमुख प्रान्त

पंजाब—सरकार तथा विरोधी पार्टियों में तनाव की स्थिति रहेगी। सूती, ऊनी, व गर्म कपड़े के उद्योग को भारी बिजली संकट का सामना करना पड़ेगा। घी, दूध, पशुचारा, अनाज व गर्म मसालों के भाव तेज रहेंगे। जुलाई के पश्चात् मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन होने के योग हैं। फसलों को क्षति। जन साधारण की उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि से लोगों में क्षोभ रहेगा।

हिमाचल प्रदेश—सरकार को भारी विरोध का सामना रहेगा। अनाजादि खाद्य वस्तुओं की कमी अनेक स्थानों पर अकाल की स्थिति बनेगी। बेरोजगारी और मंहगाई की समस्याएं गम्भीर रूप धारण कर लेंगी। लूटमार, ठगी, उत्पात की घटनाएं अधिक होंगी। नए उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा। प्रान्तीय सरकार में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए जाने की सम्भावना है।

जम्मू व कश्मीर—प्रान्त के लिए यह वर्ष संघर्षपूर्ण रहेगा। प्रान्तीय सरकार के विरुद्ध गुप्त षडयन्त्र होंगे। बेरोजगारी, खाद्यान्न की समस्या गम्भीर रूप धारण करेगी। सामान्य वस्तुओं की कीमतों में तेजी आवेगी! वर्षा व हिमपात अधिक होंगे कृषि को क्षति। सीमाओं पर पकिस्तान द्वारा फौजों का जमाव तेज़ होगा।

हरियाणा—सरकार के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। विरोधी ग्रुप सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पेश करेंगे। मुख्यमन्त्री के सम्मान को भारी धक्का पहुंचेगा। उद्योगों के विकास व स्थापना में बाधाएं रहेंगी। असमय वर्षा से अनाजादि की कृषि को नुकसान पहुंचे।

अन्य राष्ट्र

ब्रिटेन—विश्व राजनीति-क्षेत्र में ब्रिटेन की स्थिति और सुदृढ़ होगी। यद्यपि देश के भीतर बहुत से राजनैतिक परिवर्तन होंगे। वैधानिक नियमों में संशोधन होगा। ब्रिटेन में स्थित विदेशी निवासियों में बेचैनी की भावना फैलेगी। सामान्य वस्तुओं के मूल्यों में तेज़ी रहे।

पाकिस्तान—सरकार के लिए आगामी वर्ष अत्यन्त संघर्ष पूर्ण रहेगा। विरोधी तत्व वर्तमान सरकार को उलटने का भरपूर प्रयत्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में भुट्टो-सरकार के अस्तित्व को गंभीर खतरा है। अनेक मित्र पड़ौसी राष्ट्र भी इसके शत्रु बन जाएंगे। अफगानिस्तान, ईरान, ईराक आदि देशों के साथ शत्रुता रहेगी। भारत के साथ पाक सरकार दोगली नीति का पालन करेगी अर्थात् कभी अत्यन्त शत्रुता पूर्ण व्यवहार करेगी तो कभी मित्रता का हाथ बढ़ाएगी। देश को भारी आर्थिक व खाद्य समस्या का सामना करना पड़ेगा। कई स्थानों पर अकाल सी स्थिति से अनेक मौतें होंगी। देश के भीतर जातीयता के प्रश्न पर सरकार बहुत भेदभाव की नीति रखे अनेक स्थानों पर उपद्रव और लड़ाई से जानी नुकसान होंगे।

अमेरिका— वर्तमान सरकार के सम्मान को भारी धक्का पहुँचेगा। कई अप्रत्याशित घटनाएं घटेंगी। विकासशील विदेशों के साथ सम्बन्ध सुधरेंगे। किन्तु आन्तरिक स्थिति में उतार चढ़ाव रहेंगे। बाहरी देशों की सहायता में भारी कटौती कर देगा। औद्योगिक व वैज्ञानिक प्रगति में कमी रहेगी।

रूस—ग्रह स्थिति के अनुसार आगामी वर्ष रूस के लिए शुभ है। अमेरिका के साथ इसके सम्बन्धों में और सुधार होगा। अन्तरिक्ष विज्ञान में नवीन खोजों की उपलब्धि होगी। भारत के साथ राजनैतिक व सामाजिक सम्बन्धों में और वृद्धि होगी। भारत की अनाज, उद्योगादि में और सहायता करेगा।

लेखक :—
ज्योतिषी पन्ना लाल शर्मा एम०ए०
(संस्कृत-हिन्दी)
सम्पादक पंचांग दिवाकर जालन्धर।

प्रविष्टे १४ भाद्रपद गुरु वासरे